जमुनादास अख्तर

पाकिस्तान की टूटती राजनीति पर एक रोचक पुस्तक

यह पुस्तक

६ दिसम्बर '७१ को एशिया महाद्वीप मे एक नए राज्य 'गण-प्रजातन्त्रीय बगला देश' का वास्तविक जन्म हुआ, जब भारत सरकार द्वारा इसको मान्यता प्रदान की गई। इस नए देश की आबादी साढे सात करोड है, और चीन, भारत, रूस, अमरीका, इण्डोनेशिया और ब्राजील के बाद यह विश्व का सबसे बडा देश होगा। अब यह प्रमाणित हो चुका है कि यह नया देश पाकिस्तानी-तानाशाहो की स्वार्थपूर्ण नीतियो के कारण बना। गत २४ वर्षो मे पाकिस्तान के राजनीतिज्ञो ने एक-दूसरे के विरुद्ध—एव अपने पड़ोसी देश भारत के विरुद्ध—जो षड्यन्त्र रचे, वे अपने मे सनसनीपूर्ण भी है और शिक्षाप्रद भी। इस कडी का अन्तिम षड्यत्र, जुलफिकार अली भुट्टो द्वारा भूतपूर्व राष्ट्रपति याहिया-खा को निकालना रहा है। किन्तु षड्यत्रो का यह चक्र तो चल ही रहा है।

और इस पुस्तक मे १९४७ से अब तक की पाकिस्तानी राजनीति का रोचक विवरण है, जिसे हम नए 'बगला देश' के नेताओ को समर्पित करते है।

लेखक की कुछ अन्य महत्वपूर्ण रचनायें :

- पोलिटिकल कान्स्पीरेसीज इन पाकिस्तान (अंग्रेजी)
- पाक एस्पयॉनेज इन इंडिया (अंग्रेजी)
- कश्मीर की बेटी (हिन्दी)
- पंजाब की बेटी (हिन्दी)
- दि सागा ऑफ बंगला-देश (अंग्रेजी)

हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली-१

द्वाराप्रसारित

प्रकाशक :
पंजाबी पुस्तक भण्डार
दरीबा कलां, दिल्ली-६

द्वितीय (पुस्तकालय) संस्करण . जनवरी १९७२
मूल्य : छः रुपये (Rs. 6 00)

एक-मात्र वितरक
हिन्दी बुक सेन्टर
आसफ अली रोड, नई दिल्ली-१

मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-२८

इस पुस्तक के सम्बन्ध में :

दो वर्ष पहले जब "पाकिस्तान मे राजनीतिक षड्यन्त्र" के नाम से अग्रेजी मे मेरी पुस्तक प्रकाशित हुई तो देश-विदेश मे इसका स्वागत हुआ और प्रमुख समाचार पत्रो ने लिखा कि पाकिस्तान की समस्याओ, पाकिस्तान मे घरेलू षड्यन्त्रो और भारत के विरुद्ध पाकिस्तान के शासको के खतरनाक हथकडो पर इस से अच्छी पुस्तक इस से पहले प्रकाशित नही हुई। इस पुस्तक की कीमत ४५ रुपये थी। इसके अतिरिक्त यह पुस्तक अग्रेजी मे थी इसलिए साधारण जनता, विशेषतया हिन्दी प्रेमियो के लिये इसका अध्ययन करना कठिन था। इसलिये फैसला किया गया कि हिन्दी प्रेमियो के लिये पाकिस्तान की समस्याओ और इसके भविष्य पर एक ऐसी पुस्तक लिखी जाये जिससे साधारण जनता विशेषतया हिन्दी प्रेमी लाभ उठा सके। मै स्टार पब्लिकेशज के सचालक श्री अमरनाथ का आभारी हू कि उन्होने मेरी इस पुस्तक को प्रकाशित करना स्वीकार किया।

दुर्भाग्य ही तो है कि हमारे देश मे यूरोप और अमरीका पर तो बहुत पुस्तके लिखी और प्रकाशित की जाती है परन्तु पाकिस्तान जैसे देश पर जो कि हमारा निकटतम पडोसी है और जिसकी गतिविधियों का हमारे देश पर गहरा प्रभाव पडता है बहुत कम पुस्तके प्रकाशित होती है। गत २४ वर्षों मे पाकिस्तान के शासको ने चार बार हमारे देश पर आक्रमण किया। पाकिस्तान के तानाशाहो को जब भी अपने देश मे विरोधी जनता की ओर से अपनी गद्दिया डोलती हुई दिखाई दी, उन्होने जनता को हमारे देश मे धकेलना और हमारे विरुद्ध युद्ध के नारे लगाना शुरू कर दिया। हमारे देश पर चार बार हमले करने के साथ ही पाकि-

स्तान के तानाशाहो ने हमारे प्रमुख नेताओ की हत्या करने के लिय कितने ही षड्यन्त्र रचाये। कुछ ही वर्षो मे हजारो सशस्त्र घुसपैठिये, जासूस और एजेन्ट हमारे देश मे भेजे गये। अपनी समस्याओ का समाधान करने की बजाय पाकिस्तानी शासक हमारे इलाको पर सशस्त्र अधिकार करने के लिये षड्यन्त्र करते रहे। पाकिस्तान के शासको ने गत २४ वर्षो मे दूसरे देशो से जब भी कोई सैनिक अथवा असैनिक गठजोड किया, उनका लक्ष्य यही रहा कि भारत को कमजोर और परेशान किया जाये और यदि हो सके तो इसके टुकडे-टुकडे कर दिये जाये। अपनी जनता की आर्थिक स्थिति के सुधार पर ध्यान देने और जनता को उसके अधिकार देने की बजाय उन्होने भारत से छेड-छाड करना अपनी आदत बना ली है। इस बार पाकिस्तान ने जो हमला किया उसका फैसला उन्होने अचानक ही नही किया बल्कि इसके लिये १९६५ के युद्ध मे हार जाने के बाद ही जोर-शोर से तैय्यारिया शुरू कर दी गई और पहले की भाति अब भी पाकिस्तानी शासको ने हमला करने के लिये यह झूठा आरोप लगाया कि भारत ने पहल की है।

इस युद्ध के परिणाम के सम्बन्ध मे मुझे कोई सदेह नही। 'गण-प्रजातत्रीय बगला देश' को गत ६ दिसम्बर को भारत सरकार द्वारा मान्यता प्रदान की जा चुकी है—और अब यह क्षेत्र तो पाकिस्तान मे कभी दोबारा सम्मिलित नही होगा। याहिया खा ने अपनी शासन-सत्ता बनाये रखने के लिये एक बहुत बडा जुआ खेला है। इसके परिणाम बहुत भयानक हो सकते है। बगला देश की स्वतत्रता का एक अर्थ यह भी है कि जहा पश्चिमी पाकिस्तानियो के लिये घर की यह मण्डी उनके हाथो से निकल चुकी है—और इससे पश्चिमी पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति को तबाही का सामना करना पडेगा वहा युद्ध स्वय उसके लिये तबाही ला रहा है। इसके साथ ही बगला देश मे पश्चिमी पाकिस्तान के हजारो सैनिको का सफाया पश्चिमी पाकिस्तान मे तानाशाही के विरुद्ध क्रोध की आग भडकायेगा। १९६५ के आक्रमण की असफलता ने अयूब-शाही का अन्त किया था। इस बार याहिया-शाही का अन्त होगा ही परन्तु इसके साथ ही युद्ध के दौरान

ही पश्चिमी पाकिस्तान मे विद्रोह हो सकता है। पश्चिमी पाकिस्तान के टुकडे-टुकडे भी हो सकते है। पाकिस्तान नाम के देश का विनाश होकर उसकी जगह पाच नये देशो की स्थापना भी हो सकती है।

इस पुस्तक मे मैने पाकिस्तान के सम्पूर्ण इतिहास और वर्तमान स्थिति के सभी पहलुओ पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। मै स्वय पश्चिमी पाकिस्तान से आया हू जहा मैने १५ वर्ष तक पत्रकार की की हैसियत से काम किया है। पाकिस्तान के वर्तमान शासको को मै व्यक्तिगत रूप से जानता हू। पाकिस्तान बनने के बाद भी मझे वहा जाने का अवसर मिला है। अपने अनुभवो की बुनियाद पर मैने यह पुस्तक लिखी है। मुझे आशा हे कि जनता इसे पसन्द करेगी।

दिल्ली ८-१२-७१ —जमुनादास अख्तर

दूसरे संस्करण के सम्बन्ध में

इस पुस्तक का पहला सस्करण १२ दिसम्बर को प्रकाशित हुआ था। चार दिन बाद बगला देश मे पाकिस्तानी सेना ने हथियार डाल दिये। भारत सरकार ने तुरन्त ही घोषणा कर दी कि १७ दिसम्बर को आठ बजे रात पश्चिमी मोर्चे पर लडाईबन्दी कर दी जायेगी। याहिया सरकार का दम टूट चुका था। इसके परिणाम स्वरूप उसने भी लडाई-बन्दी की घोषणा कर दी और २० दिसम्बर को याहिया खा की ताना-शाही का अन्त हो गया। श्री भुट्टो को पाकिस्तान का राष्ट्रपति बनने का अवसर मिल चुका है। उन्होने याहियाशाही से सम्बधित कई जनरलो को हटा दिया है। परन्तु देखना यह है कि वह बचे खुचे नेता पाकिस्तान की नाव को किनारे लगा सकते है अथवा वह ऐसी गलतिया करेंगे जिनके परिणाम स्वरूप पाकिस्तान का अन्त हो जायेगा। इस पुस्तक के अन्तिम दो अध्यायो मे इसी प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया गया है। और यह इस पुस्तक मे पहले सस्करण के बाद का महत्व-पूर्ण सशोधन है।

दिल्ली ५ जनवरी १९७२ —जमुनादास अख्तर

क्रम

१

घृणा की नींव पर

१४ अगस्त १९४७ को जब पाकिस्तान की स्थापना हुई और वाहगा के उस पार निर्दोष पुरुषो, स्त्रियों, बच्चो और वृद्धो के लहू की नदिया बह रही थी, पाकिस्तान के नेता यह समझ कर खुशी से फूले नही समाते थे कि उन्होने अपने स्वप्नो के देश की स्थापना कर ली है। करोडो दूसरे लोग यह समझ रहे थे कि उनके लिये इस्लाम की बुनियाद पर ऐसे देश की स्थापना की गई है जिसमे रहने वाले प्रत्येक मुसलमान को समान अधिकार प्राप्त होगे और वह अपनी इच्छा अनुसार अपने भविष्य का निर्माण कर सकेंगे।

मुस्लिम लीग के आन्दोलन मे उन्हे यही बताया गया था कि मुसलमान और हिन्दू अलग-अलग कौमे है। हिन्दू उनके शत्रु है और हिन्दू ही मुसलमानो की आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयो के लिए जिम्मेदार है। हिन्दुओ के लिये घृणा और शत्रुता की भावना पैदा करने के लिए प्रचार किया जाता था कि अखण्ड भारत की स्वतन्त्रता का परिणाम यह होगा कि हिन्दू मुसलमानो को गुलाम बना लेंगे और इस्लाम और इस्लामी सभ्यता को नष्ट कर दिया जायेगा। जो मुस्लिम नेता इससे विरोध प्रकट करते थे उन पर इस्लाम और मुसलमानो से गद्दारी का आरोप लगाया जाता था।

धर्म के नाम पर घृणा की नीव अग्रेज शासको ने अपनी सत्ता कायम रखने के लिये ही तो रखी थी। अग्रेज भारत मे व्यापारियो के रूप मे आये। उन्होने विभिन्न भारतीय नरेशो को आपस मे लडाना शुरू किया।

उनकी कमजोरियो से लाभ उठा कर धीरे-धीरे उन्होने समस्त भारत पर अधिकार कर लिया। अग्रेज अफगानिस्तान पर भी अधिकार करना चाहता था। १८४२ मे जब अग्रेजो ने अफगानिस्तान पर हमला किया तो उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड एलनबुरो ने इस हमले को हिन्दुओ के हित के लिये ठीक जाहिर करते हुए एक घोषणा मे कहा था कि

"हमारी विजयी सेना ने वीरता का प्रमाण देते हुए भारत पर महमूद गजनवी के आक्रमणो का बदला ले लिया है। हम सोमनाथ के पवित्र मन्दिर के किवाड भारत मे वापिस ले आये है। महमूद गजनवी की नापाक कबर गजनी के खण्डहरो को देख कर रो रही है। आठ सौ वर्ष पहले की बेइज्जती का पूरा-पूरा बदला ले लिया गया है। सोमनाथ मन्दिर के किवाड जो आपकी पराजय के चिन्ह थे, आज आपकी शानदार विजय के प्रतीक है। यह जीत सिन्धु नदी के उस पार के देशो मे आपकी बहादुरी का प्रमाण है।"

मजे की बात यह है कि यह एक बहुत बडा धोखा था। यह किवाड वास्तव मे सोमनाथ मन्दिर के नही थे। बल्कि किसी साधारण व्यक्ति के मकान के किवाड थे। हिन्दुओ की निगाहो मे धूल झोकने के लिये और अग्रेजो को मुसलमान के मुकाबले मे हिन्दुओ का हितैषी जाहिर करने के लिये यह कहानी गढी गई थी। इसी प्रकार बगाल मे मुसलमानो का शासन खतम करते समय कम्पनी सरकार के अधिकारियो ने दावा किया कि यह सब कुछ हिन्दुओ को स्वतत्र कराने के लिये किया गया है। जब गवर्नर जनरल ने दिल्ली मे मुगल शासन खत्म करने का फैसला किया तो पजाब मे हिन्दुओ और सिक्खो को बताया गया कि ब्रिटिश सरकार ने समस्त भारत को जालिम मुसलमानो के शासन से स्वतत्र करा लिया है। पजाब मे सिक्ख राज का अन्त करने के लिये मुसलमानो को बताया गया कि अग्रेज ने पजाब के मुसलमानो को सिक्खो से मुक्त कराया है। मजे की बात यह है कि १८५७ के स्वतन्त्रता-सग्राम मे पजाब के सिक्ख और हिन्दू सैनिको को दिल्ली पर हमला करने के लिये यह कह कर इस्तेमाल किया गया कि अग्रेज नही चाहता कि पजाब पर एक बार फिर

मगलो का शासन स्थापित हो जाये । वास्तव मे अग्रेज शासक इस बात से परेशान थे कि इस देश को स्वतत्र कराने के लिये हिन्दू-मुसलमान एक हो गये है। बगाल आर्मी ने जिस मे हिन्दू, मुसलमान और सिख शामिल थे विद्रोह मे भाग लिया था। ब्रिटिश सरकार के "पील कमीशन" ने इस स्थिति की जाच करने के बाद अपनी रिपोर्ट मे लिखा कि "बगाल आर्मी की कमजोरी का कारण यह था कि उसके सिपाहियो मे धर्म और जाति के नाम पर कोई मतभेद नही था। इससे इनमे एकता की भावना आ गई थी। सर जान लारैंस ने इस रिपोर्ट का अनुमोदन करते हुए कहा कि सेना का इस प्रकार मे पुनर्सगठन किया जाये कि प्रत्येक प्रान्त की सेना के मुसलमान, हिन्दू और सिख सिपाही दूसरे प्रान्त के सिपाहियो से घृणा करे। उनमे प्रान्तीयता की भावना पैदा हो जाये।

सर चार्ल्स वुड ने १८६२ मे गवर्नर जनरल लार्ड एलगन को लिखा कि "यदि समस्त भारत हमारे विरुद्ध खडा हो जाये तो हम कब तक अपने शासन को बचा सकेगे। अपनी सिख सेनाओ को पजाब मे ही रखो और उन्हे बाहर के हिन्दुओ के खिलाफ इस्तेमाल करो। अपने हिन्दू सिपाहियो को पजाब से बाहर रखो और आवश्यकता होने पर उन्हें सिखो के विरुद्ध इस्तेमाल करो, अपने शासन की रक्षा के लिये हमे विभिन्न जातियो मे परस्पर विरोध की भावना पैदा करनी चाहिये।"

इसी योजना के अनुसार सेना का पुनर्सगठन किया गया। १८५७ के युद्ध मे विहाबी मौलवियो ने अग्रेज के विरुद्ध फतवे दिये थे। सरकार ने कुछ मौलवियो को खरीदा और उनसे अपने हक मे और हिन्दुओ के खिलाफ फतवे प्राप्त किये। जौनपुर के मौलवी करामत अली इनमे से एक थे। कुछ शैय्या मौलवी भी खरीदे गये। इनमे एक पटना के मौलवी अमीर अली थे। इनसे भी ऐसे ही फतवे प्राप्त किये गये।

सर सैयद अहमद खान जिन्होने बाद मे अलीगढ मुस्लिम विश्व विद्यालय की स्थापना की, अग्रेज सरकार के अधीन एक सब जज थे। १८५७ के युद्ध मे उन्होने बिजनौर मे कुछ अग्रेज अधिकारियो की रक्षा की थी। जब यह समाचार दिल्ली पहुचा तो विद्रोहियो ने

उनका मकान लूट लिया। इसके बदले मे अग्रेज सरकार ने उन्हे जज बना दिया और उनके और उनके बेटे के लिये आजीवन पैंशन की घोषणा कर दी। सर सैय्यद ने उर्दू मे एक पुस्तक लिखी जिसमे कहा गया कि "मुसलमानो ने विद्रोह नही किया था, वह तो अग्रेजो के वफादार है।" उन्होने लिखा कि यदि मुसलमानो और हिन्दुओ की अलग-अलग सेनाये सगठित की जाती तो उनमे एकता की भावना पैदा न होती और विद्रोह न होता। यह पुस्तक भारत और ब्रिटेन मे गोरे अधिकारियो मे बाटी गई। सरकार ने प्रसन्न हो कर उन्हे "सर" बना दिया। वह इगलैण्ड गये और लौटने पर उन्होने कई पुस्तके लिखी जिनमे मुसलमानो से कहा गया कि वह अग्रेज के वफादार बन कर अग्रेजी सीखे और नौकरिया प्राप्त करे। १८०२ मे उन्होने अलीगढ मे मुस्लिम कालेज की स्थापना के लिये एक कमेटी स्थापित की और १८७७ मे गवर्नर जनरल लार्ड लिटन ने इस कालेज की आधार-शिला रखी। सर सैयद ने इस अवसर पर कहा कि मुस्लिम जनता अग्रेजो के शासन की विरोधी नही। उनके साथी नवाब अब्दुल लतीफ ने लिखा कि "मुसलमान समझते है कि उनकी सुरक्षा अग्रेजो के शासन की मजबूती पर निर्भर है।"

मुसलमानो को काबू करने की इस योजना के साथ ही जब १८८५ मे एक अग्रेज रिटायर्ड अधिकारी मि० ह्यूम ने भारतीय काग्रेस की स्थापना की तो इसके लिये भी गवर्नर जनरल लार्ड डफरन ने सकेत किया था। अग्रेज चाहता था कि काग्रेस हिन्दुओ की सस्था बने। इसी समय अग्रेज अधिकारी मुसलमानो को काग्रेस के विरुद्ध फसाद कराने के लिये भडका रहे थे। परन्तु काग्रेस ने अग्रेज के इशारे पर चलने से इन्कार कर दिया। इस से बिगड कर गवर्नर जनरल ने काग्रेस को "विद्रोही" करार दिया और सैय्यद अहमद और उनके साथियो को भडकाया कि वह काग्रेस के विरुद्ध आन्दोलन करे। सैय्यद अहमद ने १० दिसम्बर १८८८ को एक ब्रिटिश अधिकारी मि० ग्राहम को लिखा कि "मैने तथाकथित नेशनल काग्रेस के विरुद्ध एक भारी काम का

बोझा उठाया है।" उन्होने मागे की कि नौकरियो मे भरती के लिये मुकाबले के इम्तहान नही होने चाहिये। चुनाव भी नही होने चाहिये। बल्कि साम्प्रदायिकता के सिद्धान्त पर भरती होनी चाहिये। अलीगढ कालेज के अग्रेज प्रिंसिपल मि० ट्यूडर बैक ने कालेज के मुस्लिम विद्यार्थियो मे काग्रेस और हिन्दुओ के विरुद्ध प्रचार शुरू किया। एक लेख मे उसने लिखा कि मुसलमानो और अग्रेजो को मिलकर काग्रेस का मुकाबला करना चाहिये। परन्तु यह आन्दोलन विफल हो गया। काग्रेस के वार्षिक अधिवेशन मे भारी सख्या मे मुसलमान सम्मिलित हुए। इससे परेशान होकर सरकार ने बगाल का विभाजन कर दिया। मुसलमानो को कहा गया कि पूर्वी बगाल मे मुसलमान बहुसख्यक होने के कारण हिन्दुओं के मुकाबले मे फायदे मे रहेगे। ढाका के नवाब सलीम उल्ला इस योजना के विरुद्ध थे परन्तु उन्हे आसान शर्तों पर एक लाख पाउण्ड का ऋण दे कर अपने साथ मिला लिया गया। इन्ही नवाब साहिब ने अग्रेज के सकेत पर "मुस्लिम लीग" की स्थापना की। बगालियो ने अपने प्रान्त के विभाजन के विरुद्ध भारी आन्दोलन किया। विदेशी माल को जगह-जगह आग लगाई गई। इस से भयभीत हो कर सरकार ने अपना फैसला वापिस ले लिया परन्तु नवाब साहिब के हाथ मजबूत करने के लिये असम का कुछ भाग बगाल मे मिला कर बगाल को मुस्लिम बहुसख्यक प्रान्त बना दिया गया।

१९०६ मे अलीगढ कालेज के नये मुख्याध्यापक मि० आर्कबाल्ड ने गवर्नर जनरल के सैक्रेट्री कर्नल जैम्ज से भेट की। दोनो ने मिल कर "मुसलमानो की मागो का प्रार्थना पत्र' लिखा। सर आगा खा को लन्दन से बुलाया गया। उनके नेतृत्व मे एक "मुसलिम डैलीगेशन" ने गवर्नर जनरल से भेट करके यह "मागे" प्रस्तुत की। गवर्नर जनरल की धर्म पत्नी लेडी मिण्टो ने इस वार्तालाप का उल्लेख अपनी डायरी मे करते हुए लिखा कि .

"आज का दिन बडा महत्वपूर्ण दिन है। एजीटेटर मुसलमानो मे असन्तोष पैदा कर रहे थे। मुसलमान काग्रेस की ओर झुक रहे

थे। परन्तु एक अधिकारी ने मुझे आज लिखा कि आज एक बहुत महत्वपूर्ण घटना हुई है। भारत के इतिहास पर वर्षों तक इसका प्रभाव रहेगा। हमने ६ करोड ८० लाख मुसलमानों को विद्रोही विरोधियो से मिल जाने से रोक लिया है।"

वास्तव मे भारतवासियो के लिये यह एक दुखदायक दिन था क्यो कि अग्रेज ने अपना शासन मजबूत करने के लिये हिन्दुओं और मुसलमानो मे फूट डालने और भारत का विभाजन करने के लिये आधार-शिला रख दी थी। अग्रेज ने नौकरियो मे साम्प्रदायिकना का विष दाखिल कर दिया था। सर आगा खा मुस्लिम लीग के प्रधान बन गये। उन्होने लीग की ढाका शाखा के प्रधान को लिखा कि "लीग इस बात पर विश्वास करती है कि भारत के लिये अग्रेज का शासन आवश्यक है और मुसलमानो का कर्तव्य है कि जनता के हृदय मे ब्रिटेन के लिये आदर और प्यार की भावना पैदा की जाये।"

१९०७ मे लीग ने स्वराज्य और स्वदेशी आन्दोलन की निन्दा की। विभिन्न प्रान्तो मे लीग की शाखायें बडे-बडे वफादार जमीदारों की अध्यक्षता मे स्थापित की गई। दक्षिण मे लीग के प्रधान पुराने टोडी निजाम हैदराबाद थे।

देशभक्त मुस्लिम नेताओ ने इस खतरे को भाप लिया। मौलाना आजाद, डाक्टर किचलू और दूसरे देशभक्त मुस्लिम लीग मे शामिल हो गये। १९२३ मे उन्होने लीग का विधान बदल कर विभिन्न सम्प्रदायो मे मित्रता की भावना पर जोर देते हुए वैधानिक सुधार की माग की। मि० जिन्नाह काग्रेस के प्रधान दादा भाई नारोजी के प्राइवेट सैक्रेट्री थे। उन्होने भारत मे प्रिंस आफ वेल्ज के आगमन पर सरकार के विरुद्ध भाषण दिया था। इम्पीरियल कौसल के सदस्य की हैसियत से भी वह ब्रिटिश सरकार की आलोचना करते थे। पहले महायुद्ध के दिनो उन्होंने काग्रेस के प्रतिनिधि की हैसियत से लन्दन मे जाकर "इण्डियन कौंसल बिल" का विरोध किया था। दिसम्बर १९१९ मे काग्रेस के अधिवेशन मे भाषण देते हुए उन्होने कहा था कि मैं नही

चाहता कि तग नज़र लोग काग्रेस को कमजोर करे। मुस्लिम लीग मे सम्मिलित होकर उन्होने सरकार के हिमायतियो से झगडे किये। इन लोगो ने बम्बई मे मि० जिन्नाह के जलसे मे गडबड की। परन्तु जब महात्मा गाधी काग्रेस मे आये तो जिन्नाह साहिब ने महसूस किया कि उनकी लीडरी को खतरा है। गाधी जी के सुझाव पर "होम रूल लीग" ने पूर्ण स्वराज्य की माग की। मि० जिन्नाह ने इस का विरोध करते हुए कहा कि होम रूल लीग की कार्यकारिणी समिति अपना विधान बदल नही सकती। इस पर सभा के अध्यक्ष ने उन्हे कहा कि यदि आप इस परिवर्तन को पसन्द नही करते तो अलग हो जाये। मि० जिन्नाह उठ कर चले गये और उन्होने त्यागपत्र दे दिया। गाधी जी ने जिन्नाह को एक पत्र लिख कर त्यागपत्र वापस ले लेने के लिये अनुरोध किया। मि० जिन्नाह ने इन्कार करते हुए एक अत्यन्त कडा पत्र लिखा जिसमे उन्होने गाधी जी के प्रोग्राम पर आपत्ति की और कहा कि आप जो आन्दोलन करना चाहते है इससे देश भर मे अराजकता फैल जायेगी और इसके परिणाम खतरनाक होगे।

दिसम्बर १६२० मे काग्रेस के खुले अधिवेशन ने स्वतंत्रता की माग करने और देश भर मे आन्दोलन करने का फैसला किया। केवल मि० जिन्नाह ने इसका विरोध किया। उन्होने गाधी जी की माग को गलत करार दिया। इस पर मौलाना मुहम्मद अली और मि० जिन्नाह मे तू-तू मैं-मैं हो गई। मि० जिन्नाह मायूस हो कर चले गये। मुस्लिम लीग मे भी उनकी पोजीशन शिथिल हो गई। हताश हो कर वह लन्दन चले गये। वहा अपनी पत्नी से उनका झगडा हो गया। उनकी पत्नी रुठ कर पेरिस चली गई। वहा उसने आत्महत्या के लिये विष खा लिया। एक मित्र मि० जिन्नाह को पेरिस ले गये। उनकी पत्नी की जान बच गई। दोनो मे दीवान चमन लाल ने समझौता कराया परन्तु पति के हठील स्वभाव के कारण फिर झगडा हो गया। पत्नी रूठ कर बम्बई चली गई जहा उसने १६२८ मे ताजमहल होटल मे आत्महत्या कर ली। कुछ वर्ष जब जिन्नाह की इकलौती बेटी ने एक पारसी युवक से पिता

के विरोध पर भी विवाह कर लिया तो मि० जिन्नाह उससे भी बिगड गये । इस प्रकार मि० जिन्नाह अकेले रह गये । दीवान चम्मन लाल ही फिर उन्हे भारत मे लाये । मि० जिन्नाह अब भी देश भक्त थे । जब सर इक्वाल ने पाकिस्तान की माग की तो जिन्नाह ने इसका विरोध किया परन्तु जहा गाधी जी के होते हुए काग्रेस मे उनकी दाल नही गलती थी वहा मि० जिन्नाह जनता के आदमी न होने के कारण कोई आन्दोलन शुरू करने और जेल यात्रा करने का साहस नही कर सकते थे । इस लिये वह फिर मायूस होकर लन्दन चले गये । जुलाई १९३२ मे मि० लियाकत अली और उनकी बेगम ने मि० जिन्नाह से भेंट की और उन्हे फिर भारत आने के लिये तैयार कर लिया । लियाकत अली का प्रभाव होने पर भी मि० जिन्नाह ने पहले गोल-मेज सम्मेलन के अवसर पर "पाकिस्तान" की माग का विरोध किया था ।

मि० जिन्नाह को धीरे-धीरे मि० लियाकत अली ने रास कर लिया । उन पर मि० खलीकुजम्मान का प्रभाव भी था । यह साहिब यद्यपि काग्रेस मे थे और श्री जवाहरलाल नेहरू के बहुत निकट थे परन्तु बहुत कम लोग जानते है कि वह वास्तव मे अग्रेज सरकार के गुप्तचर थे । खलीकुज्जमान ने अपनी पुस्तक Path way to Pakistan के पृष्ठ २५७ पर लिखा है कि उत्तर प्रदेश के गवर्नर सर फ्रासेस मुडी ने उन्हे गवर्नर जनरल से मिल कर पाकिस्तान की माग समझाने के लिये कहा था । उन्होने यह भी लिखा है कि बहुत से अग्रेज अधिकारी इस माग के समर्थक थे ।

मि० खलीकुज्जमान को अग्रेज मि० जिन्नाह का उत्तराधिकारी बनाना चाहता था । इसलिये यह साहिब भारतीय लोक सभा मे भारत से वफादारी की सौगध उठाने के बाद एक दिन अचानक बहाने से कराची चले गये और पाकिस्तानी बन गये ।

मि० जिन्नाह कई वर्ष तक अग्रेज के विश्वास पात्र नही बने थे । उन मे परिवर्तन लाने वाले मि० लियाकत अली और खलीकुजम्मान थे । यह परिवर्तन दूसरे महायुद्ध मे ही शुरू हो गया था । मि० जिन्नाह

को ब्रिटेन की एक जहाजरानी कम्पनी ने ६ हज़ार रुपया मासिक "लीगल इलौस" देना शुरू कर दिया था। यह एक महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन है कि ब्रिटिश सरकार गुप्तचर विभाग से भी मि० जिन्नाह का सम्पर्क हो गया था।

१९४७ मे पाकिस्तान की स्थापना होने से पहले अग्रेजो ने क्या-क्या चाले चली। किस प्रकार देश के विभिन्न भागो मे हिन्दुओ और मुसलमानो मे फसाद कराये। किस प्रकार अग्रेज सरकार साढे ६सौ रियासतो को भारत से अलग रखने की चालें चल रही थी। यह सब कुछ कल के इतिहास की घटनाये ही तो है। तात्पर्य यह कि देश का विभाजन घृणा की बुनियादो पर हुआ और अग्रेजो और पाकिस्तान के शासको के लिये आवश्यक था कि हिन्दू-मुस्लिम घृणा को भारत और पाकिस्तान के अमिट झगडो मे बदल दिया जाये। ब्रिटिश सरकार जानती थी कि स्वतत्र भारत शीघ्र ही प्रगति के पथ को अपना कर अपने पाव पर खडा हो जायेगा और इस से निसन्देह पाकिस्तान की जनता और एशिया के दूसरे देशो के लोग भी प्रभावित होगे। इसलिये भारत को कमज़ोर रखने के लिये उसकी पूर्वी और पश्चिमी सीमाओ पर पाकिस्तान के दो भाग बनाये गये। यह तै किया गया कि पाकिस्तान पर ऐसे नेताओ का शासन होगा जो भारत को अपना शत्रु समझ कर उससे लडते-झगडते रहे। पाकिस्तान की स्थापना होते ही उसकी सरकार मे तमाम महत्वपूर्ण पद भारत विरोधी अग्रेज अधिकारियो को सौप दिये गये। तमाम पाकिस्तानी प्रदेशो के राज्यपाल अग्रेज़ अधिकारी ही नियुक्त किये गये। मि० जिन्नाह के अपने स्टाफ पर इन्ही अधिकारियो का कन्ट्रोल रहा। अग्रेज जानता था कि पाकिस्तान की जनता भारत की प्रगति से प्रभावित होगी इसलिये उसने अपने हितो की रक्षा के लिये जहा लियाकत अली, खलीकुज्जमान और सिकन्दर मिरजा जैसे व्यक्तियो को मि० जिन्नाह के निकट रखा वहा अग्रेज अफसरो ने समस्त पाकिस्तान मे अल्प-सख्यक सम्प्रदायो के

लोगो पर हमले करा के उन्हे भारत मे धकेलना शुरू कर दिया ताकि एक तो भारत परेशान हो और दूसरे भारत मे जवाबी तौर पर फसाद हो और भारत से मुसलमान भाग-भागकर पाकिस्तान मे आये तो उन्हे आसानी से भारत के विरुद्ध भडका कर जनता के अधिकारो की माग करने वालो के मुह बन्द कर दिये जाये।

अग्रेज जहा पाकिस्तान को भारत को परेशान और कमजोर बनाने के लिये इस्तेमाल करना चाहता था वहा पाकिस्तान को अपने माल की मन्डी बनाना और उसकी जनशक्ति को एशिया के दूसरे देशो मे अपने हितो के लिये युद्ध मे इस्तेमाल करना चाहता था।

पाकिस्तान के शासको को जनता ने नही चुना था। इसलिये अपनी शासन सत्ता बनाये रखने के लिये उन्होने अग्रेजो के बताये हुए मार्ग पर चलने का फैसला कर लिया। पाकिस्तान की गत २४ वर्षों की कहानी इसलिये षड्यन्त्रो की कहानी है। इसमे कई पाकिस्तानी नेताओ की हत्या हुई। जनता के अधिकारो को कुचलने के लिये "इस्लाम और पाकिस्तान खतरे मे" के नारे लगाकर देश भक्त नेताओ को जेलो मे बन्द किया गया। भारत पर तीन बार आक्रमण किया गया। अपनी सत्ता बनाये रखने के लिये शासको ने कभी एक देश से और कभी दूसरे देश से गठजोड किया। परन्तु झूठ और मक्कारी की दीवार हमेशा कायम नही रहती। अब स्थिति ऐसी पैदा हो चुकी है कि पाकिस्तान के शासको की तानाशाही के कारण पाकिस्तान का अपना ही अस्तित्व खतरे मे पड चुका है।

२

काश्मीर और क़ल्लात पर आक्रमण

पाकिस्तान की स्थापना तो हो गई परन्तु ऐसा होते ही पाकिस्तान के शासको के सामने गम्भीर समस्याये आ गई। लाखो हिन्दू, सिख पाकिस्तान से भगा दिये गये तो उनकी जगह लाखो मुसलमान बेघर भी आने लग गये। इनको आबाद करने और रोजगार देने की समस्या का कोई हल नही था। साम्प्रदायिक दगो मे गुण्डो और बदमाशो को आगे आने का अवसर मिल गया। इन लोगो ने खुले कैम्पो मे पडे हुए शरणार्थियो को लूटना और उनकी बेटियो और पत्नियो का अपहरण करना शुरू कर दिया। श्री शिहान साकिब ने जो कुछ वर्षों बाद अयूब खान के सैक्रेट्री नियुक्त हुए १९४७ मे ही कराची मे एक पुस्तक प्रकाशित करके गुण्डो की इन हरकतो का रहस्योद्घाटन किया था।

स्थानीय लोगो ने हिन्दू-सिख निवासियो की बहुत-सी जायदादो पर अधिकार कर लिया था। निकासियो की जमीनो पर भी बडे-बडे स्थानीय मुस्लिम जमीदारो ने अधिकार कर लिया था। इसलिये भारत से आये हुए लाखो मुसलमानो को सिर छिपाने के लिए जगह नही मिली। इससे उनमे असन्तोष बढने लगा।

सीमा प्रान्त मे पठानो ने अपनी स्वतत्रता के लिये आन्दोलन शुरू कर रखा था। जब डाक्टर खा साहिब के काग्रेसी मन्त्रिमण्डल को भग करके अब्दुल कयूम खा को मुख्य मत्री बनाया गया और उसने विधान

सभा मे बहुमत बनाने के लिये कई सदस्यो को गिरफ्तार कर लिया तो पठानो और कबाइलियो मे क्रोध और घृणा की ज्वाला भडक उठी। यही स्थिति बिलोचिस्तान मे भी उत्पन्न हो रही थी। पाकिस्तान के शासक इससे परेशान होने लगे। इस परेशानी का हल यह निकाला गया कि काश्मीर पर आक्रमण करने का फैसला किया गया। अग्रेज भी इसके लिए दबाव डाल रहा था। ब्रिटिश सरकार काश्मीर मे अपने सैनिक अड्डे बना कर रूस को भारत से अलग रखना चाहती थी। उसकी इच्छा यह भी थी कि पाकिस्तान से गठजोड कर के रूस और चीन की सीमाओ पर अपनी सेनाये रखी जायें। और अपनी पोजीशन मजबूत बना कर अतर्राष्ट्रीय मैदान मे अमरीका से सौदेबाजी की जाये। पाकिस्तानी शासक काश्मीर पर आक्रमण करके अपनी जनता के मुह बद करना चाहते थे। पठानो को लूट-मार का लालच देकर वह यह भी समझते थे कि जितने पठान मारे जायेंगे उतनी ही पठानो की आबादी कम हो जायेगी।

इस सम्बन्ध मे यह स्मरण रहे कि ब्रिटिश सरकार वर्षों से काश्मीर पर अधिकार करने के लिये साज-बाज कर रही थी। १८८७ मे ब्रिटिश सरकार ने जाली दस्तावेजात तैयार करके महाराजा काश्मीर श्री प्रताप सिंह पर यह आरोप लगाया था कि वह रूसी सम्राट की सहायता से भारत मे [illegible] उलट देना चाहते है। इन जाली दस्तावेजात की [illegible] के प्रान्त गिलगित पर अग्रेजो ने अपना सैनिक शासन स्थापित कर लिया था। १९३३ मे ब्रिटिश सरकार ने काश्मीर के विभाजन की एक गुप्त योजना बनाई। सर आगा खा ने जिन्होने अग्रेजो के इशारे पर भारत मे मुसलमानो के लिए विधान सभाओ और नौकरियो से अलग भाग की माग की थी, अग्रेज के इशारे पर काश्मीर का नवाब बनने के लिये हाथ-पाव मारने शुरू कर दिये थे। इन दिनो मि० जिन्नाह अभी अग्रेज के विश्वास पात्र नही बने थे। अग्रेज उस समय भी पाकिस्तान की स्थापना के लिये मैदान तैयार कर रहा था। इसके लिये सर आगा-

खा को वही पोजीशन देने के लिय साज-बाज की जा रही थी जो बाद मे मि० जिन्नाह को दी गई। अग्रेजो ने यह योजना बनाई कि काश्मीर घाटी और गिलगित को महाराजा से छीन कर सर आगा खा को उसका नरेश बना दिया जाये। महाराजा को कहा गया कि जम्मू और लद्दाख के साथ ही उन्हे पजाब मे कागडा और पठानकोट के जिले दे दिये जायेगे। यह योजना १९३३ मे गोल मेज सम्मेलन की एक समिति मे प्रस्तुत की गई परन्तु महाराजा ने इसे ठुकरा दिया। इस पर अग्रेज के इशारे पर लाहौर मे सर मोहम्मद इकबाल ने "काश्मीर कमेटी" के नाम से एक सस्था स्थापित की। इस सस्था ने काश्मीर मे शेख अब्दुल्ला आदि को अपने साथ मिलाकर महाराजा के विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया। काश्मीर मे जगह-जगह साम्प्रदायिक फसाद कराये गये और यद्यपि यह आन्दोलन सफल नही हुआ परन्तु महाराजा पर दबाव डालकर अग्रेज सरकार ने एक आयोग नियुक्त किया जिसकी सिफारशो के अनुसार विधान सभा की स्थापना हुई और शेख साहिब के साथियो को मन्त्रिमण्डल मे लिया गया। बाद मे जब मि० जिन्नाह ने दखल देना शुरू किया और शेख की बजाय विरोधियो को आगे लाने का प्रयत्न किया तो शेख अब्दुला ने मुस्लिम कान्फ्रेस भग करके नेशनल कान्फ्रेस की स्थापना कर ली। १९४६ मे शेख साहिब ने "काश्मीर खाली करो" का नारा दिया। ऐसा मालूम होता है कि वह उस समय भी "स्वतत्र काश्मीर" की स्थापना के स्वप्न देख रहे थे। मि० जिन्नाह की मुस्लिम लीग उनका विरोध कर रही थी। १९४७ मे देश के विभाजन के समय शेख अब्दुल्ला जेल मे थे। महाराजा पर गवर्नर जनरल लार्ड माउटबैटन अनेक तरीको से पाकिस्तान मे सम्मिलित होने के लिये दबाव डाल रहे थे। जबकि महाराजा का प्रधान मत्री काश्मीर को "स्वतत्र देश" बनाकर ब्रिटिश कामन वैल्थ का सदस्य बनाना चाहता था। शेख के प्रतिनिधियो ने मि० जिन्नाह से लाहौर मे भेट की। मि० जिन्नाह ने शेख की यह शर्त रद्द कर दी कि पहले काश्मीर मे लोक-

तन्त्र के सिद्धान्तो के अनुसार सरकार बनाने का अवसर देकर यह फैसला करने दिया जाये कि काश्मीर का भविष्य क्या होना चाहिये। महाराजा परेशान था। चूँकि काश्मीर का डाक और तार सचार लाहौर के अधीन था और श्रीनगर मे रावलपिण्डी के मार्ग से सभी आवश्यक वस्तुए जाती थी इसलिये महाराजा ने इस व्यवस्था को बनाये रखने के लिये पाकिस्तान से समझौता कर लिया। भारत सरकार से इसी तरह के सम्बन्ध बनाये रखने के लिये उसने सधि की पेशकश की।

पाकिस्तान काश्मीर पर आक्रमण करने की तैयारिया कर रहा था। उसने काश्मीर को जाने वाला तमाम सामान रोक लिया और काश्मीर की सीमाओ पर गडबड शुरू कर दी। मि० जिन्नाह ने अपने निजी सैक्रेटरी रतुरशीद अहमद को श्रीनगर मे गडबड कराने के लिये गुप्त रूप से भेज दिया। इधर स्यालकोट, रावलपिण्डी, मररी हिल्ज और एबटाबाद से लुटे-पिटे हिन्दू सिख भाग-भाग कर काश्मीर मे प्रवेश कर रहे थे। काश्मीर की सेना के कमाण्डर एक अग्रेज अफसर मि० स्काट थे। गिलगित मे सेना का कमाण्डर और सैनिक का गवर्नर एक अग्रेज अफसर कर्नल ब्राउन था। ये दोनो गुप्त रूप से पाकिस्तान से मिले हुए थे। पजाब और सीमा प्रान्त के अग्रेज राज्यपाल पठानो और पजाबियो को काश्मीर पर आक्रमण के लिये भर्ती कर रहे थे। सीमा प्रान्त का एक भूतपूर्व अग्रेजी गवर्नर सैर के बहाने कुछ सप्ताह पहले काश्मीर गया था। पुछ मे रियासत के मुसलमान सिपाहियो को गुप्त रूपसे खरीद लिया गया। पहले तो मुस्लिम लीग की तथा कथित नेशनल गार्ड के कमाण्डर खुरशीद अनवर को आक्रमण करने वालो का कमाण्डर नियुक्त किया गया। इसके बाद पाकिस्तानी सेना के मेजर जनरल अकबर खा को अपना नाम जनरल तारक रख कर आक्रमणकारी सेना का अध्यक्ष बनाया गया।

अमरीका भी यह सब कुछ देख रहा था, उसने भी बहती गगा मे

हाथ धोने का निश्चय किया। अमरीका की सेना के एक अफसर सार-जैन्ट रस्सल ने जो एक ठेकेदार के वेष मे कई वर्षो से पिशावर और काबुल के चक्कर काट कर अमरीका के लिये गुप्तचर भर्ती कर रहा था, वेष बदलकर अपना नाम ब्रिगेडियर सलीम खा रख लिया और पठानो जैसे वस्त्र पहन कर आक्रमणकारियो मे सम्मिलित हो गया। उसने काश्मीर मे कोटली और भिम्बर के स्थानो पर हमला किया। गिलगित मे सैनिक गवर्नर कर्नल ब्राउन ने महाराजा के नियुक्त किये हुए राज्य-पाल ब्रिगेडियर घसारासिह को गिरफ्तार कर प्रान्त का शासन प्रबध पाकिस्तानी अधिकारियो के हवाले कर दिया। यहा से पाकिस्तानी सेना ने लद्दाख के प्रान्त पर हमला कर दिया।

पाकिस्तानी आक्रमणकारी बढते हुए लूट-मार करने लगे। इस समय महाराजा ने भारत सरकार से सहायता के लिये प्रार्थना की। भारत सरकार के सुझाव पर महाराजा ने शेख को रिहा कर दिया। शेख को प्रदेश का प्रधान मत्री नियुक्त किया गया। काश्मीर ने भारत मे अपने आप को सम्मिलित कर लिया। भारतीय सेना ने काश्मीर मे प्रवेश कर के आक्रमणकारियो को खदेडना शुरू कर दिया।

लार्ड माउट बैटन इस समय भी भारत के गवर्नर जनरल थे। उनके दबाव पर घोषणा की गई कि युद्ध के अन्त मे भारत मे काश्मीर के विलय की घोषणा की तस्दीक कराने के लिये जनता को अपने विचार प्रकट करने का अवसर दिया जायेगा।

आक्रमणकारियो की पग-पग पर हार हो रही थी। पाकिस्तान सरकार अब भी कह रही थी कि उसकी सेना ने आक्रमण नही किया। बल्कि पठान काश्मीर के मुसलमानो की सहायता के लिये लड रहे है। आक्रमणकारियो को भागते देख कर फिर अग्रेज अधिकारियो और पाकिस्तानी शासको ने आपस मे साजबाज की। इस के अनुसार भारत सरकार को बताया गया कि मि० जिन्नाह ने अपने अग्रेज सेनाध्यक्ष को

काश्मीर पर बाकायदा हमला करने का आदेश दिया है परन्तु सेनाध्यक्ष ने इन्कार कर दिया है इसलिये श्री नेहरू मि० जिन्नाह से समझौता की बातचीत करे। श्री नेहरू ने इसका उत्तर गवर्नर जनरल को यह दिया कि पाकिस्तानी-पजाब के जिन अड्डो से पाकिस्तानी सेना हमले कर रही है भारतीय सेना उन पर जवाबी हमला करेगी। परन्तु नेहरू पर इतना दबाव डाला गया कि काश्मीर का झगडा सयुक्त राष्ट्रीय सस्था मे रखा गया।

बाद की घटनाओ से यह बात सिद्ध हो जाती है कि अग्रेज की इस चाल का अभिप्राय यह था कि काश्मीर के जिस भाग पर पाकिस्तानी सेना ने अधिकार कर लिया है वह पाकिस्तान के अधिकार मे ही रहे और यह झगडा इतना लम्बा किया जाये कि पाकिस्तान को एक और आक्रमण करने की तैयारिया करने का अवसर मिल जाये। परन्तु पाकिस्तानी सेना का काश्मीर पर अधिकार करने मे विफल हो जाना पाकिस्तानी शासको के लिये बडी परेशानी का कारण बना। जिन लोगो के सम्बन्धी इस आक्रमण मे मारे गये थे उन्होने क्रोध मे आकर शासको के विरुद्ध प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। पाकिस्तानी सेना मे भी असन्तोष फैलने लगा।

पठानो ने अपने अधिकारो की माग की तो उनके नेताओ को गिरफ्तार कर लिया गया। पिशावर मे चारसदा के स्थान पर पुलिस ने हजारो पठान मर्दों, स्त्रियो और बच्चो पर जो नमाज पढने के लिये एकत्रित हुए थे मशीन गनो और बन्दूको से हमला कर दिया। कम-से-कम तीन हजार पठानो को गोलियो से भून दिया गया।

बिलोचिस्तान मे कल्लात की रियासत के शासक ने पाकिस्तान मे सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया। मि० जिन्नाह के आदेश से मेजर जनरल अकबर खा ने कल्लात पर हमला कर रियासत को जबरदस्ती पाकिस्तान मे सम्मिलित कर लिया।

बहावलपुर के शासक ने भी पाकिस्तान से अलग रहने की इच्छा प्रकट की थी परन्तु बहावलपुर पर हमला करने की धमकी दी गई। नवाब बहावलपुर को भयभीत होकर झुकना पडा।

प्रश्न उठता है कि क्या ऐसी धाधलियो से पाकिस्तान की घरेलू समस्याओ का समाधान हो गया ? मि० जिन्नाह तो इस बात से परेशान हो रहे थे कि यद्यपि वह श्रीनगर मे एक विजयी शासक की हैसियत से प्रवेश करने के लिये स्वप्नो के महल बना रहे थे परन्तु उन्हे विफल होना पडा। वह अब नये हमले के लिये तैयारिया कर रहे थे परन्तु पाकिस्तान की जनता माग कर रही थी कि उनकी रोटी और कपडे की समस्या का समाधान किया जाये। लोग यह भी माग कर रहे थे कि उन्हे पाकिस्तान की स्थापना के लिये कुर्बानिया करने का आदेश देते हुए उनसे जो वायदे किये गये थे अब उन्हे पूरा किया जाये।

लाहौर, गुजरो-वाला और कराची मे भूखे-नगे मुसलमान शरणार्थी रोटी, कपडा और मकान के लिये प्रदर्शन कर रहे थे। लाहौर मे जब मि० जिन्नाह एक मस्जिद मे नमाज़ पढने के लिये गये तो इन लोगों ने "जिन्नाह मुर्दाबाद" के नारे लगाये। कराची मे प्रधान मत्री लियाकत अली का घेराव किया गया। पुलिस ने दोनो स्थानो पर जनता पर गोली चलाई। कितने ही व्यक्ति मारे गये।

३
जिन्नाह की रहस्यमयी मृत्यु और लियाकत अली की हत्या

पाकिस्तान की स्थापना होते ही पाकिस्तानी नेताओ ने एक-दूसरे के विरुद्ध साजबाज शुरू कर दी थी। मि० जिन्नाह को तपेदिक और कैसर की बीमारी ने घेर लिया था। उनकी सेहत तेजी से बिगड रही थी। उत्तर प्रदेश से चौधुरी खलीकुज्जमान अग्रेज के इशारे पर कराची पहुच गये। मि० जिन्नाह उनसे प्रसन्न नही थे। वह चाहते थे कि चौधुरी साहिब भारत मे साजबाज के लिये ठहरे रहे। परन्तु चौधुरी साहिब तो पाकिस्तान के जन्मदाता मि० जिन्नाह की मत्यु की प्रतीक्षा करते हुए स्वय पाकिस्तान के राष्ट्रपति बनने के स्वप्न देख रहे थे। शायद अग्रेज सलाहकारो के कहने पर मि० जिन्नाह को झुकना पडा और चौधुरी साहिब पाकिस्तान मुस्लिम लीग के प्रधान नियुक्त कर दिये गये। चौधुरी साहिब ने सीमा प्रान्त मे मुख्यमत्री मि० अब्दुलकयूम से गठजोड कर लिया। पजाब मे उन्होने मुख्यमत्री नवाब ममदोट से सौदे-बाजी कर ली। पूर्वी बगाल मे वह एक गुट्ट से सौदेबाजी कर रहे थे। कराची मे उन्होने दिल्ली और उत्तर प्रदेश से आये हुए मुसलमानो मे अपना एक मजबूत गुट्ट बना लिया।

प्रधान मत्री चौधुरी साहिब की इन गतिविधियो से परेशान थे। उन्होंनें अपने गुट्ट को मजबूत करना शुरू कर दिया। सीमा प्रान्त मे उन्हो-न्ने कयूम के विरुद्ध खा यूसफ खटक, खा गुलाम मुहम्मद, मुल्ला मानकी

आदि का गुट्ट सगठित किया । पजाब मे उन्होने नबाव दौलताना को अपने साथ मिलाया और पूर्वी बगाल मे मि० सोहरावर्दी खा के मुकाबले मे मुख्यमत्री सर नाजिमुद्दीन से गठजोड किया ।

मि० जिन्नाह इन घटनाओ से परेशान थे । उनकी बीमारी बढती गई । मि० लियाकत अली खा अपने हाथ मजबूत करने मे लगे हुए थे । मि० जिन्नाह की बीमारी की उन्हे कोई परवाह नही थी । मि० जिन्नाह की बहन मिस फातमा लियाकत अली के विरुद्ध थी । उन्हे लियाकत अली पर इतना भी विश्वास नही था कि अपने भाई की चिकित्सा के लिये सरकारी डाक्टर की सेवाये प्राप्त करे । उन्होने जब मि० जिन्नाह के लिये एक प्रसिद्ध डाक्टर बुलाया और लियाकत अली को मालूम हुआ कि मि० जिन्नाह की हालत खतरनाक है तो वह भागे-भागे ज्यारत के पहाडी स्थान मे मि० जिन्नाह की कोठी मे पहुचे परन्तु डाक्टर ने मि० जिन्नाह की इच्छा अनुसार बीमारी का ब्योरा लियाकत अली को देने से इन्कार कर दिया । जब कुछ देर वाद लियाकत अली जिन्नाह से मिले तो जिन्नाह ने लियाकत अली को बुरी तरह से फटकारा । मि० जिन्नाह पहले ही बीमार थे । इस गर्म-गुफ्तारी से वह मूर्छित हो गये । लियाकत अली उन्हे इसी अबस्था मे छोड कर कराची चले गये ।

लियाकत अली को अब इस बात की आशका थी कि मि० जिन्नाह अपनी बहन को अपने बाद गवर्नर जनरल और खलीकुज्जम्मान को प्रधान मत्री बनाना चाहते है । इसलिये वह अपनी गद्दी सुरक्षिल करने के लिये सेना के कुछ उच्च अधिकारियो से साजबाज करने लग गये । दूसरी ओर कुछ और सैनिक अधिकारी उनका तख्ता उलट देने के लिये तैयारिया करने लगे । १४ अगस्त १९४८ को मि० जिन्नाह ने अपने डाक्टर मि० वक्श को कहा

"मे जीवित रहना चाहता था । परन्तु अब यह बात कोई महत्व

नही रखती कि मै जीवित रहू अथवा मर जाऊ।"

डाक्टर बक्श ने मि० जिन्नाह की आखो मे आसू देखे। उसका कहना है कि मि० जिन्नाह को कोई आघात पहुचा था जिससे वह मायूस हो गये थे।

इस आघात का कारण लियाकत अली की साज़बाज थी। मि० जिन्नाह ने कहा "मै समय आने पर जनता को अपनी बीमारी की सूचना दूगा।"

वह समय आ गया। मिं० लियाकत अली मि० जिन्नाह से सर्वथा लापरवाह हो गये थे। २१ सितम्बर १९४८ को मि० जिन्नाह ने कराची जाने की इच्छा प्रकट की। इसकी सूचना कराची पहुचा दी गई थी परन्तु जब मि० जिन्नाह का विमान उसी दिन सवा चार बजे शाम मौरीपुर (कराची) के हवाई अड्डे पर पहुचा तो उनका स्वागत करने के लिये न तो लियाकत अली, न ही कोई दूसरा मत्री अथवा अधिकारी हवाई अड्डे पर पहुचा। मि० जिन्नाह को स्ट्रेचर समेत सेना की एक एम्बूलैंस गाडी मे रखा गया। यह गाडी राजभवन को जाने वाले मार्ग पर ही खराब हो गई। एक घण्टे तक चालक मरम्मत करने की कोशिश करता रहा परन्तु उसे सफलता प्राप्त न हुई। कराची शहर से एक और गाडी लाने के लिये चालक गया।

मि० जिन्नाह की नर्स सिस्टर डनहम ने इस घटना का वर्णन करते हुए बताया कि

> "हमारी खराब गाडी शरणार्थियो की एक बस्ती के निकट खडी थी। उसके निकट कूडे-करकट का ढेर था जिस पर सैकडो मक्खिया भिनभिना रही थी। यह मक्खिया मि० जिन्नाह को परेशान कर रही थी। मैं ने गत्ते का एक टुकड़ा उठाया और मक्खियो को हटाने के लिये उससे पखा करने लगी। कुछ पल के लिये केवल मैं ही उनके पास थी। मि० जिन्नाह ने कृतज्ञता प्रकट करने के लिये अपना

कमजोर हाथ मेरे हाथ पर रख कर मेरी ओर जिस दृष्टि से देखा, मै उसे कभी भूल नही सकती। मि० जिन्नाह् बोल नही सकते थे। परन्तु उनकी आखो मे आसू थे। इस समय उनकी आत्मा उनकी आखो मे थी। कुछ दूर शरणार्थी बच्चे खेल रहे थे। कई लोग निकट से होकर गुजर जाते। उन्हे क्या मालूम था कि पाकिस्तान का जन्मदाता सडक के किनारे एक टूटी गाडी मे जीवन की अन्तिम श्वास ले रहा था।"

६ बज कर १० मिनट पर दूसरी गाडी आई। मि० जिन्नाह् को स्ट्रेचर पर डाल कर राजभवन मे उनके कमरे मे लाया गया। डाक्टरो ने उन्हे बचाने के लिये टीका लगाया परन्तु मि० जिन्नाह् के मुह से झाग बहने लगे।

उसी रात लगभग दस बजे मि० जिन्नाह् के प्राण-पखेरू उड गये। मि० लियाकत अली और उनके मत्रिमण्डल के अन्य सदस्य उस समय वहा उपस्थित नही थे। प्रश्न उठता है कि वे कहा थे। भारत सरकार के उस समय के राजदूत श्री श्रीप्रकाश का कहना है कि उस शाम लियाकत अली फ्रास के दूतावास मे शराब की एक पार्टी मे उपस्थित थे। यह एक विचित्र बात है कि पाकिस्तान का जन्मदाता दम तोड रहा था और उसका प्रधान मत्री शराब के जाम उडा रहा था।

कई दिन बाद मि० लियाकत अली ने भारत के राजदूत को बताया शराब की पार्टी के समय मुझे मालूम नही था कि मि० जिन्नाह् कराची मे आये हुए है और उनकी अवस्था इतनी गम्भीर है।

लियाकत अली के इस उत्तर से किसी को भी तसल्ली नही होगी। २१ सितम्बर को दिल्ली मे मि० जिन्नाह् की कराची मे अन्तिम यात्रा की सूचना पहुच चुकी थी। यही नही बल्कि यह सूचना भी मिल गई थी कि लाहौर और दूसरे बडे शहरो मे पुलिस गश्त कर रही है।

वास्तव में मि० लियाकत अली को सब कुछ मालूम था परन्तु वह

मि० जिन्नाह से अन्तिम भेट करने का साहस नही रखते थे । उन्हे इस बात की आशका थी कि मि० जिन्नाह अपने उतराधिकारी का फैसला सुना देगे । इसलिए मि० लियाकत अली दूर रह कर अपनी गद्दी को सुरक्षित करने के लिए साजबाज करने मे लगे रहे ।

भारतीय राजदूत को रात के बारह बजे पाकिस्तान के एक उच्च अधिकारी ने टेलीफोन पर मि० जिन्नाह की मत्यु की सूचना दी । इस अधिकारी ने मतक के लिए बडे अनुचित और असभ्य शब्दो का प्रयोग किया । इसी अधिकारी ने शाम की पार्टी मे भारतीय राजदूत को बताया था कि मि० जिन्नाह स्वस्थ है । उसने अब राजदूत को बताया कि

"पार्टी मे शराब पीने के बाद हम डिनर के लिए गए । आधी रात को मुझे मत्यु की सूचना मिली । मि० जिन्नाह के उत्तराधिकारी के नाम का फैसला होने के बाद मै अभी-अभी राजभवन को आया हू । हमारे नए गवर्नर जनरल सर नाजिमुद्दीन इस समय दिल्ली मे है । मै चाहता हू कि उन्हे यहा तक लाने के लिए तुरन्त एक विशेष विमान के लिए परमिट दिया जाए ।"

इसका अर्थ यह था कि मि० लियाकत अली का षड्यन्त्र सफल हो गया था । मिस फातमा जिन्नाह को गवर्नर जनरल और चौधुरी खलीकुज्जमान को प्रधान मत्री बनाने के लिए पाकिस्तान के जन्मदाता की योजना विफल बना दी गयी थी । मि० जिन्नाह की मत्यु का समाचार रेडियो पाकिस्तान से प्रसार करने से पहले ही लियाकत अली ने मि० जिन्नाह के विशेष अधिकारियो को बदल दिया था ।

मिस फातमा जिन्नाह नाराज हो गई थी । लियाकत अली ने उनकी गतिविधियो की निगरानी का आदेश दे दिया । उनकी डाक सैसर होने लगी । उनका टेलीफोन टैप किया जाने लगा । फातमा ने बदला लेने के लिए बगाल के भूतपूर्व मुख्यमत्री मि० शहीद सोहरावर्दी से गठ-जोड कर लिया । इसके परिणामस्वरूप पहले तो जिन्नाह मुस्लिम लीग

बनी और इसके बाद इसे आवामी लीग का नाम दिया गया ।

१२ सितम्बर १६५१ को कराची के समाचार पत्र "इवनिंग न्यूज ने लिखा कि

"मिस फातमा जिन्नाह् ने अपने भाई की पहली वर्सी पर रेडियो पाकिस्तान से प्रसारित करने के लिए जो सन्देश रिकार्ड कराया था उसमें उन्होने लियाकत अली की सरकार की कडी आलोचना की थी परन्तु रेडियो से जो सन्देश प्रसारित किया गया उसमे से ये शब्द काट दिए गए ।"

पाकिस्तान के लगभग सभी समाचार पत्रो ने इस ह्रकत के लिए लियाकत अली को दोषी ठह्राया । विरोधी दलो के नेताओ ने उनकी निन्दा की ।

बहुत कम लोग जानते है कि मि० जिन्नाह् पाकिस्तान के भविष्य के विधान पर भी लियाकत अली की विचारधारा से सहमत नही थे । उन्होने पार्लियामेट के पहले अधिवेशन मे सभी सम्प्रदाय के लोगो को समान अधिकार देने का वचन दिया था । भारत से लीग के जो नेता उनसे मिलने के लिए कराची पहुचे थे उन्हे मि० जिन्नाह् ने कहा था कि मै कुछ देर पाकिस्तान मे रह् कर भारत लौट जाऊगा ।

मि० जिन्नाह् की रहस्यमयी मत्यु से पहले कराची मे उनके निवास स्थान पर दो बार उनकी हत्या करने की कोशिश की गई । एक बार कुछ नवयुवक जो पजाबी मालूम होते थे दीवार फाद कर आ घुसे परन्तु जहा उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया वहा सरकारी तौर पर यह समाचार दबा लिया गया । इन युवको को शायद जेल मे गोली मार दी गई । मुकदमा नही चलाया गया ।

मि० जिन्नाह् की रक्षा के लिए राजभवन की दीवारे ऊची कर दी गयी । पहरा कडा कर दिया गया । सारी रात राजभवन के बाहर बिजली रौशन रहती । मि० जिन्नाह् एक तरह् से अपने राजभवन मे

कैदी से बन गये थे। समस्त देश मे खून-खराबा से उनके दिमाग पर बुरा प्रभाव पडा था और प्राय रातो को उठ कर वह पागलो की तरह बडबडाने लग जाते। उन्होने पाकिस्तान की जो माग की थी वह तो पूरी हो गई थी परन्तु इतना खून-खराबा होगा, इसकी शायद उन्हे आशका नही हुई थी।

लियाकत अली ने अपने हाथ मजबूत करने के लिये पजाब मे नवाब ममदौट को मुख्यमत्री के पद से हटा दिया। इसके बाद उन्होने शरणार्थियो से चौधुरी खलीकुज्जम्मान के विरुद्ध आन्दोलन कराया और उन्हे मुस्लिम लीग के अध्यक्ष के पद से त्यागपत्र देने के लिये विवश करके यह पद स्वय सम्भाल लिया।

लियाकत अली ने सीमा प्रान्त के मुख्य मत्री मि० अब्दुल कयूम पर भी त्यागपत्र के लिये दबाव डाला परन्तु उन्होने इन्कार कर दिया। मि० लियाकत अली स्वय पिशावर पहुचे। मुख्यमत्री ने एक सार्वजनिक सभा मे प्रधान मत्री को धमकी दी। प्रधान मत्री मायूस होकर लौट आये। मुस्लिम लीग के चुनाव मे सीमा प्रान्त से लियाकत अली का कोई भी व्यक्ति सफल न हुआ। कयूम खा लियाकत अली के विरोध पर भी प्रान्तीय लीग के प्रधान बना लिये गये।

लियाकत अली ने सिंध के मुख्य मत्री श्री अयूब खुरों को डिसमिस कर दिया। अयूब के विरूद्ध आरोपो की जाच के लिये एक आयोग भी नियुक्त किया परन्तु लियाकत अली अपने इस विरोधी का राजनैतिक जीवन खत्म न कर सके।

लियाकत अली तीन वर्ष तक दौडधूप करने पर भी पाकिस्तान के लिये विधान तैयार न करा सके। नेशनल असैम्बली की एक समिति ने विधान का जो खाका तैय्यार किया था उसे पजाब और बगाल दोनो ने रद्द कर दिया। पजाबी नेता पूर्वी बगाल को उसकी आबादी के अनुसार पार्लियामैन्ट मे प्रतिनिधि भेजने का अधिकार देने के लिये

तैयार नही थे। लियाकत अली ने मि० जिन्नाह् के रास्ते पर चलते हुए बगालियो को साफ-साफ कह दिया था कि बगाली भाषा को किसी भी हालत मे सरकारी भाषा का दर्जा नही दिया जायेगा। जब एक बगाली सदस्य ने केन्द्रीय विधान सभा मे सरकारी भाषा का प्रश्न उठाया तो लियाकत अली ने उसे धमकाते हुए कहा—"पाकिस्तान मुसलमानो का देश है। इसलिये केवल उर्दू ही पाकिस्तान की भाषा हो सकती है।" पूर्वी बगाल मे इसके विरुद्ध विद्यार्थियो ने प्रदर्शन किया। उन पर गोलिया चलाई गई। पूर्वी बगाल मे पुलिस के कर्मचारी वेतन बढाने की माग कर रहे थे। उनके आन्दोलन ने विद्रोह का रूप धारण कर लिया। उस समय जनरल अयूब खा पूर्वी बगाल मे पाकिस्तानी सेना के कमाण्डर थे। उनके आदेश से सेना ने पुलिस पर हमला किया। कितने ही बगाली सिपाही मारे गये। इन घटनाओ से बगाली जनता उत्तेजित हो गई।

लियाकत अली हर जगह फेल हो रहे थे। लाहौर और कराची के बाजारो मे उनके विरुद्ध जलूस निकल रहे थे। जनता की कोई भी समस्या हल नही हो रही थी। उनके विरोधी मजबूत हो रहे थे। श्री हुसैन शहीद सोहरावर्दी ने मिस जिन्नाह, नवाब ममदोट, मिया इफतखार उद्दीन, मौलाना भाषानी और जी एम सैय्यद से मिल कर जो अवामी मुस्लिम लीग स्थापित की थी, उसका जगह-जगह स्वागत किया जा रहा था। जब लियाकत अली ने श्री सोहरावर्दी के लिये "गद्दार" शब्द का प्रयोग किया और फतवा दिया कि मुस्लिम लीग के मुकाबले मे कोई सस्था स्थापित करना इस्लाम से गद्दारी करना है तो विरोधियो ने पूछा कि खुले मुह फिरने वाली और काफरो से हाथ मिलाने वाली बेगम लियाकत अली क्यो कर अपने आप को मुसलमान कह सकती है?

लियाकत अली के विरोधी चौधरी खलीकुज्जमान लन्दन गये। उन्होने अपने पुराने अग्रेज मित्रो से परामर्श कर के सभी इस्लामी देशो का ब्लाक कायम करने की योजना की घोषणा की। उन्होने कराची

मे एक अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी सम्मेलन की आयोजना की। वास्तव मे यह अग्रेज की चाल थी। लियाकत अली इससे भी परेशान हो रहे थे। उन्होने इसके मुकाबले मे अमरीका से गठजोड करने का फैसला किया।

इन्ही दिनो पठानिस्तान आन्दोलन तीव्र हो रहा था। लियाकत अली अमरीका से साजबाज कर रहे थे। अफगानिस्तान और रूस को इस से चिन्ता हुई। दोनो ने पठानो की आकाक्षाओ का समर्थन किया। अफगानिस्तान की सरकार ने माग की कि अग्रेजो ने उसके जो इलाके छीन लिये थे वे अफगानिस्तान को लौटा दिये जाये और खैबर से सिधु नदी तक के पठानो के इलाके की जनता को अपने भविष्य का फैसला करने के लिये आत्म-निर्णय का अधिकार दिया जाये। अफगानिस्तान ने सयुक्त राष्ट्र सभा मे भी यह प्रश्न उठाया। पाकिस्तान सरकार ने इसके उत्तर मे अफगानिस्तान की सीमाओ पर सेनाये एकत्रित कर दी। कई स्थानो पर दोनो देशो की सेनाओ मे झडपे भी हुई और पाकिस्तानी विमानो ने कबायली इलाके पर बमवर्षा की। इस से तनाव बढता गया। पाकिस्तान सरकार ने किराये के कुछ व्यक्तियो को लेकर पिशावर मे "आजाद अफगान सरकार" का ढोग खडा कर दिया। इन लोगो ने कहना शुरू कर दिया कि वह अफगानिस्तान को आजाद करायेगे।

जनता मे असंतोष की बढती हुई लहर से परेशान होकर लियाकत अली ने बावेला मचाना शुरू कर दिया कि भारत पाकिस्तान को खत्म कर देना चाहता है। स्थान-स्थान पर भडकीले भाषण देते हुए उन्होने समस्त काश्मीर पर अधिकार करने के लिये लोगो को नई लडाई करने के लिये तैयार रहने के आदेश देना शुरू कर दिये।

लियाकत अली अमरीका गये। जहा उन्होने अपने भाषणो मे कहा कि पाकिस्तान समस्त एशिया में "स्वतंत्रता की रक्षा के लिए" अमरीका का साथी बनने के लिये तैयार है। उन्होने कहा कि अमरीका पाकिस्तान

की मित्रता पर विश्वास कर सकता है। उन्होने भारत के विरुद्ध भी भाषण और वक्तव्य दिये। अमरीका से लौटने से पहले लियाकत अली अमरीका को अपने देश मे सैनिक अड्डे देने के लिये गुप्त रूप से वचन दे आये थे। इसके बदले लियाकत अली अमरीका से सैनिक सामग्री प्राप्त करना चाहते थे।

अमरीका और ब्रिटेन दोनो पश्चिमी एशिया मे अपने तेल भण्डारों को सुरक्षित रखने और इन देशो मे स्वतत्रता की भावनाओ को कुचल देने के लिये इस्लाम के नाम पर एक ब्लाक की स्थापना करने के लिये दौड-धूप कर रहे थे। रूस और चीन की बढती हुई ताकत से भी उन्हें परेशानी थी। इस्लाम की रक्षा के नाम पर वे इन दोनो देशो के मुकाबले मे एक सैनिक गठजोड करने के लिये इस्लामी देशो पर डोरे डाल रहे थे। भारत ने पश्चिम की ताकतो को सैनिक अड्डे देने से इन्कार कर दिया था। भारत की आर्थिक प्रगति से भी ये ताकते परेशान थी। लियाकत अली अपनी गद्दी बचाने के लिये भारत से झगडा करना आवश्यक समझते थे और वह यह भी समझ रहे थे कि अमरीका की सहायता से वह समस्त काश्मीर पर अधिकार कर लेगे। इसलिये वह अमरीका से सैनिक गठजोड करने के लिय तैयार हो गये।

सेना मे अपने हाथ मजबूत करने के लिये उन्होने अयूब खा को सेनापति के पद पर नियुक्त कर दिया और कई दूसरे जूनियर अधिकारियो को भी इसी तरह तरक्की दे दी। इससे कई दूसरे सैनिक अधिकारी उनसे बिगड गये। सेना के युवक अफसर इसलिये भी नाराज थे कि लियाकत अली अपने हित के लिये देश की स्वतत्रता को विदेशियो के पास गिरवी रख रहे थे। यह अफसर प्रगतिशील विचारधाराओ पर विश्वास रखते थे। उन्होने पाकिस्तान की स्थापना के लिये गुप्त रूप से मि० जिन्नाह की सहायता की थी। इसलिये जब उन्होने देखा कि लियाकत अली देश को गलत रास्ते पर ले जा रहे है तो उनमे असतोष फैलने लगा। इस बात के

प्रमाण मिलते है कि मि० लियाकत अली के कुछ विरोधी नेताओ से सम्पर्क स्थापित कर लिया गया था। इस बात से इन्कार नही किया जा सकता कि एक ओर सीमा प्रान्त के मुख्य मत्री अब्दुलकयूम ने लियाकत का तख्ता उलटने के लिये सेना और पुलिस के कुछ उच्च अधिकारियो से साज-बाज शुरू कर दी थी और दूसरी ओर साम्यवादी दल के नेताओ से पजाब के कुछ सैनिक अधिकारियो ने परार्मश शुरू कर दिया था। साम्यवादी नेताओ से इन अफसरो ने अपनी योजना के सम्बन्ध मे बातचीत की थी। साम्यवादी नेताओ का कहना है कि उन्होने इन अफसरो को परामर्श दिया था कि वह यह कदम न उठाये परन्तु बाद की घटनाओ से मालूम होता है कि ये अफसर लियाकत अली का तख्ता उलट देने के लिये तैय्यारिया करते रहे।

लियाकत अली ने अमरीका से लौटते ही इस्लामी देशो के तथा-कथित प्रतिनिधियो का एक सम्मेलन बुलाया। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस सम्मेलन मे शामिल होने वाले अधिकतर नेता अग्रेजो के विरोधी परन्तु अमरीका के मित्र थे। उदाहरणतया ईरान के मुल्ला काशानी और फलस्तीन के मुफती आजम। मुल्ला काशानी ईरान मे तेल की अग्रेजी कम्पनी के विरुद्ध आन्दोलन कर रहे थे। उनके एजेन्टो ने दो मन्त्रियो की हत्या कर दी थी। मुल्ला काशानी अमरीका से मिले हुए थे। इसका प्रमाण यह है यद्यपि इस आन्दोलन को देशभक्तो ने शुरू किया था परन्तु शाह ईरान के तेल के सलाहकार अमरीका की तेल कम्पनी के एक डायरेक्टर थे। अमरीका अग्रेजो की 'मनापली' खतम कर स्वय ईरान के तेल पर कट्रोल करना चाहता था।

इस सम्मेलन के दो और भी लक्ष्य थे। पहला यह कि चौधरी खलीकुज्जमान अग्रेज के पिटठू की हैसियत से "इस्लामी ब्लाक" स्थापित करने के लिए जो कुछ कर रहे थे उसे विफल करके लियाकत अली का इस्तेमाल करके पाकिस्तान को अमरीका के कट्रोल मे लाया जाये।

और "जेहाद" के नारे लगा कर भारत को भयभीत और कमजोर किया जाये।

इस सम्मेलन मे इस्लामी देशो के तथाकथित नेताओ ने पाकिस्तान को भारत से युद्ध के लिये सहायता देने की घोषणाये की। भारत को धमकिया दी गई कि पाकिस्तान इस्लामी देशो की सैनिक सहायता से काश्मीर पर अधिकार करके ही दम लेगा। सम्मेलन मे "लियाकत अली जिन्दाबाद" के नारे लगाये गये। कराची, रावलपिण्डी और लाहौर मे कई ऐसी सस्थायें स्थापित की गई जिन्होने काश्मीर के लिये भारत पर हमला करने के लिये "मुजाहिदो" की भरती की घोषणा की। सीमा प्रान्त मे जगह-जगह जलसे करके दावे किये गये कि लाखो पठान काश्मीर पर हमला करने के लिये तैय्यार है। लाहौर मे **एक पत्रकार** ने गप्प हाकी कि वह ५० हजार "मुजाहिद" भरती करके भारत पर आक्रमण करेगा। कराची मे एक पत्रकार ने घोषणा की कि समस्त भारत को "स्वतत्र" कराने के लिये उसने एक सैनिक सस्था स्थापित की है। यह सभी हरकते लियाकत अली को हीरो बनाने के लिये की जा रही थी।

इस गर्मा-गर्मी मे अचानक कराची से सरकारी तौर पर घोषणा की गई कि मि० लियाकत अली की सरकार का तख़्ता उलटने और एक "सैनिक तानाशाही" कायम करने के लिये मेजर जनरल अकबर खा के नेतृत्व मे एक सैनिक गुट्ट ने षडयत्र किया है और एक साथ छापे मार कर इस गुट्ट के सभी अफसरो और उनके समर्थक नेताओ को गिरफ्तार कर लिया गया है। जो व्यक्ति गिरफ्तार किये गये उनके नाम यह हैं :

(१) मेजर जनरल अकबर खा
(२) पाकिस्तान वायु सेना के उपाध्यक्ष एयर कमाडर एम० के० जजुआ
(३) ब्रिगेडियर सादिक हस्सन कमाण्डर बन्नू ब्रिगेड

(४) लेफ्टीनैन्ट कर्नल जियाउद्दीन आफ "आजाद काश्मीर" हैडक्वार्टर्ज। कर्नल जिया उद्दीन वास्तव मे पाकिस्तानी सेना के सीनियर अफसर थे परन्तु काश्मीर पर आक्रमण के लिये उन्हे आक्रमणकारियो की सहायता के लिये भेजा गया था।

(५) लेफ्टीनैन्ट कर्नल सिद्दीकी राजा आफ आर्मी हैडक्वार्टर्ज

(६) मेजर इसहाक मुहम्मद आफ कल्लात फोरसिज

(७) मेजर जनरल नज़ीर अहमद

(८) मेजर खान मुहम्मद आफ खैबर राइफल्ज़

(९) मेजर मुहम्मद यूसफ आफ जनरल हैडक्वार्टर्ज

(१०) कैप्टन जफ्फरुल्ला पोशी आफ १६ पजाब रेजीमेट

(११) कैप्टन खिजर हयात ऑफ पजाब रेजीमेट

(१२) मेजर मिस खा, आफीसर कमाडिंग महिला नैशनल गार्ड

(१३) श्री फैज अहमद फैज सम्पादक "पाकिस्तान टाइम्ज" लाहौर

(१४) कर्नल गुलजार अहमद

मेजर जनरल अकबर खा पजाब मुस्लिम लीग की प्रमुख नेता बेगम शाह नवाज के दामाद थे। उनकी पत्नी कई वर्ष पहले पजाब में काग्रेस मे काम करती रही थी। मेजर जनरल अकबर खा ने काश्मीर पर हमला करने वालो की कमान की थी और वह मि० जिन्नाह के बहुत निकट और उनके विश्वास-पात्र थे। फैज अहमद फैज देश के विभाजन से पहले आकाशवाणी मे काम किया करते थे। कर्नल गुलज़ार अहमद मि० जिन्नाह के बहुत निकट थे। देश के विभाजन से पहले उन्होने मि० जिन्नाह के सामने श्री नेहरू और दूसरे काग्रेसी नेताओ की हत्या की योजना रखी थी और विश्वास प्रकट किया था कि ऐसा करके केन्द्रीय सरकार पर अधिकार किया जा सकता है।

गिरफ्तारियो की घोषणा करते हुए मि० लियाकत अली ने आरोप लगाया कि ये अभियुक्त उनकी सरकार का तख्ता उलट कर सैनिक तानाशाही स्थापित करना चाहते थे। लन्दन के समाचार पत्र "टाइम्स" ने लिखा कि इस षड्यत्र के नेताओ ने सरकार का तख्ता उलट कर केन्द्र और प्रान्तो मे सैनिक सरकार स्थापित करने का फैसला किया था। उन्होने यह भी योजना बनाई थी कि प्रधान सेनापति (जनरल अयूब खा) और सरकार के मन्त्रियो और राज्यपालो को गिरफ्तार कर लिया जाये और जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिये कराची मे प्रदर्शन कराये जाये। उन्होने यह भी फैसला किया था कि एक ऐसी विदेशी ताकत से सैनिक गठजोड किया जाये जो एग्लो-अमरीकन ब्लाक के विरुद्ध हो।

मतलब यह कि यह लोग रूस से गठजोड करना चाहते थे। इसका कारण यह था कि पाकिस्तान के शासक कभी ब्रिटेन और कभी अमरीका के पास पाकिस्तान की स्वतन्त्रता को इस्लाम के नाम पर बेच कर जनता को धोखा देना चाहते थे। इसलिये सैनिक अधिकारियो ने उनका तख्ता उलट देने का फैसला किया।

असली योजना यह थी कि गवर्नर जनरल सर नाजिमुद्दीन को उनकी स्पैशल ट्रेन से पकड लिया जाये। उनसे लियाकत अली और उनकी सरकार को डिसमिस कराया जाये और मेजर जनरल अकबर खा इसके बाद गवर्नर जनरल को गिरफ्तार करके अपनी सरकार की स्थापना की घोषणा कर दे।

साम्यवादियो का कहना है कि उनसे इस योजना के सम्बन्ध मे अवश्य ही बात-चीत हुई थी परन्तु पार्टी ने इसे पसन्द नही किया, इस पर इसे कैंसल कर दिया गया। परन्तु एक सैनिक अधिकारी की गप्पबाजी से भेद खुल गया और जनरल अयूब खा ने अपनी पोजीशन बनाने के लिए अपने विरोधियो को गिरफ्तार करा दिया। कहना मुश्किल है कि

इन सब बातो मे कहा तक सच्चाई है परन्तु यह ठीक है कि लियाकत अली को इस से अपने विरोधियो को गिरफ्तार करने का अवसर मिल गया। उन्होने एक सैनिक अदालत को इन व्यक्तियो के विरुद्ध मुकदमा चलाने का आदेश दिया। इस सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस केस मे श्री हुस्सैन शहीद सोहरावर्दी ने मेजर जनरल अकबर खा और उनके साथियो की वकालत की। अदालत ने किसी को फासी की सजा का आदेश नही दिया बल्कि उन्हे लम्बी कैद की सजाये दी गई।

इस केस से फायदा उठाने वाले दो व्यक्ति थे। रक्षा-विभाग के एक सैक्रेट्री मेजर जनरल इस्कन्दर मिर्जा, जिन्होने सेना म अपना गुट्ट बनाना शुरू किया और दूसरे स्वय लियाकत अली जिन्होने "पाकिस्तान खतरे मे" के नारे लगा कर पाकिस्तान को अमरीका के सैनिक ब्लाक मे सम्मिलित करने के लिए अपनी गतिविधिया तेज कर दी। जनता को मूर्ख बनाने के लिए उन्होने कहना शुरू कर दिया कि पाकिस्तान पर भारत, अफगानिस्तान और रूस के आक्रमण का खतरा है। उन्होने पाकिस्तानी सेना को भारत की सीमाओ पर एकत्रित होने का आदेश दे दिया। लियाकत अली यह भी समझ रहे थे कि वह अमरीका को काश्मीर के मामले मे भारत पर दबाव डालने के लिए तैय्यार कर लेंगे।

भारत सरकार ने तुरन्त कार्यवाही की। भारत की सेनायें पश्चिम मे पजाब और काश्मीर की सीमा पर पहुच गई। बहुत कम लोग जानते है कि श्री नेहरू ने फैसला कर लिया था कि यदि जरा भी गडबड हो तो भारतीय सेना पाकिस्तान मे प्रवेश कर जाये जिस से पाकिस्तान की आए दिन की धमकिया देने का सिलसिला हमेशा के लिए खतम हो जाए।

कई वर्ष बाद जनरल अयूब खा ने पाकिस्तान सरकार पर अधिकार करने के बाद अपनी पुस्तक "Friends Not Master" मे लिखा कि जब लियाकत अली भारत से युद्ध करने की बाते कर रहे थे तो पाकिस्तान

के पास गिनती के कुछ टैंक और पुराने विमान थे। भारत की सेना मज़-बूत थी। जनरल अयूब ने लियाकत अली को बताया कि युद्ध सेना करती है और पाकिस्तान के पास युद्ध करने की शक्ति नही है।

लियाकत अली ने युद्ध तो न किया परन्तु अपनी जनता को मूर्ख बनाने के लिए उन्होने कराची मे एक भारी प्रदर्शन का आयोजन किया। इस मे उन्होने भारत को मुक्का दिखाया। जलूस मे शामिल होने वालो ने भारत के विरुद्ध नारे लगाए।

मि० लियाकत अली ने वाहवाही तो प्राप्त कर ली परन्तु उन्हे क्या पता था कि उनकी मृत्यु की घडिया निकट आ रही हैं और हत्यारे की गोलिया उन्हे हमेशा के लिए खतम करने के लिये बेचैन हो रही हैं। उन्होने समस्त देश मे अपने विरोधियो को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया परन्तु उन व्यक्तियो को भाप न सके जो उनका खून करने के लिए खामोशी से तैय्यारिया कर रहे थे।

१६ अक्तूबर १९५१ को लियाकत अली एक विशेष विमान पर रावलपिण्डी पहुचे जहा कम्पनी बाग मे एक भव्य सभा का आयोजन किया गया था। प्रधान मन्त्री की हैसियत से वह इस सभा मे "इस्लामी ब्लाक" की स्थापना के लिए एक महत्वपूर्ण घोषणा करना चाहते थे। उन्हे इस सभा मे स्वागत पत्र पेश किया गया। आकाश जिन्दाबाद की ध्वनियो से गूज उठा। लियाकत अली उठे। उन्होने मुस्करा कर जनता की ओर देखा। कुरान शरीफ की आयत लाउडस्पीकर पर पढी और भाषण शुरू करने लगे। परन्तु अभी उन्होने "ब्रादराने मिल्लत" के शब्द ही कहे थे कि किसी ने सामने से लगातार दो फायर किये। लियाकत अली वही गिर पडे। लोग भागने लगे। एक और गोली चली और लोगो ने मच के सामने एक नवयुवक का शव लहू मे लथपथ देखा। लियाकत अली को हस्पताल पहुचाया गया परन्तु उनके प्राण-पखेरू उड चुके थे।

लियाकत अली का हत्यारा कौन था? क्या इस हत्या के पीछे कोई

षड्यन्त्र काम कर रहा था ?

हत्यारा अफगानिस्तान से भागा हुआ एक युवक सैय्यद अकबर बबरक था। उसके परिवार ने अंग्रेजो के राज्य मे विद्रोह किया था। उसका बाप इस विद्रोह मे मारा गया था। अकबर और उसके एक भाई को जो अफगानिस्तान से भाग आये थे अंग्रेज सरकार ने एबटाबाद मे रखा था। उसे सरकार गुजारे के लिये पैंशन देती थी। देश के विभाजन के बाद पाकिस्तान सरकार उसे पैंशन दे रही थी। उसे सरकार से आज्ञा लिये विना बाहर जाने की मनाही थी। इतना होने पर भी वह रावलपिण्डी आया। सदर बाजार मे खाकसार होटल मे अपने आपको गुप्तचर विभाग का अधिकारी जाहिर करके ठहरा। उसके साथ उसका एक बेटा भी था। होटल के रजिस्टरो की पडताल पुलिस करती रही। फिर भी अकबर को किसी ने गिरफ्तार नही किया। प्रधान मन्त्री के जलसो मे गुप्तचर विभाग के कर्मचारी सैकडो की सख्या मे होते है परन्तु अकबर को किसी ने मच के सामने बैठने से नही रोका और किसी ने उसकी तलाशी भी नही ली। जब उसने गोली मार कर प्रधान मन्त्री को ठडा कर दिया तो उसे गिरफ्तार करने की बजाय एक पुलिस अफसर ने गोली मारकर ठण्डा कर दिया। मतलब यही हो सकता था कि यदि अकबर गिरफ्तार हो जाये तो कोई भेद न खोल दे।

अकबर का बेटा भाग कर लाहौर चला गया। अकबर की तलाशी पर उसके जेब से २ हजार के नोट और कबायली इलाके का एक नकशा मिला।

जाच हुई परन्तु क्या परिणाम निकला ? यह किसी को मालूम नही। कई वर्ष बाद जनता ने बावेला मचाया। एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि उसे असलीयत का पता लग गया है परन्तु वह जिस विमान पर रावलपिंडी जा रहा था वह नष्ट हो गया। पुलिस अधिकारी मारा गया। कह दिया गया कि जाच के कागजात भी जल गये हैं। जनता इस

से सन्तुष्ट नही हुई। इस बार स्काटलैंड यार्ड के एक उच्च अधिकारी को जाच के लिये बुलाया गया। उसकी रिपोर्ट प्रकाशित नही की गई। इसके विना ही अयूब खा ने कह दिया कि मुझे विश्वास हो गया है कि यह एक हत्यारे की व्यक्तिगत हरकत थी। कोई षड्यत्र नही था।

जनता को ऐसी किसी भी रिपोर्ट पर विश्वास नही। बेगम लियाकत अली ने कई बार कहा कि एक विदेशी ताकत का उनके पति की हत्या के षड्यत्र मे हाथ था। कई प्रमुख नेता भी इस मे सम्मिलित थे।

लियाकत अली के बेटे ने भी यही आरोप लगाया। अयूब खा का शासन समाप्त होने पर फिर माग की गई कि इस षड्यत्र के बारे मे निरपेक्ष रूप से जाच कराई जाये, परन्तु इस माग को दबा दिया गया।

इस सम्बध मे कुछ पहलू महत्वपूर्ण है वह यह कि

(१) सैय्यद अकबर वर्षो अग्रेजो का जासूस और एजेन्ट रहा। उसे पाकिस्तान सरकार एलाउस देती थी।

(२) अकबर सीमा प्रात के मुख्यमत्री अब्दुल कयूम खा का मित्र था। वह प्राय मुख्य मत्री की कोठी पर देखा जाता था। लियाकत अली कयूम को हटाना चाहते थे।

(३) सरकारी तौर पर प्रतिबध होने पर भी अकबर क्योकर रावलपिण्डी पहुचा ? उसे गिरफ्तार क्यो नही किया गया ?

(४) रावलपिण्डी मे लियाकत अली की सरकार के मत्री श्री गुलाम मुहम्मद, चौधुरी मुहम्मद अली और मिया मुश्ताक अहमद गुर्मानी भी कराची से आये थे। वे प्रधान मत्री के जलसे मे क्यो नही गये। जलसे के समय वे क्या कर रहे थे ?

(५) अकबर को पकडने की बजाय गोली क्यो मार दी गई ? गोली मारने वाले अफसर को प्रमोशन क्यो दी गई जबकि जनता उसकी गिरफ्तारी की माग कर रही थी।

(६) जनता को यह क्यो नही बताया गया कि अकबर अंग्रेजो का जासूस रहा हे ?

१९६८ मे बरमिंघम के पाकिस्तानी साप्ताहिक "एशिया" मे रावल-पिण्डी षड्यन्त्र केस के अभियुक्त एयर कमाडर ब्रिगेडियर जजुआ ने लिखा था कि लियाकत अली की हत्या मे सेना और पुलिस के कुछ अधिकारियो का हाथ था। मै ने अपनी पुस्तक Political conspiracies in Pakistan मे सभी प्रमाण प्रस्तुत कर के लिखा कि·

"लियाकत अली से अंग्रेज नाराज़ हो गये थे क्यो कि वह पाकिस्तान को अमेरिका के पास बेचने का फैसला कर चुके थे। कयूम खा और पजाबी नेता भी उनके विरोधी बन गये थे। इसलिये इन सब ने एक षड्यन्त्र रचा कर लियाकत अली को ख़तम करा दिया। नेताओं मे कयूम खा, गुलाम मुहम्मद, मुश्ताक अहमद गुर्मानी और चौधुरी मुहम्मद अली शामिल थे। जाच करने वाली किसी भी अदालत अथवा अधिकारी ने इन व्यक्तियो के बयान नही लिये हालाकि जनता इन्हे दोषी ठहरा रही थी।"

१९६८ मे ही "एशिया" के सम्पादक महोदय दिल्ली मे आये। उनसे नई दिल्ली के एक होटल मे भेट हुई। उन्होने मुझ से पूछा कि क्या आप का भी ख्याल है कि गुलाम मुहम्मद आदि का इस हत्या मे हाथ है। मैने इन सब व्यक्तियो के नाम लिये। उन्होने कहा कि उन्हे भी ऐसी ही आशका है। जब मैने उन्हे अपनी पुस्तक भेजी तो उन्होने अपने पत्र मे लिखा कि पाकिस्तान के इन नेताओ पर झूठा आरोप लगाया गया है। इस पर एयर कमाडर जजुआ ने उन्हे लिखा कि पाकिस्तान सरकार इन आरोपो को क्यो नही झुठलाती। इसके लिये वह किसी निरपेक्ष अदालत से जाच क्यो नही कराती ?

मुझे विश्वास है कि आज के पाकिस्तानी नेताओ को भी निरपेक्ष तरीके से जाच कराने का साहस नही हो सकता। लियाकत अली की

हत्या के लिये यह षड्यन्त्र किया गया था। लियाकत अली की हत्या से कयूम खा की गद्दी सुरक्षित हो गई। गुलाम मुहम्मद वित्तमत्री से गवर्नर जनरल बन गये। पजाबी अफसरो ने जोर पकडना शुरू कर दिया। पाकिस्तान पर अमरीकी कट्रोल की योजना कुछ देर के लिये ठप्प हो गई।

पजाब के दो समाचार पत्रो "दैनिक निवाये वक्त" और साप्ताहिक "स्टार" ने जो कि लियाकत अली के विरोधी नवाब ममदौट के समर्थक थे कुछ सप्ताह बाद लिखा

"सैय्यद अकबर की दो गोलियो ने लियाकत अली को शहीद बना दिया। यदि वह जीवित रहते तो पाकिस्तानी जनता फतवा देती कि वह परले दर्ज़े के गद्दार थे।"

लियाकत अली की हत्या हो जाने से पाकिस्तान की समस्याओ का समाधान तो नही हुआ। देश मे एकता की भावना भी पैदा नही हुई बल्कि एक भूतपूर्व आई० सी० एस० गुलाम मुहम्मद के गवर्नर जनरल बन जाने से नौकर शाही को पाकिस्तानियो के भविष्य से खेलने का अवसर मिल गया और देश मे षड्यन्त्रो का एक नया दौर शुरू हो गया।

४

नाज़िमुद्दीन सरकार का अन्त
जनता के विरुद्ध नौकरशाही की जीत

नये प्रधान मत्री सर नाज़िमुद्दीन अग्रेज के पुराने पिट्ठू थे । उनका सम्बन्ध बगाल के उस परिवार से था, जिसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के दौर मे अग्रेजो से मिलकर सुराजुद्दौला का शासन खत्म करने मे भाग लिया था । अखण्ड भारत मे अग्रेज से वफादारी के लिए उन्हे "सर" की उपाधि मिली थी । नये गवर्नर जनरल गुलाम मोहम्मद वर्षों अखण्ड भारत मे अग्रेज सरकार के अफसर की हैसियत से काम करते रहे । पाकिस्तान के निर्माण मे उसका कोई हाथ नही था ।

नाजिमुद्दीन यह समझ रहे थे कि राजनीति से कोई सीधा सम्बन्ध न होने के कारण गवर्नर जनरल का अपना कोई गुट नही । इसलिए वह उनके इशारे पर चलेंगे । परन्तु वह इस बात को भूल गये कि गुलाम मुहम्मद का सम्बध नौकरशाही से था और नौकरशाहो राजनीतिक प्रभुत्व खतम कर के शासन सत्ता पर स्वय अधिकार जमाना चाहती है । नौकरशाही पर अधिकतर पजाबी अफसर छाए हुये थे । सेना पर भी अधिकतर उन्ही का प्रभुत्व था । इसलिये व किसी भी ऐसे विधान को पसद नही कर सकते थे जिसमे आबादी के हिसाब से दूसरे प्रान्तो विशेषकर पूर्वी बगाल के लोगो को आगे बढने का अवसर मिल जाये । जब प्रधान मत्री ने बगाली होने के नाते बगालियो को सरकारी नौकरियो मे उचित भाग देने की कोशिश की और ऐसा विधान

तैयार करना शुरू कर दिया जिस से केन्द्रीय सरकार मे प जाबियो की जगह बगालियो को अधिक सख्या मे आने का अवसर मिलने की आशका पैदा हुई तो पजाबी नेताओ और अफसरो ने नाजिमुद्दीन के विरुद्ध साज-बाज शुरू कर दी। इस अभिप्राय के लिए गवर्नर जनरल और प जाब के मुख्य मत्री मिया मुमताज दौलताना ने गठजोड कर लिया। आधी दर्जन पार्टियो ने कट्टरप थी मौलवियो को एकत्रित किया। एक "वार कौसल की स्थापना की गई। इसने माग की कि अहमदी मुसलमानो को दूसरे मुसलमानो से अलग कर के "अल्प सख्यक सम्प्रदाय" घोषित किया जाये और विदेश मत्री सर जफरुल्ला समेत समस्त अहमदियो को सरकार से अलग कर दिया जाए। स्थान-स्थान इस माग के समर्थन के लिए सार्वजनिक सभाए आयोजित की गयी। मौलवियो ने फतवे दिए कि अहमदी इस्लाम के शत्रु है। इन्होने हमेशा मुसलमानो को धोखा दिया है। जमायते इस्लामी के अध्यक्ष मौलाना अबुलदला मौदूदी ने फतवा दिया कि इस्लाम मे मुर्तिदो (पतितो) के लिए पत्थर मार-मार कर मृत्यु के घाट उतार देने की सज़ा का आदेश दिया गया है। इसलिये उन से पाकिस्तान की इस्लामी स्टेट मे यही बर्ताव होना चाहिए।

जलसो मे सर जफरुल्ला को अग्रेज़ का एजेन्ट होने का दोषी ठहराया जाता और धमकिया दी जाती कि यदि उन्हे अलग न किया गया तो हिंसात्मक आन्दोलन शुरू कर दिया जायेगा।

"सघर्ष समिति" (वार कौसल) के प्रमुख नेता शेख हिस्सामुद्दीन दिल्ली मे आये। वह अखड भारत के दिनो मेरे भी मित्र थे। देश भक्त मुसलमानो की सस्था मजलिल एहरार के प्रधान थे और उन्होने देश के स्वतत्रता सग्राम मे काफी हिस्सा लिया था। परन्तु अन्तिम दिनों मे उन्होने और उनकी सस्था ने पाकिस्तान की माग का विरोध करना छोड दिया था। शेख साहिब श्री नेहरू से भी मिले। श्री नेहरू ने उनकी सहायता करने से इन्कार कर दिया। शेख साहिब इसके बाद मुझसे भी

मिले। उन्होने इस बात पर खेद प्रकट किया कि प्रधान मत्री पाकिस्तान के शासको के विरुद्ध उनकी सहायता करने से साफ इन्कार कर रहे है। शेख साहिब ने मुझसे कहा कि

"भारत हमारी सहायता नही करता। इस पर हमे मायूसी हुई है। परन्तु अब हम आप से यही सहायता चाहते है कि शासको से हमारे सघर्ष की हालत मे भारत हमारे शासको की सहायता न करे। हमने अपने आप को इतना सगठित कर लिया है कि कम से कम छ मास तक अपने शासको का मुकाबला कर सकते है।"

उन्होने बताया कि मिया मुमताज़ दौलताना सघर्ष समिति के साथ हैं और सेना के कई उच्च अधिकारी भी उन से सहयोग करेंगे। उन्हे विश्वास था कि वह सरकार का तख्ता उलट देने मे सफल हो जायेंगे।

मेरी अपनी धारणा यह थी कि यह सघर्ष पाकिस्तान की जनता के लिये हानिकारक सिद्ध होगा। यदि सघर्ष करने वालो को विजय प्राप्त हो गई तो पाकिस्तान मे कट्टरपथियों की एक ऐसी सरकार स्थापित हो जायेगी जो भारत के हितो के लिये और भी खतरनाक होगी। शेख साहिब का विचार इसके विपरीत था। उनका कहना था कि कोई भी नई सरकार प्रगतिशील होगी।

यह मार्च १९५३ के दिन थे। शेख़ साहिब मेरे कार्यालय मे बैठे हुए थे। एकाएक टेलीप्रिन्टर पर कराची की सूचना आई कि "सघर्ष समिति" के कई सदस्यो को गिरफ्तार कर लिया गया है और कराची और लाहौर मे फायरिंग हो रही है। हिंसात्मक जनसमूह दुकानो और मकानो को लूट रहे हें। शेख़ साहिब ने यह समाचार पढते ही कहा· "अख्तर भाई! सलाम! मै लाहौर जा रहा हू।" मैने उन्हे रोकने की कोशिश करते हुए कहा कि मौत के मुह मे जानबूझ कर जाना अकलमन्दी नही। परन्तु शेख़ साहिब नही माने और चले गये। तीसरे दिन सूचना मिली कि सीमा पार करते ही उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया है।

सरकार ने अपने विरोधियो का मुकाबला करने के लिये लाहौर, कस्सूर, स्यालकोट और पजाब के कई दूसरो शहरे को सेना के हवाले कर दिया। मिया मुमताज दौलताना को मुख्यमत्री के पद से अलग कर दिया गया। सेना और जनता मे जम कर लडाइया हुई। सरकार के विरोधियो ने सैकडो अहमदियो की हत्या की और उनकी जायदादो को लूट कर आग लगा दी। लाहौर मे काश्मीरी गेट की विशाल मस्जिद पर आन्दोलन चलाने वालो ने अधिकार कर के "स्वतन्त्र पाकिस्तान सरकार" की स्थापना की घोषणा कर दी। मौलाना अब्दुल सत्तार नियाजी इसके अध्यक्ष नियुक्त हुए। मस्जिद के एक गुम्बद पर एक रेडियो ट्रासमीटर लगाया गया। यहा से "स्वतन्त्रता सग्राम" के बुलेटिन प्रसारित किये जाते।

जनरल अयूब खा के आदेश से सेना ने जनरल आहजम खा की कमान मे विद्रोहियो पर वार किया। अकेले लाहौर मे दो दिनो मे ८ सौ से अधिक व्यक्ति मारे गये। विद्रोहियो की ओर से जो गुप्त सरकुलर जारी किये जाते उन मे पाकिस्तानी सेना के लिये "यजीद की सेना"□ के शब्दो का प्रयोग किया जाता और जनता से अपील की जाती कि वह "इस्लाम की रक्षा के लिये" इसका मुकाबला करे। इस आन्दोलन ने पश्चिमी पजाब मे सरकार की व्यवस्था बहुत हद तक भग कर दी थी। यहा तक कि विद्रोहियो के पोस्टर, गुप्त बुलेटिन आदि लाहौर और स्यालकोट से मुझे डाक से मिल रहे थे। पाकिस्तान के डाक विभाग के अधिकारी सैंसर का प्रतिबध होने पर भी इन्हे रोकने की कोशिश नही करते थे।

□यजीद ने इस्लाम के जन्मदाता हजरत मुहम्मद के दोहते अमाम हुसैन की हत्या की थी इसलिये मुसलमान यजीद का नाम घृणा से लेते हैं। किसी के लिये "यजीद" के शब्द का प्रयोग करना उसे गाली देना समझा जाता है।

विद्रोहियो को उनकी सहानुभूति भी प्राप्त थी।

सेना ने मस्जिद को घेर कर उसके किवाड तोड डाले और अन्दर घुस कर बन्दूको और मशीन-गनो से विद्रोहियो पर हमला कर दिया। मस्जिद के फर्श पर लहू की नदिया बह निकली। कहा जाता है कि इस जगह ५०० से अधिक व्यक्ति मारे गये। मौलाना अब्दुल सत्तार नियाजी बुर्का पहन कर भागे परन्तु रायेविड मे गिरफ्तार कर लिये गये। जेल मे उन्हे और दूसरे मौलवियो को बुरी तरह पीटा गया। कई एक को नगा कर-कर उन पर थूका गया।

यह आन्दोलन तो सख्ती से कुचल दिया गया परन्तु प्रधानमत्री की शामत आ गई। १७ अप्रैल को वह सरकारी दौरे पर जा रहे थे। ज्यू ही कराची के रेलवे स्टेशन पर पहुचे और गाडी के डिब्बे मे सवार होने लगे, गवर्नर जनरल का एक अधिकारी एक लिफाफा लेकर आया। प्रधान मत्री ने इसे पढा। उनके चेहरे पर हवाइया उडने लगी। पजाबी गवर्नर जनरल ने बगाली प्रधान मत्री को हटा दिया था।

प्रधान मत्री लौट आये। उन्होने ब्रिटेन की महारानी से टैलीफोन पर शिकायत करने की कोशिश की परन्तु राजभवन का टैलीफोन कनैक्शन कट चुका था।

जनता के विरुद्ध नौकर-शाही की और बगालियो के विरुद्ध पजाबियो की यह पहली जीत थी। इसने पाकिस्तान मे रहे-सहे प्रजातत्र के विनाश की बुनियाद रख दी। नेताओ के मुकाबले मे नौकर-शाही ने अपने आप को मज़बूत बना कर जनता के अधिकारो का खातमा करने के लिये मैदान तैयार कर लिया।

५

इस्कन्दर मिर्ज़ा की तानाशाही
जनता पर प्रहार

जिस दिन गवर्नर जनरल गुलाम मुहम्मद ने जनता के चुने हुए प्रधान मत्री सर नाज़िमुद्दीन को हटा कर मुहम्मद अली बोगरा को प्रधान मत्री बना दिया, पाकिस्तान मे प्रजातत्र का विनाश हो गया और नौकरशाही के रूप मे परले दर्जे की घिनावनी तानाशाही की नीव रख दी गई।

मुहम्मद अली बोगरा ससद सदस्य नही थे। वह अमरीका मे पाकिस्तान के राजदूत थे। ससद सदस्यो मे उनका कोई भी गुट्ट नही था। उन्हे प्रधान मत्री बना देने का अर्थ यह था कि वह पजाबी गवर्नर जनरल के हाथो मे खेले। गवर्नर जनरल पजाबी नेताओ से भी अधिक पजाबी नौकरशाही पर अपनी सत्ता को निर्भर रखते थे। उनकी छत्र-छाया मे नौकरशाही मत्रियो को अपनी उगलियो पर नचाने के लिये काम करने लगी।

नौकरशाही से भयभीत होकर मुस्लिम लीग दल ने सर नाजिमुद्दीन से सहानुभूति नही की और नामज़द किये हुए प्रधान मत्री को अपना नेता बनाना स्वीकार कर लिया। यही नही बल्कि नाजिमुद्दीन को पाकि-स्तान मुस्लिम लीग के प्रधान पद से भी त्यागपत्र देने के लिये मजबूर कर दिया। मुहम्मद अली बोगरा मुस्लिम लीग के प्रधान बन गये। इस प्रकार से गवर्नर जनरल के हाथो मे पाकिस्तान मुस्लिम लीग की नकेल

भी आ गई ।

नाजिमुद्दीन का झुकाव ब्रिटेन की ओर था तो गुलाम मुहम्मद का झुकाव अमरीका की ओर था । अक्तूबर १९५३ मे उन्होने प्रधान मंत्री बोगरा और सेनापति जनरल अयूब खा को अमरीका भेजा । इसी वर्ष दिसम्बर मे अमरीका के उप राष्ट्रपति श्री निक्सन पाकिस्तान आये । इसके परिणाम स्वरूप अमरीका और पाकिस्तान मे सैनिक सधिया होने लगी । मई १९५४ मे दोनो देशो मे परस्पर सैनिक सहायता की सधि हुई । सितम्बर मे पाकिस्तान दक्षिण पूर्वी एशिया सधि सगठन मे सम्मिलित हुआ । और फरवरी १९५५ मे बगदाद पैक्ट मे जो बाद मे केन्द्रीय सधि सगठन (सैन्टो) कहलाया, पाकिस्तान ने सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया । इन सधियो के परिणाम-स्वरूप पाकिस्तान पूर्ण रूप से अमरीका के प्रभाव मे आ गया । पाकिस्तान सरकार ने अमरीका को सैनिक अड्डे का निर्माण करने की अनुमति दे दी । गिलगित और सीमा प्रान्त मे अमरीका ने रूस और चीन पर जासूसी उडानो के लिये अपने अड्डे बनाये । अमरीका ने पाकिस्तान की सेना का पुनर्गठन करने की जिम्मेदारी ली । अमरीका के विशेषज्ञ इस मतलब के लिये पाकिस्तान मे आने लगे और पाकिस्तान सरकार ने यह शर्त स्वीकार कर ली कि पाकिस्तान मे साम्यवादी तत्वो को कुचल दिया जायेगा और अमरीका के शत्रुओ और विरोधियो के मुकाबले मे अपनी जन-शक्ति और दूसरे साधनो का अमरीका को इस्तेमाल करने की खुली छुट्टी देगा ।

इसमे सन्देह नही कि पाकिस्तान शासको ने अपनी तानाशाही की सुरक्षा के लिये और भारत से काश्मीर छीनने के लिये अमरीका से यह गठजोड किया था कि अमरीका काश्मीर के लिये उसकी सहायता करेगा । अमरीका ने इसके लिये भी पाकिस्तान को गुप्तरूप से वचन दिया । अमरीका ने भारत को अन्दर से कमजोर करने के लिये

पाकिस्तान के गुप्तचर विभाग के पुनर्संगठन की जिम्मेदारी सम्भाल ली ।०

बोगरा को प्रधान मत्री बना दिये जाने के विरुद्ध पूर्वी बगाल मे क्रोध की ज्वाला भडक उठी थी । विरोधी दलो ने चुनाव मे शासक दल का मुकाबला किया । मुकाबले मे मुस्लिम लीग की बुरी तरह हार हुई । पूर्वी बगाल के लीगी मुख्य मत्री श्री नुरुलउद्दीन भी हार गये । श्री फजलुलहक मुख्य मत्री बन गये । इससे गुलाम मुहम्मद और बोगरा के पाव तले से जमीन फिसल गई । श्री हक लीग के पुराने और ओजस्वी नेता थे । उन्होने ही लीग के लाहौर अधिवेशन मे देश के विभाजन की माग का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था । इस कारण से उन्हे शेरे बगाल कहा जाता था परन्तु जब मि० जिन्नाह ने बगाल सरकार के घरेलू मामलो मे हस्तक्षेप किया था तो उन्होने विद्रोह का झडा उठा लिया था । इसी कारण उन्हे मुस्लिम लीग से निकाल दिया गया था परन्तु बगालियो मे उनका बहुत प्रभाव था । श्री हक ने बगालियो से अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और जनता उनके झडे तले एकत्रित होने लगी ।

श्री हक की सरकार को खतम करने के लिये नौकरशाही ने षड्यन्त्र रचाया । पूर्वी बगाल मे किराये के मौलवी भेजे गये जिन्होने "इस्लाम खतरे मे" का बावेला मचाया । जगह-जगह पर कहा गया कि भारत पाकिस्तान पर अधिकार करने के लिये सैनिक तैयारिया कर रहा है । इसलिये मुस्लिम लीग का विरोध करने वाले वास्तव मे हिन्दुओ और भारत के एजेन्ट है । पूर्वी बगाल मे पश्चिमी पाकिस्तान के जिन बडे-बडे मिल मालिको ने अपनी मिले लगा ली थी और व्यापार पर अधिकार कर लिया था, उन्हे बगाली देशभक्तो की बढती हुई ताकत से परेशानी

० इसका विस्तारपूर्वक उल्लेख इसी पुस्तक मे आगे चलकर किया गया है ।

हो रही थी। पूर्वी बगाल मे मजदूर न्याय की माग कर रहे थे। इन मिल मालिको ने इन्हे भी भारत के एजेन्ट और पाकिस्तान और इस्लाम के शत्रु करार देना शुरू कर दिया। इन पूजीपतियो ने अपने किराये के मौलवियो द्वारा बिहार और पजाब से आये हुए मुसलमानो को भडका कर फसाद करा दिया। इससे ढाका मे बगाली और गैर बगाली मुसलमानो मे दगे होने लगे। सैकडो हिन्दू भी फसाद की लपेट मे आकर मारे गये। गवर्नर जनरल ने श्री हक को आदेश दिया कि वह बगालियो के विरुद्ध कार्यवाई करे। उनकी यूनियनो को क़ानून से भग कर दें और उनके नेताओ को गिरफ्तार कर ले। श्री हक इसके लिये तैयार नही थे। उन्हे कराची मे तलब किया गया। कलकत्ते के हवाई अड्डे पर आवेश मे आकर उन्होने नेताजी सुभाष बोस का ज़िक्र आने पर कहा कि पश्चिमी बगाल के दो भाग हो चुके है परन्तु दोनो भागो के बगाली मन से एक है। उनके इस बयान को पाकिस्तान से गद्दारी करार देकर गवर्नर जनरल ने उनका मत्रिमण्डल भग कर दिया और पूर्वी बगाल मे गवर्नर राज की घोषणा कर रक्षा विभाग के सैक्रेटरी मेजर जनरल इस्कन्दर मिर्जा को प्रान्त का गवर्नर नियुक्त कर दिया। मिर्जा ने चार्ज लेते ही धडाधड गिरफ्तारियो का सिलसिला शुरू कर दिया।

प्रधान मत्री मुहम्मद अली बोगरा ने पजाबियो की बढ़ती हुई ताकत से परेशान होकर सिंध और सीमा प्रान्त के मुख्यमत्रियो से गठ-जोड कर लिया था। उनमे यह तै हुआ था कि केन्द्र मे पठान, सिंधी और बगाली एक-दूसरे का साथ देगे। इसका मुकाबला करने के लिये गवर्नर जनरल ने पश्चिमी पाकिस्तान के अलग-अलग प्रान्तो को खतम करने और सब का एक प्रान्त बना देने की योजना तैय्यार की। सीमा प्रान्त और सिंध के नेता इसका विरोध कर रहे थे। गवर्नर जनरल ने उन्हे धमकी दी कि यदि उन्होने उनकी योजना का समर्थन न किया तो उनके मत्रिमडल भग करके उनके विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोपो मे कार्य-

वाही की जायेगी। प्रधान मत्री ने इसके उत्तर मे ससद से वह कानून मसूख करा लिया जिससे गवर्नर जनरल को मुख्यमत्रियो और दूसरे मत्रियो के विरुद्ध इस प्रकार का कदम उठाने का अधिकार मिला हुआ था। गवर्नर जनरल उस दिन एबटाबाद मे थे। उनकी अनुपस्थिति मे प्रधान मत्री ने गवर्नर जनरल से प्रान्तीय मत्रिमडलो और, केन्द्रीय मत्रियो को डिसमिस करने का अधिकार छीन लेने का बिल अकस्मात ससद मे पेश करके एक घन्टे के अन्दर-अन्दर स्वीकृत करा लिया।

अपनी तानाशाही को इस प्रकार मिटते देख कर श्री गुलाम मुहम्मद क्रोध मे आ गये। परन्तु उनके कराची लौटने से पहले ही प्रधान मत्री मुहम्मद अली बोगरा ऋण की सधि के लिये बातचीत करने के बहाने अमरीका चले गये।

गवर्नर जनरल को अधरग का हमला हुआ था। वह काफी देर से इलाज करा रहे थ। वह चल फिर नही सकते थे। ठीक तरह बोल भी नही सकते थे परन्तु नौकरशाही को उनकी आवश्यकता थी। इसलिये वह अपनी गद्दी पर डटे हुए थे। कराची लौटते ही उन्होने प्रधान मत्री को तार द्वारा आदेश दिया कि वह तुरन्त लौट आये। प्रधान मत्री ने जब यह आदेश पढा तो उनके हाथ कापने लगे। उन्हे इस बात का भय था कि कराची पहुचते ही उन्हे गिरफ्तार कर लिया जायेगा। परन्तु जनरल अयूब खान उन्हे साहस दिलाकर अपने साथ ले आये। कराची पहुचते ही प्रधान मत्री गवर्नर जनरल से मिलने की बजाय अपनी कोठी पर चले गये। गवर्नर जनरल की कोठी पर जनरल अयूब खा और मेजर जनरल इस्कन्दर मिर्जा गये। गवर्नर जनरल क्रोध से काप रहे थे और न समझ मे आने वाली आवाज मे प्रधान मत्री को गन्दी गालिया दे रहे थे। उन्होने अयूब खा को लिख कर बताया कि मै मत्रिमडल भग करके सैनिक शासन स्थापित करना चाहता हू। अयूब खा को इस समय अपने आप पर भरोसा नही था। उन्हे इस बात की आशका थी कि सैनिक

शासन स्थापित होते ही देश भर मे विद्रोह की आग भडक उठेगी । उन्होने प्रधान मत्री से गवर्नर जनरल का समझौता करा दिया। प्रधान मत्री झुक गये और फैसला हुआ कि केन्द्रीय विधान सभा (ससद) को भग कर दिया जाये। ऐसा ही हुआ। सभा के बगाली प्रधान मौलवी तमीजुद्दीन ने इसके विरुद्ध हाईकोर्ट मे अपील की। फैसला गवर्नर जनरल के विरुद्ध हुआ परन्तु मुख्य न्यायालय ने गवर्नर जनरल के इस अधिकार को ठीक विधानानुसार करार दिया कि वह सभा को भग कर सकते हैं। अदालत ने अपने फैसले मे लिखा कि सभा ने विधान तैय्यार करने की जिम्मेदारी पूरी नही की। इसलिये गवर्नर जनरल ने यह कदम उठाया है।

यद्यपि गवर्नर जनरल ने प्रधान मत्री को उसके पद से नही हटाया परन्तु उसके झुक जाने से उसकी पोजीशन जनता की निगाहो मे गिर गई। यही नही बल्कि मत्रिमण्डल मे नौकरशाही की ताकत बढाने के लिये मेजर जनरल इस्कन्दर मिर्जा और सेनापति जनरल अयूब खा को भी नियुक्त कर दिया गया। सीमा प्रान्त के मुख्य मत्री अब्दुल कयूम को त्याग पत्र देने के लिये मजबूर कर के उसी प्रान्त के इसपैक्टर जनरल सरदार अब्दुल रशीद को मुख्य मत्री नियुक्त कर दिया गया। कयूम को केन्द्रीय मत्रिमण्डल मे नियुक्त कर दिया गया। सिंध के मुख्य मत्री पीरजादा अब्दुल सत्तार ने पश्चिमी पाकिस्तान के अलग-अलग प्रान्तो को खतम करने की योजना के विरुद्ध प्रान्तीय विधान सभा से एक प्रस्ताव स्वीकृत करा लिया था। गवर्नर जनरल ने पीरजादा का मत्री मडल भग कर दिया और मुहम्मद अयूब खुरों को मुख्य मत्री नियुक्त कर दिया। नये मुख्य मत्री ने विधान सभा के सदस्यो को डरा-धमका कर अपना पहला प्रस्ताव रद्द कर दिया और पश्चिम के सभी प्रान्तों को भग कर के "एक यूनिट" की स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार करा लिया। पूर्वी बंगाल मे गवर्नर का शासन था और पजाब सरकार गवर्नर जनरल की

घर की बान्दी थी। इस तरह गवर्नर जनरल ने अपने सभी विरोधियो को कुचल दिया था। अपने षड्यत्र को कार्यरूप देने के लिये उन्होने एक अध्यादेश द्वारा १९३५ के कानून मे सशोधन कर पश्चिम मे "एक यूनिट" की स्थापना का अधिकार प्राप्त कर लिया और घोषणा की कि वह अब स्वय समस्त देश के लिये विधान तैयार करेगे। इसका अर्थ यह था कि यद्यपि नाम का मत्रिमण्डल मौजूद था परन्तु सरकार चलाने और ससद के सभी अधिकार गवर्नर जनरल ने स्वय सम्भाल कर अपनी तानाशाही की स्थापना कर ली थी। निसन्देह इस षड्यत्र मे मेजर जनरल इस्कन्दर मिर्ज़ा और सेनापति जनरल अयूब खा भी सम्मिलित थे। यह तिगडम परस्पर गठजोड कर के उसी भाति सैनिक तानाशाही स्थापित करने और जनता को हमेशा के लिए प्रजातत्र के अधिकारो से वचित करने की साजबाज़ कर रहा था जिस तरह कुछ वर्ष बाद मेजर जनरल इस्कन्दर मिर्जा और जनरल अयूब खा ने की थी और जिस प्रकार जनरल याहिया खा ने की।

इस्कन्दर मिर्जा ने एक वर्ष पहले ढाका मे पूर्वी बगाल का गवर्नर नियुक्त होने पर कहा था कि "पश्चिम से लाया हुआ प्रजातत्र पाकिस्तान के लोगो के स्वभाव के अनुकूल नही है क्योकि अनपढ लोग और राजनैतिक नेता इससे गडबड कर देते है।"

गवर्नर जनरल अब एक अध्यादेश द्वारा देश पर एक ऐसा विधान ठोस देना चाहते थे जिसका अभिप्राय जनता को अपनी इच्छा से अपने भविष्य का निर्णय करने के अधिकार से वचित कर देना था। २७ मार्च १९५५ को जब उन्होने यह अधिकार स्वय सम्भाल लेने का अध्यादेश जारी किया तो प्रधान मत्री मेजर जनरल इस्कन्दर मिर्जा, जनरल अयूब खा अथवा कयूम ने इसका विरोध नही किया। यह बात स्पष्ट थी कि ये सभी पाकिस्तानी जनता के विरुद्ध गवर्नर जनरल से मिले हुए थे।

विरोधियो ने मुख्य न्यायालय मे इस अध्यादेश को चैलेज किया। अदालत ने फैसला दिया कि गवर्नर जनरल विधान सभा के किसी बिल की स्वीकृति तो रोक सकता है परन्तु वह स्वय विधान सभा नही। विधान सभा के भग किये जाने पर गवर्नर जनरल वह अधिकार स्वय नही ले सकता जो इससे पहले प्राप्त नही थे।

केस की कार्यवाई के दौरान सरकारी वकील ने भाप लिया था कि गवर्नर जनरल की दाल गलने वाली नही। इसलिये उसने न्यायाधीशो को विश्वास दिलाया कि गवर्नर जनरल विधान सभा के चुनाव करायेंगे। अदालत ने अपने फैसले मे यह बात भी लिख दी। अदालत ने गवर्नर जनरल को यह चेतावनी भी दी कि उन्हे विधान सभा के सदस्यो को स्वय नियुक्त करने का अधिकार नही।

अदालत के इस फैसले से नौकरशाही को बडी परेशानी हुई। जनता पर तानाशाही ठोस देने के लिये उनका षड्यन्त्र विफल हो गया था परन्तु उन्होने अपनी साजबाज ख़तम नही की। जनता को उसके अधिकारो से वचित करने के लिये वे दूसरे तरीके ढूढने लगे।

गवर्नर जनरल ने विधान तैय्यार करने के लिये जनता को अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार नही दिया। प्रान्तीय विधान सभाओ के सदस्यो को देश का विधान तैय्यार करने वाली केन्द्रीय सभा के सदस्य चुनने के लिये कहा गया। बिलोचिस्तान और कबाइली क्षेत्रो मे सरकारी अलाऊस लेने वाले सरदारो को स्वय "जनता के प्रतिनिधि" आपस मे से ही चुन लेने का अधिकार दे दिया गया। मुहम्मद अली बोगरा को "त्यागपत्र" देने के लिये मजबूर करके पुन अमरीका मे राजदूत बना कर भेज दिया गया। उनकी जगह आई० सी० एस० के भूतपूर्व अफसर चौधुरी मुहम्मद अली को प्रधान मत्री बना दिया गया। वही पाकिस्तान मुस्लिम लीग के प्रधान भी बन गये। सितम्बर १९५५ को विधान ने गवर्नर जनरल गुलाम मुहम्मद को अधिकार दे दिया कि वह पश्चिमी

पाकिस्तान मे सभी अलग-अलग प्रान्तो को भग करके "एक यूनिट" की स्थापना कर दे।

इस्कन्दर मिर्जा अपनी तानाशाही स्थापित करने के लिये साज-बाज कर रहे थे। उन्होने गवर्नर जनरल को विवश किया कि वह "बीमारी की छुट्टी" पर चले जाये। इस प्रकार इस्कन्दर मिर्जा ने गवर्नर जनरल का पद स्वय सम्भाल लिया। इसके बाद उन्होने अब्दुल कयूम को मन्त्रिमडल से अलग कर दिया क्योकि उन्हे मालूम हुआ था कि कयूम खा सेना के कुछ अधिकारियो से मिल कर सरकार का तख्ता उलट देने के लिये तैय्यारिया कर रहे थे।

इस्कन्दर मिर्जा ने विधान सभा से यह अधिकार प्राप्त कर लिया कि वह प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्ति के लिये स्वय फैसला कर सकते है और प्रधान मत्री का यह कर्तव्य होगा कि वह अपने शासन प्रबध और तैय्यार किये जाने वाले विधेयको के सम्बध मे गवर्नर जनरल को सूचित करते रहे। बाद मे इस्कन्दर मिर्जा ने इस अधिकार का भरपूर प्रयोग किया।

इस्कन्दर मिर्जा ने मुस्लिम लीग के नेताओ से साजबाज कर के उनके समर्थन से अपने आप को पाकिस्तान के राष्ट्रपति के पद के लिये सफल बना लिया। इसके बाद उन्होने मुस्लिम लीग को ही खतम करने और इसी प्रकार सभी दलो और उनके नेताओ को बदनाम करने के लिये एक खतरनाक योजना बनाई।

इस्कन्दर मिर्जा अपने दौर मे सबसे चालाक और खतरनाक शासक थे। उनका सम्बध बगाल के मीर जाफर के परिवार से था जिसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को बगाल पर अधिकार करने के लिये सहायता दी थी। इस्कन्दर मिर्जा बगाली होने पर भी अपने आप को बगाली कहना अपनी बेइज्जती समझते थे। इस्कन्दर मिर्जा सीमा प्रान्त मे भारत की ब्रिटिश सरकार के बदनाम पोलिटीकल डिपार्टमेंट के एक सीनियर

अधिकारी की हैसियत से काम करते थे और वह डाक्टर खा साहिब के काग्रेस मत्रिमण्डल के दिनो पिशावर के जिलाधीश भी थे । वह इतने चालाक थे कि अग्रेज के विशेष अधिकारी होते हुए भी उन्होने डाक्टर साहिब को यह विश्वास दिला रखा था कि वह उनके मित्र और हितैषी है। काग्रेस आन्दोलन के दिनो एक बार खुदाई खिद-मतगारो ने एक जलूस निकाला। मिर्जा ने किसी को भी गिरफतार नही किया बल्कि रास्ते मे उनके एक एजेन्ट ने जलूस का स्वागत करते हुए सभी कार्यकर्ताओ को जमालगोटा मिली चाय पिला दी। इसका परि-णाम यह हुआ कि कुछ ही देर बाद जलूस मे नारे लगाने वालो को जुलाब लग गये और जलूस तित्तर-बित्तर हो गया।

इस्कन्दर मिर्जा ने पहले तो गुलाम मुहम्मद से सीमा प्रान्त मे कयूम का मत्रिमण्डल भग कराया और फिर इसी कयूम को केन्द्रीय सरकार से निकाल कर डा० खा साहिब से गठजोड करने की तैय्यारिया शुरू कर दी। डाक्टर खा साहिब को फास कर वह एक ओर पश्चिमी पाकि-स्तान मे मुस्लिम लीग को खतम करना चाहते थे और दूसरी ओर डा० साहिब को बदनाम करके अपनी तानाशाही के लिये मैदान तैय्यार करना चाहते थे। इसी लक्ष्य के लिये उन्होने एक-एक करके पूर्वी बगाल के नेताओ मे फूट डाल कर सभी को बदनाम करने का षड्यत्र रचा।

जनरल अयूब खा के हाथ इस समय मजबूत नही थे। उनके रिटायर होने के दिन नजदीक आ रहे थे। मेजर जनरल इस्कन्दर मिर्जा राष्ट्र-पति की हैसियत से सेना के सुप्रीम कमाण्डर भी थे और वह किसी समय भी जनरल अयूब खा को चलता कर सकते थे। इसके अतिरिक्त पाकिस्तानी सेना मे इस्कन्दर मिर्जा का अपना एक मजबूत गुट्ट भी था।

६

डाक्टर खां साहिब की हत्या

इस्कन्दर मिर्ज़ा ने अपने आप को राष्ट्रपति के चुनाव मे सफल बनाने के लिये मुस्लिम लीग का सहारा लिया था। पश्चिमी पाकिस्तान की विधान सभा मे मुस्लिम लीग दल के नेता सरदार बहादुर खा जनरल अयूब खा के छोटे भाई थे। राष्ट्रपति बनने के बाद इस्कन्दर मिर्जा ने लीगी नेताओ को कहा कि वह डाक्टर खा साहिब को पश्चिमी पाकिस्तान का मुख्य मत्री बनाये। लीग के नेताओ ने इन्कार किया तो इस्कन्दर मिर्जा ने ऐसी जोड-तोड की कि लीग के कई सदस्य विद्रोह करके अलग हो गये और उन्होने रिपब्लिकन पार्टी की स्थापना करके डाक्टर साहिब को अपना नेता चुन लिया। इस पार्टी का मैनिफैस्टो प्रान्त के गवर्नर मिया मुश्ताक अहमद गुर्मानी ने स्वय तैयार किया था। मिया साहिब वही सज्जन है जिनका नाम पाकिस्तान के पहले प्रधान मत्री श्री लियाकत अली की हत्या के षड्यत्र के सम्बन्ध मे लिया जा रहा था।

मजे की बात यह है कि पाकिस्तान की स्थापना मे पहले रियासत बहावलपुर के प्रधान मत्री की हैसियत से मिया साहिब ने बहावलपुर को भारत मे मिलाने के लिये दौड-धूप भी की थी परन्तु जब सरदार पटेल ने इनकार कर दिया तो उन्होने बहावलपुर को स्वतत्र देश बनाने का प्रयत्न भी किया था।

डाक्टर खा साहिब को पश्चिमी पाकिस्तान का मुख्य मत्री बना कर

इस्कन्दर मिर्जा ने पठानिस्तान आन्दोलन को कुचल देने की योजना बनाई। डाक्टर साहिब भोलेपन के कारण इस बात मे आ गये। वह यह समझ रहे थे कि वह एक तो मुस्लिम लीग को कुचल देने मे सफल हो जायेगे और दूसरे उनके मुख्य मत्री होने के कारण पाकिस्तान मे पठानो को न्याय मिल सकेगा। डाक्टर साहिब जब दिल्ली मे आये तो मैने उन से भेट की। मैने उन्हे कहा कि आप ने इस्कन्दर मिर्जा से मिल कर गलती की है। एक न एक दिन आप इसके लिये पछतायेगे। उन्होने मुस्करा कर कहा · "इस्कन्दर मिर्जा को हालात ने बदल दिया है। अब उसे अग्रेज की चाले चलने की आवश्यकता नही। वह मुस्लिम लीग को खतम कर देगा और इससे पाकिस्तान और भारत मे मित्रता के लिये मैदान तैयार करने के लिये सहायता मिलेगी।"

डाक्टर साहिब भोले-भाले व्यक्ति थे। वह इस्कन्दर मिर्जा के बिछाये जाल मे फस गये। उन्होने कहना शुरू कर दिया कि अब पठानो का अलग प्रान्त बनाने की माग करने की कोई आवश्यकता नही रही क्यो कि पठानो को अपने पाव पर खडा होने का अवसर मिल गया है।

डाक्टर खा साहिब की नीति को उनके अपने भाई खा अब्दुल गफ्फार खा ने भी पसन्द नही किया। उन्होने एक बयान मे कहा कि वह पठानो का अलग प्रान्त बनाने और पश्तो बोलने वाले सभी इलाको को मिला देने की माग का कभी त्याग नही करेगे। इस्कन्दर मिर्जा को बादशाह खा पाकिस्तान की स्थापना से पहले भी गद्दार कहा करते थे और अब भी उनके सम्बन्ध मे उनकी यही धारणा थी। इस्कन्दर मिर्जा ने बादशाह खा की गतिविधियो पर आपत्ति की और डाक्टर खा साहिब ने इस्कन्दर मिर्जा के इशारे पर अपने भाई की गिरफ्तारी का आदेश दे दिया। उनके बाद पठान नेताओ और कार्यकर्ताओ की गिरफ्तारियो का सिलसिला शुरू हो गया। इस से पठानो मे असतोष और क्रोध की आग भडक उठी।

डाक्टर खा साहिब के मुख्य मत्री बन जाने से पजाब मे मुस्लिम लीग बिगड गई थी। उसने डाक्टर खान साहिब के मत्रिमडल को भग करने के लिये नैशनल अवामी पार्टी से गठ-जोड कर के मत्रिमण्डल पर अविश्वास का प्रस्ताव पेश करने का फैसला कर लिया। डाक्टर साहिब की सरकारी पार्टी के कई सदस्य मुस्लिम लीग से मिल गये। अविश्वास का प्रस्ताव पास हो गया। इस्कन्दर मिर्जा मुस्लिम लीग का मत्रिमण्डल बनाने की स्वीकृति देने के लिये तैयार नही थे। उन्होने मत्रिमण्डल भग करके गवर्नर मुश्ताक अहमद गुर्मानी को प्रान्त की सरकार का कर्त्ता-धर्त्ता बना दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि दो मास बाद फिर मिर्जा ने लीग के कई सदस्य खरीद लिये और डाक्टर खा साहिब की पार्टी को फिर मत्रिमण्डल बनाने की आज्ञा दे दी गई परन्तु इस बार डाक्टर साहिब नही बल्कि सीमा प्रान्त के भूतपूर्व मुख्य मत्री और इस्पैक्टर जनरल पुलिस सरदार अब्दुल रशीद को पार्टी का नेता और प्रान्त का मुख्यमत्री बना दिया गया। मजे की बात यह कि सरकारी पार्टी ने नेशनल अवामी पार्टी से गठ-जोड कर लिया और एक यूनिट को भग करने और फिर से पुराने प्रान्त बनाने की माग कर दी। हालाकि इसी दल ने इस से पहले पश्चिम के सभी प्रान्तो को खतम कर के एक यूनिट बनाने के लिये आन्दोलन किया था।

इस्कन्दर मिर्जा सभी नेताओ को बदनाम करके अपनी तानाशाही स्थापित करना चाहते थे। मुस्लिम लीग के नेता बदनाम हो चुके थे। डाक्टर खा साहिब पर उनके विरोधी अवसरवादी होने का आरोप लगा रहे थे। सरदार रशीद ने अपने विरोधियो की पकड-धकड शुरू कर दी। इस से वह भी बदनाम हो गये। इस्कन्दर मिर्जा ने उन्हे त्याग-पत्र देने के लिये मजबूर किया और उनके स्थान पर नवाब मुजफ्फर-अली किजलबाश को मुख्य मत्री नियुक्त कर दिया। नवाब साहिब विभाजन से पहले पजाब मे यूनियनिस्ट पार्टी के एक नेता थे और शैय्या

मुसलमानो मे उन्हे इज्जत से देखा जाता था।

इस्कन्दर मिर्जा के विरोधी उनके विरुद्ध आन्दोलन कर रहे थे। जगह-जगह उनके विरुद्ध सार्वजनिक सभायें हो रही थी। मुस्लिम लीग, नेशनल अवामी पार्टी और खाकसार उन्हे तरह-तरह की धमकिया दे रहे थे।

एबटाबाद मे एक सरकारी जलसे मे इस्कन्दर मिर्जा को स्वागत पत्र प्रस्तुत किया गया उसमे उनकी प्रशसा के पुल बाधते हुए कहा गया था कि राष्ट्रपति को पाकिस्तान का बादशाह घोषित किया जाना चाहिये। जब विरोधी दलो ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई और प्रजातत्र की स्थापना के लिये सार्वजनिक चुनाव कराने की माग की तो डाक्टर खा साहिब ने एक बयान मे धमकी दी कि यदि विरोधी दलो ने अपना रवैया न बदला तो सभी दलो को तोड कर देश का शासन करने के लिये एक "इन्कलाबी कौसल" स्थापित कर दी जायेगी। श्री हुस्सैन शहीद सोहरावर्दी के सर्मथको ने इसके उत्तर मे धमकी दी कि यदि ऐसा कोई कदम उठाया गया तो प्रजातत्र के समर्थक हिंसात्मक तरीको से इस्कन्दर मिर्जा की सरकार का तख्ता उलट देगे।

अन्तिम दिनो मे इस्कन्दर मिर्जा और डाक्टर खा साहिब मे झगडा हो गया था। डाक्टर खा साहिब को मिर्जा के इरादो पर सन्देह होने लग गया था। डाक्टर साहिब एक नये दल की स्थापना के लिये अपने साथियो से विचार-विमर्श कर रहे थे। झगडे का एक और कारण यह भी था कि इस्कन्दर मिर्जा ने गुप्त रूप से मुस्लिम लीग के नेताओ से बात-चीत शुरू कर दी थी। डाक्टर साहिब लीगियो को मुह लगाने के लिये भी तैयार नही थे। मतभेद यहा तक बढा कि इस्कन्दर मिर्जा ने अपनी कोठी मे डाक्टर साहिब के प्रवेश पर भी एक तरह से प्रतिबध लगा दिया। डाक्टर साहिब बिगड गये और उन्होने धमकी दी कि वह इस्कन्दर मिर्ज़ा का मुकाबला करेगे।

मई १९५७ मे डाक्टर खा साहिब को नौकरी से निकाले हुए एक पटवारी अताउल्ला ने छुरा मार कर मृत्यु के घाट उतार दिया। पुलिस मे उसने बयान दिया कि खाकसार नेता अलामा मशरिकी ने उसे डाक्टर साहिब की हत्या के लिये कहा था। हत्यारे पर मुकदमा चला और अदालत के आदेश पर उसे फासी दे दी गई। डाक्टर खा साहिब के निकट-सम्बधियो का कहना है कि डाक्टर साहिब को वास्तव मे इस्कन्दर मिर्जा ने कतल कराया था। अलामा मशरिकी का नाम इसलिये लिया गया था कि उन्हे गिरफ्तार कर के खाकसारो के सगठन को कुचल दिया जाये। हत्यारे को गुप्त रूप से विश्वास दिलाया गया था कि यदि वह खाकसार नेता का नाम ले दे तो अदालत से फासी की सजा का आदेश मिलने पर भी उसे छुडा लिया जायेगा। इस सम्बध मे नुकते की बात यह है कि अलामा मशरिकी पर कोई मुकदमा नही चलाया गया बल्कि कुछ देर बाद उन्हे जेल से रिहा कर दिया गया। इस हालात मे कौन कह सकता है कि पाकिस्तान का राष्ट्रपति जिसने अग्रेजो के दिनो मे कई व्यक्तियो की हत्या कराई थी डाक्टर खा साहिब का असली हत्यारा नही था ?

७

इस्कन्दर मिर्ज़ा के अन्तिम हथकण्डे

इस्कन्दर मिर्जा अपने आपको सभी नेताओ से चालाक समझते थे।

डाक्टर खा साहिब का खून कराने के बाद भी उन्हे अपनी तानाशाही खतरे मे दिखाई दे रही थी। पाकिस्तान के दोनो भागो मे अभी उनके कई विरोधी जीवित थे।

इस्कन्दर मिर्ज़ा ने अपने हाथ मजबूत करने के लिए एक ओर पूर्वी बगाल के भूतपूर्व मुख्य मत्री श्री हक को अपने साथ मिला कर उन्हे केन्द्रीय मत्रिमडल मे नियुक्त कर दिया तो दूसरी ओर नेशनल आवामी पार्टी के नेता श्री हुस्सैन शहीद को सोहरावर्दी का समर्थन प्राप्त करके उन्हे प्रधान मत्री नियुक्त कर दिया। इस सम्बन्ध मे स्मरण रहे कि कुछ वर्ष पहले श्री हक को मुख्य मत्री के पद से हटा दिया गया था और ढाका रेडियो पर भाषण देते हुए पूर्वी बगाल के गवर्नर की हैसियत से इस्कन्दर मिर्जा ने यह आरोप लगाया था कि श्री हक पाकिस्तान की एकता के शत्रु है और अपने देश से गद्दारी कर रहे है।

श्री सोहरावर्दी को भी उन्होने पाकिस्तान का शत्रु करार देते हुए धमकी दी थी कि ऐसे लोगो को देश से धोखा करने पर गोली मार देनी चाहिये परन्तु अपनी तानाशाही की रक्षा के लिये इस्कन्दर मिर्जा ने दोनो से समझौता कर लिया था।

मजे की एक और बात यह थी कि श्री सोहरावर्दी ने रक्षा

विभाग भी स्वय सभाल लिया था और जनरल अयूब ने उसके अधीन काम करना शुरू कर दिया था हालाकि अयूब खा नये प्रधान मत्री को अपना शत्रु समझते थे। सोहरावर्दी की नेशनल अवामी पार्टी अमरीका से पाकिस्तान की सैनिक सधि का विरोध कर रही थी। वह चुनाव में हिन्दुओ और मुसलमानो के अलग-अलग हलके बनाने का भी विरोध कर रहे थे परन्तु प्रधान मत्री बनने के लिए उन्होने इस्कन्दर मिर्ज़ा की नीतियो को अपना लिया। इस पर मौलाना भाषानी का ग्रुप उनसे अलग हो गया। श्री सोहरावर्दी ने इसकी परवाह न की। जब १९५६ मे मिस्र पर इजराइल, ब्रिटेन और फ्रान्स ने आक्रमण किया तो प्रधान मत्री ने इसका समर्थन किया। इससे विरोधी नेताओ को उनके विरुद्ध प्रचार करने का अवसर मिल गया।

श्री सोहरावर्दी ने एक बयान मे कहा कि उनकी सरकार चीन से पाकिस्तान की मित्रता के लिये कोशिश करेगी। चीन के नेताओ से बात-चीत के लिये वह पेकिंग गये। एक और बयान मे उन्होने कहा कि दूसरे देशो से सैनिक सहायता लेने से उनकी सरकार का मतलब यह है कि अपने आप को मजबूत बना कर काश्मीर के लिये भारत पर दवाब डाला जाये। उनके समर्थको का कहना है कि श्री सोहरावर्दी वास्तव मे धीरे-धीरे पाकिस्तान को सैनिक गुट से निकाल लेना चाहते थे।

श्री सोहरावर्दी और इस्कन्दर मिर्जा मे शीघ्र ही झगडा हो गया। इस्कन्दर मिर्जा को मालूम हुआ कि प्रधान मत्री सार्वजनिक चुनाव कराने पर तुले हुए है और वह राष्ट्रपति के पद के चुनाव मे उन्हे पराजित करने के लिये मुस्लिम लीग से गुप्त रूप से सौदेबाजी कर रहे है। इस पर मिर्ज़ा ने प्रधान मत्री को हटा देने का फैसला किया। रिपब्लिकन पार्टी ने प्रधान मत्री का विरोध करने की घोषणा कर दी। राष्ट्रपति ने प्रधान मत्री को त्याग पत्र दे देने के लिये कहा। प्रधान मत्री ने कहा कि उन्हे ससद मे बहुसख्या का समर्थन प्राप्त है। इसलिये ससद का अधिवेशन

बुलाया जाये परन्तु इस्कन्दर मिर्जा सोहरावर्दी को हटा देने का फैसला कर चुके थे। उन्होने धमकी दी कि यदि प्रधान मत्री ने त्याग पत्र न दिया तो उन्हे डिसमिस कर दिया जायेगा। सोहरावर्दी को झुकना पडा। त्यागपत्र दे कर वह अलग हो गये। राष्ट्रपति के समर्थको ने उन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाये और माग की कि एक जाच-आयोग नियुक्त किया जाये।

श्री सोहरावर्दी ने ११ अक्तूबर १९५७ को त्याग-पत्र दिया था। राष्ट्रपति ने इसी दिन पाकिस्तान मुस्लिम लीग के प्रधान श्री चुन्द्रीगर को प्रधान मत्री के पद के लिये नियुक्त किया परन्तु यह मत्रिमण्डल भी अधिक दिन नही चल सका। नये प्रधान मत्री को भी इसी प्रकार त्याग-पत्र देना पडा और दिसम्बर १९५७ मे राष्ट्रपति ने सर फीरोज खान को प्रधान मत्री वना दिया।

अग्रेजो से नये प्रधान मत्री के पुराने सम्बन्ध सभी को भली-भाति मालूम थे। सर फिरोज खान पजाब मे विभाजन से कई वर्ष पहले शिक्षा-विभाग के मत्री होते थे। इसके बाद उन्हे वाइसराय की कौसल मे नियुक्त किया गया। कैबिनट मिशन के आगमन पर जब अग्रेज सरकार भारतीय नेताओ से समझौते की बातचीत कर रही थी तो सर फिरोज खान नून ने वाइसराय और ब्रिटेन के प्रधान मत्री को एक लम्बे पत्र मे लिखा था कि मुसलमान युद्ध मे अग्रेजो की सहायता कर रहे है इसलिये यदि काग्रेस को देश की सत्ता सौप दी गई तो मुसलमान नाराज हो जायेगे।

सर फीरोज खान नून युद्ध समाप्त होने पर मुस्लिम लीग मे सम्मिलित हो गये थे। उनकी पत्नी एक अग्रेज महिला थी। उन्हे पाकिस्तान की स्थापना के बाद दो बार गवर्नर बनने का अवसर मिला था। जहा तक जनता का सम्बन्ध है उन्हे सभी लोग टोडी समझते थे।

इस्कन्दर मिर्जा ने अपने हाथ मजबूत करने के लिये सिध के भूत-

पूर्व मुख्य मत्री श्री अयूब खुर्रो को रक्षा-विभाग का मत्री बनाया। अयूब एक बहुत बडे जमीदार थे। देश के विभाजन से पहले उन्होने सिध के देश-भक्त मुख्य मत्री श्री मौला बक्स की हत्या करायी थी। सरकार की गुप्त रिपोर्टो के अनुसार किसी भी विरोधी की हत्या करा देना उनके बाये हाथ का खेल था। एक बार मि० जिन्नाह ने और दूसरी बार लियाकत अली ने उनका मत्रि-मण्डल भग किया था। इस पर भी इस्कन्दर मिर्ज़ा ने उन्हे रक्षा-विभाग का मत्री नियुक्त कर दिया तो इस का कारण यह था कि वह अपने हाथ मजबूत करने के लिये इस प्रकार के व्यक्तियो को सरकार मे लाना चाहते थे।

इस्कन्दर मिर्जा ने मत्रि-मण्डल मे जनरल अयूब को जूनियर स्थान देकर काबू कर लिया। जनरल अयूब खा ने यह अपमान इसलिये सहन कर लिया कि इस्कन्दर मिर्जा ने उन्हे नौकरी मे दो वर्ष की वृद्धि कर के ख़रीद लिया था। शायद जनरल अयूब खा स्वय तानाशाह बनने के लिये उचित अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

देश की स्थिति तेजी से बिगड रही थी। कल्लात के नवाब ने पाकिस्तान से अलग होने की घोषणा कर दी। नवाब साहिब को इस्कन्दर मिर्जा ने मत्रि-मण्डल से अलग कर दिया था। इससे बिगड कर उन्होने कहा कि पाकिस्तान से सम्बध स्थापित करते समय मुझे वचन दिया गया था कि मेरी रियासत को अलग रहने दिया जायेगा परन्तु पाकिस्तान सरकार ने एकाएक कल्लात का "एक यूनिट" मे विलय करके उसका अस्तित्व खतम करके सधि का उल्लघन किया है।

यह विद्रोह अप्रैल १९५८ मे हुआ। विद्रोहियो ने कई पाकिस्तानी सिपाहियो की हत्या कर दी। अक्तूबर मे सूचना मिली कि "स्वतत्र कल्लात" के सब्ज झण्डे नवाब के महल और दूसरे स्थानो पर लहरा रहे है। सरकारी बयान के अनुससार राजकुमार करीम खा और राजकुमार इब्राहिम खा ने पाकिस्तान के विरुद्ध अफगानिस्तान से सैनिक-सहायता

की प्रार्थना की थी। एक पोस्टर मे जिन्नाह् और लियाकत अली के लिये "काफर" के शब्द का प्रयोग किया गया। नवाब ने इस्कन्दर मिर्जा से मिलने से इन्कार कर दिया। इस पर इस्कन्दर मिर्जा ने सेना को हमले का आदेश दिया। सेना ने कल्लात पर पुन अधिकार कर लिया और नवाब को गिरफ्तार कर लिया। नवाब के पुराने समर्थक बिलोची गाधी खा अब्दुल स्मद खा और सैकडो दूसरे व्यक्तियो को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

कई वर्ष बाद इस्कन्दर मिर्जा की कडी आलोचना करते हुए जनरल अयूब खा ने अपनी पुस्तक Friends Not Master मे लिखा कि यह विद्रोह वास्तव मे इस्कन्दर मिर्जा का अपना नाटक था। शायद वह यह कह कर कि देश की एकता खतरे मे है अपनी तानाशाही स्थापित करने के लिये मैदान तैय्यार कर रहे थे।

इस्कन्दर मिर्जा पूर्वी बगाल मे भी आये दिन मन्त्रिमण्डल स्थापना करके उन्हे भग कर रहे थे। अपने हाथ मजबूत करने के लिये वह विभिन्न दलो को आपस मे लडा रहे थे। झगडे इतने बढे कि प्रान्तीय विधान सभा मे विरोधी सदस्यो ने हमला करके उपाध्यक्ष की हत्या कर दी। इस पर वहा गवर्नर राज स्थापित कर दिया गया।

इस्कन्दर मिर्जा के विरोधी खामोश नही थे। खा अब्दुल कयूम पाकिस्तान मुस्लिम लीग के प्रधान बन गये थे। सरकारी प्रतिबध की धज्जिया उडा कर उनके हजारो सशस्त्र कार्यकर्ताओ ने कराची मे जलूस निकाला। इसके बाद एक सार्वजनिक सभा मे उन्होने धमकी दी कि यदि चुनाव न कराये गये तो पाकिस्तान मे लहू की नदिया बह जायेगी। मुस्लिम लीग ने यह भी माग की कि पाकिस्तान सैनिक गुट्टो से अलग हो जाये।

कहा जाता है कि कयूम खा सेना के कुछ अधिकारियो से ताल-मेल कर के सरकार का तख्ता उलट देने का षड्यन्त्र रचाने की तैयारिया

भी कर रहे थे।

श्री सोहरावर्दी भी जोड-तोड कर रहे थे। उन्होने नये प्रधान मत्री का विरोध नही किया बल्कि उन्ही से साठ-गाठ शुरू कर दी। एक सूचना के अनुसार दोनो मे समझौता हो गया था कि आगामी चुनाव मे सर फीरोज खा को राष्ट्रपति बनाया जाये।

श्री सोहरावर्दी दूसरे पजाबी नेता मिया मुमताज दौलताना से भी सौदेबाजी का प्रयास कर रहे थे। उनकी कोशिश यह थी कि तानाशाही को खतम करने और जनतत्र की स्थापना के लिये पाकिस्तान के दोनो भाग मिल कर काम करे। इस्कन्दर मिर्जा को उनमे फूट डाल कर लाभ उठाने न दिया जाये।

इस्कन्दर मिर्जा को इन सभी गतिविधियो की सूचना मिल रही थी। उन्होने मत्रिमण्डल मे परिवर्तन का फैसला किया। इसके साथ ही वह विधान को मुअत्तल करने के लिये तैयारिया कर रहे थे क्योकि उन्हे विश्वास हो चुका था कि यदि विधान-अनुसार चुनाव कराये गये तो उन्हे उनके विरोधी राष्ट्रपति के पद से हटा देगे। ९ अक्तूबर को उन्होने दो वार मत्रिमण्डल मे परिवर्तन किया परन्तु यह सब केवल एक नाटक था क्योकि उसी समय इस्कन्दर मिर्जा मत्रिमण्डल और ससद को भग करने और सैनिक शासन स्थापित करने के लिये भी तैयारिया कर रहे थे, उसी रात जब मत्रिमण्डल के सदस्य राजभवन मे शराब उडा रहे थे। राष्ट्रपति ने घोषणा कि "देश की एकता की रक्षाकरने के लिये" उन्होने केन्द्रीय ससद को भग कर दिया है, विधान को मुअत्तल कर दिया है और अपने मत्रिमण्डल को भग करके सेनापति जनरल अयूब खा को अपने अधीन चीफ मार्शल-ला एडमिनिस्ट्रेटर नियुक्त कर दिया है।

अन्तिम प्रधान मत्री सर फीरोज खा नून ने कई वर्ष बाद अपनी एक पुस्तक मे लिखा कि इस घोषणा से कई दिन पहले राष्ट्रपति ने उनसे देश की स्थिति पर एक-दो बार बात-चीत की थी और पूछा था कि

८

अयूब खां की सैनिक तानाशाही

अयूब खा को देश का "मार्शल ला एडमिनिस्ट्रेटर" नियुक्त कर के इस्कन्दर मिर्जा ने अपने पाव पर स्वय ही कुल्हाडा मारा था। केवल बीस दिन बाद ही मिर्जा को सब कुछ छोड-छाड कर पाकिस्तान से भाग कर ब्रिटेन मे शरण लेनी पडी।

अयूब खा को राजनीति के क्षेत्र मे लाने वाले इस्कन्दर मिर्जा ही थे। कई अफसरो का अधिकार छीन कर उन्होने अयूब खा की मुलाजमत की अवधि बढाई थी। राजनीति के क्षेत्र मे कोई किसी का मित्र नही होता। लियाकत अली को उनके साथियो ने धोखा दिया। गुलाम मुहम्मद ने नाजिमुद्दीन को और गुलाम मुहम्मद को इस्कन्दर मिर्जा ने धोखा दिया था। अयूब खा को गद्दी पर बिठा कर इस्कन्दर मिर्जा उसके विरुद्ध कुछ सैनिक अधिकारियो को भडका रहे थे। उन्होने वायु-सेना के एक सीनियर अधिकारी अब्दुल रब्ब को बुलाया और जनरल याहिया खा, जनरल शेर बहादुर और जनरल हमीद खा को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। यह अफसर कुछ हिचकिचाया और उसने टाल-मटोल की कोशिश की और अयूब खा को इसकी सूचना दे दी। इस पर सीनियर सैनिक अधिकारियो से आपस मे बातचीत की और फैसला किया कि इस्कन्दर मिर्जा को हटा दिया जाये। उस रात जनरल बरकी, जनरल आहजम खा और जनरल खालिद शेख इस्कन्दर मिर्जा से मिले।

उनके हाथो मे पिस्तौल थे। एक ने अपना पिस्तौल इस्कन्दर मिर्जा की छाती की ओर ताना और धमकी दी कि वह तुरन्त ही त्यागपत्र दे दे, नही तो उन्हे गोली से उडा दिया जायेगा। इस्कन्दर मिर्जा काप उठे। उनके मुख पर हवाइया उड रही थी। अपनी मौत का खतरा देख कर उन्होने त्यागपत्र देना स्वीकार कर लिया। उसी समय त्यागपत्र लिखा गया और उन्होने हस्ताक्षर कर दिये। दूसरे क्षण अफ़सर उन्हे और उनकी बेगम को एक कार पर हवाई अड्डे पर ले गये। एक विमान उन्हे कोयटा मे ले गया। प्रात काल उन्हे एक और विमान पर बिठा कर लन्दन पहुचा दिया गया।

बहुत कम लोगो को मालूम है कि जनरल अयूब खा कई वर्षों से सरकार की गद्दी पर अधिकार करने के लिये कोशिश कर रहे थे। लियाकत अली की मृत्यु के बाद उन्होने अमरीका से सम्पर्क स्थापित कर लिया था। पाकिस्तान को अपने लिये सुरक्षित करने के लिये अमरीका की सरकार ऐसे सैनिक अफसरो के हाथ मजबूत करना चाहती थी जो पाकिस्तान मे प्रगतिशील दलो को कुचल दे। इस्कन्दर मिर्जा से भी अमरीका के अधिकारियो ने ताल-मेल कर रखा था। यहा तक कि मिर्जा के बेटे ने कराची स्थित अमरीकी राजदूत श्री होरेसे हिल्डरेथ की बेटी से विवाह कर के अमरीका का नागरिक बनना स्वीकार कर लिया था, परन्तु मिर्ज़ा की अपनी गद्दी डोलने लगी और इस बात का खतरा पैदा हुआ कि चुनाव होने पर विरोधी दल शासन सत्ता पर अधिकार करके पाकिस्तान को अमरीका के सैनिक गुट्ट से अलग कर लेंगे। ईराक मे अमरीका के मित्रो की सरकार का तख्ता उलट जाने के बाद पाकिस्तान मे भी इसी प्रकार का खतरा पैदा हो चुका था। इस स्थिति मे अमरीका ने जनरल अयूब खा के हाथ मजबूत करने का फैसला किया।

सितम्बर १९५६ के पहले सप्ताह अमरीका के गुप्तचर विभाग

"सी० आई० ए०" (सेण्ट्रल इण्टेलिजेन्स एजेन्सी) के अध्यक्ष श्री एलन डलेज इण्डोनेशिया जाते हुए गुप्त रूप से कराची पहुचे । उन्होने अयूब खा से भेट की। २३ सितम्बर को न्यूयार्क के साप्ताहिक पत्र "न्यूज वीक" ने लिखा कि "हिन्द महासागर मे अमरीका के जगी बेडे के कुछ जहाज भेजे जायेगे। यदि खतरा हुआ तो अमरीका अपना बडा बेडा भी भेज देगा।"

एलन डलेज के इण्डोनेशिया से लौट आने के बाद वहा अमरीका के मित्रो ने विद्रोह का झण्डा खडा कर दिया। एलन डलेज इसी षड्यन्त्र के लिये वहा गये थे।

अयूब खा से अमरीकी अधिकारियो की मुलाकातो का सिलसिला जारी रहा।

जनरल अयूब जानते थे कि अमरीका की स्वीकृति के बिना पाकिस्तान मे सैनिक तानाशाही स्थापित करना मुश्किल है। इसके लिये वह एलन डलेज की मार्फत दौड-धूप कर रहे थे। उन्होने अपनी डायरी मे लिखा है कि

> "८ मई १९५८ को मै एलन डलेज से मिला और इस बात के लिये उन्हे धन्यवाद दिया कि उन्होने हमारी समस्याओ के बारे मे अपने भाई को जो कि अमरीका के विदेश मत्री है दिलचस्पी लेने के लिये तैयार किया।"

इन शब्दो से स्पष्ट है कि जनरल अयूब ने इस्कन्दर मिर्जा को अधेरे मे रख कर अपने तौर पर अमरीका के गुप्तचर विभाग से जिसने कुछ ही वर्षो मे ईरान, ग्वाटे माला और इण्डोनेशिया मे विद्रोह कराया था पाकिस्तान मे भी सरकार का तख्ता उलट देने के लिये स्वीकृति ली थी। श्री डलेज साम्यवाद का डर दिखा कर एशिया के देशो को काबू करने मे लगे हुए थे। उन्होने भारत की निरपेक्षता की नीति को "नैतिक पतन" का नाम देकर इसकी निन्दा की थी। उन्होने यह विचारधारा

पेश की थी कि एशिया के लोगो को अमरीका के हितो के लिये आपस मे लडाया जाये और जो देश इसके लिये तैयार हो उन्हे भरपूर सैनिक सहायता दी जाये। जनरल अयूब खा स्वार्थी बन कर यह पार्ट अदा करने के लिय तैयार हो गये थे।

जनरल अयूब खा की डायरी के अध्ययन से यह मालूम होता है कि सैनिको और नेताओ का एक गिरोह उन्हे गिरफ्तार करना चाहता था। उन्होने लिखा है कि

> २१ मई को मै जेहलम गया। यहा जनरल आजम खा मुझे मिले। उन्होने बताया कि एबटाबाद से अफवाह निकली है कि एक जनरल और एक ब्रिगेडियर को गिरफ्तार कर लिया गया है। मेरी पत्नी ने भी मुझे बताया कि उसने यह अफवाह सुनी है कि कई सीनियर अफसरो पर भारत के दलाल होने का आरोप लगाया जा रहा है। २१ मई को मैने जनरल मूसा से पूछा। उन्होने बताया कि एबटाबाद मे कुछ नेताओ ने यह अफवाहे फैलाई है। चुनाव निकट आ रहे है। नेता लोग विजय प्राप्त करने के लिये भाति-भाति के हथकण्डो का प्रयोग करेगे। इसके बाद उनके पास इसके अतिरिक्त कोई काम नही होगा कि पाकिस्तान के टुकडे-टुकडे कर दे। इस हालत मे सेना से और मुझसे उनका मुकाबला होगा। इसलिये मुझे वह अव्वल नम्बर का शत्रु समझते है।

पाकिस्तान का प्रोपेगैडा करने वाले अग्रेज लेखक श्री रशब्रुक विलियम्ज ने अपनी पुस्तक The State of Pakistan के पृष्ट १८२ पर लिखा है कि "इस बात के चिन्ह थे कि सेना के युवक अफसर सरकार का तख्ता उलट देगे।"

इन अफसरो का सम्बन्ध उसी गुटे से था जिन्होने १९५१ मे लियाकत अली खा की सरकार का तख्ता उलट देने की कोशिश की थी। यह लोग चाहते थे कि पाकिस्तान विदेशी मामलो मे स्वतत्र नीति अपनाये और

सैनिक ब्लाको से अलग हो जाये ।-यह लोग यह भी चाहते थे कि बडे-बडे जमीदारो की जमीने छोटे किसानो मे बाट दी जाये। पाकिस्तान के दोनो भागो मे साधारण जनता उनके साथ थी और लगभग सभी दल इन्ही नीतियो को अपनाने के लिये मागे कर रहे थे। यदि यह लोग सफल हो जाते तो जनरल अयूब खा और उनके मित्रो के लिये कोई गुजायश नही थी। बडे-बडे जमीदारो और पूजीपतियो को अपना भविष्य खतरे मे दिखाई दे रहा था और अमरीका और ब्रिटेन भी परेशान हो रहे थे।

श्री रशब्रुक विलियम्ज ने जो जनरल अयूब खा के ढडोरची है, अपनी पुस्तक मे लिखा है कि

> "कुछ देर से सेना के नेता देश की स्थिति से परेशान हो रहे थे। अपने भरती अफसरो द्वारा उन्हे इस बात का पता लग रहा था कि किसान बडे-बडे जालिम जमीदारो के विरुद्ध जबरदस्त बगावत करेगे। सरकारी मशीनरी का तानाबाना टूटने वाला था। सेना के अफसरो मे मतभेद था। कुछ छोटे अफसरो ने यह योजना तैयार की थी कि जिस प्रकार मिस्र मे कर्नल नासिर और उनके साथियो ने अचानक धावा बोल कर सरकार पर अधिकार कर लिया था इसी प्रकार पाकिस्तान मे भी होगा। जनरल अयूब खा को इसकी सूचना मिली। इसलिये वह सीधे कराची पहुचे और इस्कन्दर मिर्ज़ा से मिले"

स्पष्ट है कि जनरल अयूब अपनी जान बचाने के लिये भी सरकार पर अधिकार करना चाहते थे।

अयूब खा ने शासन की बागडोर सम्भालते ही सभी राजनैतिक दलो को भग कर दिया। देश के दोनो भागो मे सैकडो नेताओ, और कार्य-कर्त्ताओ को गिरफ्तार कर लिया। इनमे केन्द्रीय मत्रिमण्डल के भूतपूर्व सदस्य अयूब खुर्रो, हमीदुलहक चौधुरी, अब्दुल मसूब और अब्दुल खालिक भी शामिल थे। पूर्वी बगाल मे अवामी लीग के नेता शेख

मुजीबुररहमान और उनके दर्जनो साथियो को गिरफ्तार करके नजर-बन्द कर लिया गया। नेशनल अवामी पार्टी के प्रमुख नेताओ मौलाना भाषानी, बादशाह खान, जी० एम० सैयद और खा अब्दुलसैय्यद से भी यही व्यवहार हुआ।

श्री सोहरावर्दी, अब्दुल कयूम, मिया मुमताज दौलताना आदि सभी दलो के नेताओ पर मुकदमे चलाये गये। उन्हे कहा गया कि यदि वे राजनीतिक गतिविधियो मे भाग लेना छोड दे तो मुकदमे वापिस ले लिये जायेगे। उन्हे कहा गया कि वे विशेष अदालतो मे अपने वकील पेश नही कर सकते। अदालत के फैसले के विरुद्ध अपील भी नही की जा सकेगी। सोहरावर्दी ने लिख दिया कि वह राजनीति के क्षेत्र से अलग हो गये है। अब्दुल कयूम को क्षमा नही किया गया। उन्हे तीन वर्ष कैद की सजा का आदेश दिया गया।

अयूब खा ने १६ अप्रैल १९५९ को एक अध्यादेश जारी करके नेशनल अवामी पार्टी के पजाब के नेता मिया इफतिखारुद्दीन के समाचार पत्रो "पाकिस्तान टाइम्ज," "दैनिक इमरोज" और साप्ताहिक "लेलो निहार" को अपने अधिकार मे ले लिया। जब मिया साहिब ने उच्चतम न्यायालय मे अपील की तो अयूब खा ने एक और अध्यादेश जारी किया कि उनकी किसी भी कार्यवाही के विरुद्ध अपील नही की जा सकती।

मिया साहिब पर यह आरोप लगाया जा रहा था कि वह चीन और रूस के एजेन्ट है।

कई और पत्रकारो को जिनमे मेरे पुराने मित्र आगा शोर काश्मीरी सम्पादक साप्ताहिक "चट्टान" और चौधरी मुहम्मद शफी सम्पादक "इक्दाम" भी शामिल है कई बार गिरफ्तार किया गया। दैनिक "बागे हरम" पिशावर के सम्पादक को भी गिरफ्तार किया गया। दैनिक "हिलाले पाकिस्तान' को बन्द कर दिया गया। ढाका के दैनिक "इत्तफाक" को दो बार बन्द किया गया और उसका छापाखाना जब्त कर लिया गया। बाद मे

एक "नेशनल ट्रस्ट" स्थापित करके लगभग सभी बडे-बडे समाचार पत्रो को खरीद लिया गया। इन समाचार पत्रो मे अयूब खा का प्रोपेगैडा होने लगा। लगभग सभी पत्रो को गुप्त रूप से आदेश दिया गया कि वह सरकारी अधिकारियो के लिखे हुए सम्पादकीय ही प्रकाशित किया करे। यह आदेश भी दिया गया कि सरकार के प्रत्येक वक्तव्य को पूर्ण रूप से प्रकाशित किया जाये।

अयूब खा ने अपनी धाक जमाने के लिये नामी स्मगलरो को गिरफ्तार करके उनकी जायदादे जब्त कर ली। कई भ्रष्टाचारी अफसरो को नौकरी से अलग करके कैद कर दिया गया। जब कराची के नामी स्मगलर कासिम भुट्टो के विरुद्ध केस चला तो मालूम हुआ कि भूतपूर्व गवर्नर जनरल श्री गुलाम मुहम्मद और इस्कन्दर मिर्जा भुट्टो से बाकायदा हिस्सा लिया करते थे। परन्तु यह सब दिखावे की कार्यवाही थी क्योकि कुछ देर बाद अयूब के अपने परिवार वालो के सदस्यो ने स्मगलिंग और भ्रष्टाचार से हाथ रगना शुरू कर दिया। अयूब की एक बेटी स्वात से अफगानिस्तान के रास्ते स्मगलिंग करती थी। उनके बेटे गोहर अयूब ने अपने बहनोई से मिलकर देखते-देखते करोडो के मूल्य की जायदाद बना ली। १९७० मे पजाव के भूतपूर्व डायरेक्टर सूचना विभाग श्री नूर अहमद ने स्मगलिग के एक केस की दस्तावेजात प्रकाशित करते हुए आरोप लगाया कि जनरल अयूब का सम्बन्ध नामी स्मगलरो के एक गिरोह से था। जनरल अयूब खा को श्री नूर अहमद के विरुद्ध मुकदमा दायर करने का साहस नही हुआ।

अयूब खा ने देश की सभी मस्जिदो के अमामो और मौलवियो को सरकारी नौकर बना लिया। इस प्रकार मस्जिदो मे इस्लाम के नाम पर सैनिक तानाशाही का समर्थन और प्रजातत्र-वाद का विरोध किया जाने लगा। इस प्रोपेगैडे का एक उदाहरण यह है कि २२ जून १९६० को एक सरकारी मौलवी सैय्यद आसफुल्ला शाह ने भाषण देते हुए कहा कि

"कुरान शरीफ मे लिखा है कि राष्ट्रपति शासन इस्लाम के सिद्धान्तो के अनुकूल है। प्रजातन्त्र-वाद काफरो का सिद्धान्त है। मुसलमानो का कर्त्तव्य है कि वह जनरल अयूब खान को इस्लाम का खलीफा कहा करे।"

जनरल अयूब खा जनता को ससद के लिये अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार देना नही चाहते थे। अपने सलाहकारो के कहने परउन्होने एक विधान तैयार कराया। उसके अनुसार प्रान्तीय विधान सभा और ससद के चुनाव कराये गये। इस विधान के अनुसार पहले प्राइमरी बेसिक कमेटिया स्थापित की गई। इनसे थाना, जिला, और डिवीजनल कमेटिया स्थापित की गईं। प्रत्येक कमेटी के आधे सदस्य सरकार ने स्वय नियुक्त किये। समस्त देश मे इन कमेटियो को ८० हजार मतदाता चुनने का अधिकार दिया गया। और इन ८० हजार को विधान सभाओ और ससद (नेशनल असेम्बली) के सदस्य चुनने का अधिकार दिया गया। कबायली इलाके मे केवल पैंशन पाने वाले टोडी सरदारो को मतदान का अधिकार दिया गया। राष्ट्रपति का चुनाव करने का अधिकार भी इन्हे ही दिया गया।

विधान मे तै किया गया कि ससद राष्ट्रपति को हटा नही सकती। राष्ट्रपति अपने मत्री सदस्यो मे से नियुक्त करेगा परन्तु मत्री बनते ही वह ससद से त्यागपत्र दे देंगे। मत्रियो को हटाने का अधिकार भी केवल राष्ट्रपति को दिया गया। राष्ट्रपति के भाषण पर ससद को विचार-विमर्श के अधिकार से वचित कर दिया गया। यह भी आदेश दिया गया कि राष्ट्रपति के फैसलो को ससद रद्द नहीकर सकती। ससद मे बजट मे कटौती भी नही की जा सकती। यदि किसी मत्री और विभाग के सैक्रेट्री मे मतभेद हो तो अन्तिम फैसला राष्ट्रपति ही करेगा।

समाचार पत्रो को आदेश दिया गया कि वह विधान सभा और ससद की कार्यवाही की वही रिपोर्ट प्रकाशित कर सकेंगे जो सरकार

स्वय तैयार करेगी। यह फैसला भी किया गया कि १० वर्ष तक रक्षा-विभाग का मत्री सेना का कोई सीनियर अधिकारी ही हो सकेगा।

इतना करने पर भी विरोधी दलो के लगभग सभी नेताओ पर यह प्रतिबध लगा दिया गया कि वह न तो किसी विधानसभा के, न किसी राजनीतिक सस्था के सदस्य अथवा पदाधिकारी बन सकते है। पहले तो सभी राजनीतिक दलो को भग कर दिया गया था परन्तु अब तानाशाह की आवश्यकता पूरी करने के लिये आदेश दिया गया कि सरकार से लायसेस लेकर सस्था स्थापित की जा सकती है परन्तु उसके प्रत्येक अधिवेशन मे यहा तक कि कार्यकारिणी समिति की बैठक मे भी खुफिया पुलिस के कर्मचारियो की रिपोर्टिंग के लिये बैठने की इजाजत देना पडेगी।

अयूब खा के तानाशाह बनने से पहले अब्दुलकयूम पाकिस्तान मुस्लिम लीग के प्रधान थे। अयूब खा ने चौधुरी खलीकुज्जमान की अध्यक्षता मे अपने समर्थको को एकत्रित करके उनसे यह घोषणा करा ली कि जनरल अयूब खा मुस्लिम लीग के प्रधान है। यद्यपि सभी विरोधी नेताओ पर प्रतिबध लगा दिया गया था कि वह किसी भी राजनीतिक सस्था के सदस्य नहीं बन सकते परन्तु जो ऐसा नेता अयूब खान की तानाशाही का समर्थन करता उसे सरकारी मुस्लिम लीग मे सम्मिलित कर लिया जाता।

पुराने लीगियो ने सरकारी लीग के मुकाबले मे अपनी लीग बना ली। इस का नाम कौसल मुस्लिम लीग रखा गया।

अयूब खा को इस बात का भय था कि जिन जनरलो ने मिर्जा का तख्ता उलटने के लिये उनका साथ दिया था वही किसी दिन उनका पत्ता भी काट देगे। इसलिये उन्हें सेना से त्यागपत्र देने के लिये विवश करके सरकार मे भरती कर लिया गया। जनरल शेख को मत्रिमण्डल से हटा कर जापान मे राजदूत नियुक्त कर के भेज दिया गया। जनरल

आह्जम को शरणार्थियो के पुनर्स्थापन विभाग से हटा कर पूर्वी बगाल मे गवर्नर नियुक्त कर के भेज दिया गया। आह्जम खान शीघ्र ही बगालियो मे आदर का स्थान प्राप्त कर गये। जनरल अयूब खा जब ढाका गये तो जनता ने उनके विरुद्ध नारे लगाये। पुलिस ने बगाली विद्यार्थियो पर गोलिया चलाई परन्तु विरोधी आन्दोलन की गति तीव्र होती गई। विद्यार्थियो ने अयूब खा के चित्र फाड डाले। सरकारी जायदादो को आग लगा दी। पुलिस और सेना विरोधियो को दबा न सकी। जनरल अयूब खा को किसी जलसे मे भाषण देने का साहस न हुआ। जनरल अयूब इस घटना से इतने बिगडे कि उन्होने गवर्नर आह्ज़म खा को "त्यागपत्र" देने के लिये विवश कर दिया।

जुलाई १९५८ मे ईराक मे सेना ने अमरीका और ब्रिटेन के मित्रो की सरकार का तख्ता उलट दिया था। ईराक की नई सरकार ने बगदाद पैक्ट से अलग होने की घोषणा कर के रूस से मित्रता की सधि कर ली। अफगानिस्तान की सरकार ने भी रूस से सधि कर ली।

१ मई १९६० को अमरीका के एक जासूसी विमान को रूस मे गिरा लिया गया। उसके चालक ने बयान दिया कि वह पिशावर के निकट एक हवाई अड्डे से अपने विमान को उडा कर जासूसी के लिये आया था। इस पर रूस ने धमकी दी कि यदि ऐसी कोई और हरकत हुई तो रूस इस हवाई अड्डे को नष्ट कर देगा। अफगानिस्तान की सरकार ने भी इस विमान की उडान के विरुद्ध पाकिस्तान सरकार को विरोध-पत्र भेजा। पाकिस्तान सरकार ने इसके उत्तर मे कहा कि पाकिस्तान मे अमरीका का कोई अड्डा नही। स्पष्ट है कि यह सफेद भूठ था। अमरीका के अपने समाचार पत्र लिख रहे थे कि पिशावर के निकट अमरीका ने एक जासूसी अड्डा बना रखा है और इस अड्डे से उडानो के लिये अमरीका के विमानो को पाकिस्तानी अधिकारियो से आज्ञा लेने की कोई आवश्यकता नही होती।

अयूब खा के इस झूठ के विरुद्ध विरोधी दलो के नेताओ ने बयान दिये। अफगानिस्तान और पाकिस्तान की सेनाओ मे झडपे हुई। अफगानिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्रो पर पाकिस्तान के विमानो ने बम-वर्षा की। अफगानिस्तान मे पाकिस्तान के विरोध मे प्रदर्शन हुए। काबुल मे क्रोध मे आये हुए एक विशाल जनसमूह ने पाकिस्तानी दूतावास पर हमला कर के पाकिस्तानी झडे को फाड कर आग लगा दी। इससे दोनो देशो मे तनाव बढ गया। उनके व्यापार सम्बध टूट गये।

पाकिस्तानी अधिकृत काश्मीर मे भी सरकार के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे थे। अयूब खा के पिट्ठू सरदार खुरशीद को तथाकथित आज़ाद काश्मीर सरकार का प्रधान बनाने के लिये चुनाव का जो नाटक खेला गया उसके विरुद्ध जगह-जगह प्रदर्शन होने लगे। लाहौर, रावलपिण्डी कराची और ढाका आदि शहरो मे भी अयूब शाही के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे थे।

विरोधियो को कमजोर करने के लिये अयूब खा ने पुरानी चाल चली। उनके विदेश मत्री मजूर कादिर ने घोषणा की कि सरकार राष्ट्रीय सभा की सुरक्षा समिति मे काश्मीर का प्रश्न उठायेगी। भारत को युद्ध की धमकिया देने के लिये प्रोपेगैडा आन्दोलन शुरू कर दिया गया।

१९६२ मे भारत पर चीन ने आक्रमण किया था। पाकिस्तान ने इस अवसर से लाभ उठा कर चीन से सधि कर ली। इस युद्ध मे पाकिस्तान भारत पर यह आरोप लगाता रहा कि उसी ने चीन पर आक्रमण किया है। चीन ने आक्रमण नही किया। अमरीका और ब्रिटेन ने पाकिस्तान को प्रसन्न करने के लिये भारत सरकार पर काश्मीर के मामले मे दबाव डालना शुरू किया परन्तु उन्हे और पाकिस्तान को सफलता नही हुई। अमरीका ने काश्मीर का बटवारा करने के लिये एक योजना तैयार की। २६ अक्टूबर १९६२ को यह योजना नई दिल्ली मे अमरीका के सूचना

कार्यालय ने प्रकाशित की। भारत सरकार ने इसे स्वीकार नही किया।

१९६२ मे ही अयूब खा ने श्री भुट्टो को अपना विदेश मत्री नियुक्त किया था। श्री भुट्टो जूनागढ के भूतपूर्व प्रधान मत्री के बेटे हैं। उनकी मा एक हिन्दू नर्तकी थी। जब भुट्टो विदेश मत्री नियुक्त हुए उस समय भी वह पाकिस्तानी नागरिक नही थे। दिल्ली मे उच्चतम न्यायालय मे अपनी जायदाद के लिये उन्होने बयान दिया था कि वह अब भी भारत के नागरिक है। पाकिस्तान का विदेश मत्री बन कर भारत के विरुद्ध उनका प्रचार अवसरवाद का प्रमाण ही था। श्री भुट्टो ने पाकिस्तान के लिये चीन से सैनिक सहायता लेने के लिये अयूब खा को अपनी सरकार की नीति बदलने के लिये विवश कर दिया। अयूब खा यह समझ रहे थे कि वह चीन से मिल जाने की धमकी देकर अमरीका को भारत पर इस बात के लिये दबाव डालने मे सफल हो जायेंगे कि काश्मीर को पाकिस्तान के हवाले किया जाये परन्तु उन्हे शीघ्र ही मालूम हो गया कि भारत सरकार झुकने वाली नही।

अयूब सरकार की नीव कमज़ोर हो रही थी। जनता मे असन्तोष बढने लगा। आर्थिक स्थिति भी बिगड रही थी और विरोधी दलो के हौसले बढ रहे थे। दिसम्बर १९६१ मे श्री सोहरावर्दी विदेशो के दौरे पर गये। उन्होने अयूब सरकार की नीतियो की कडी आलोचना की। जनवरी १९६२ मे वह कराची लौटे। उनके विरुद्ध सरकार के समर्थक समाचार पत्रो ने प्रोपेगैंडा शुरू किया कि वह अमरीका से मिल कर अयूब खा की सरकार का तख्ता उलट देना चाहते है। इसी मास उन्हे अचानक कराची मे उनके निवास स्थान से गिरफ्तार कर लिया गया। जमाइत इस्लामी के नेता मौलाना मौदूदी को पाकिस्तान सुरक्षा कानून के अधीन गिरफ्तार कर लिया गया। इसी कानून के अधीन "ढाका टाइम्ज" और दैनिक "इत्तफाक" को बन्द कर दिया परन्तु कराची और

ढाका की अदालतो ने सरकार की इस कार्यवाई को रद्द कर दिया। जमाइत इस्लामी को भग कर देने के लिये सरकार ने जो आदेश दिया था उसे भी अदालत ने रद्द कर दिया। एक और अदालत ने फैसला दिया कि सरकार का यह अध्यादेश कि सी० आई० डी० के कर्मचारी राजनीतिक कार्यकर्ताओ की प्राइवेट बैठको मे भी बैठ सकते है जनता के विरुद्ध सरकारी अधिकारो का नाजायज इस्तेमाल है।

अयूब खा की इन धाधलियो का मुकाबला करने के लिये विरोधी दलो ने राष्ट्रपति के चुनाव मे अयूब खा के मुकावले मे मिस फात्मा जिन्नाह को खडा कर दिया। सरकारी मौलवियो ने इस पर फतवे दिये कि इस्लाम किसी स्त्री को देश की शासक बनने की आज्ञा नही देता। इस पर विरोधी दलो के मौलवियो ने फतवा दिया कि मिस जिन्नाह अयूब खा से बेहतर मुसलमान है। अयूब खा ऐसे तानाशाह को हटाने के लिये मिस जिन्नाह का समर्थन करना पाप नही।

अयूब खा स्थान-स्थान पर अपने भाषणो मे यह कहते रहे कि मिस जिन्नाह को राष्ट्रपति के पद के लिये चुनना मरदो की बेइज्जती होगी। सेनापति के मुकाबले मे मिस जिन्नाह की सफलता एक मजाक होगा और समस्त ससार इस पर हसी उडायेगा। उन्होने यह आरोप भी लगाया कि मिस जिन्नाह का समर्थन करने वाले अधिकतर व्यक्ति पाकिस्तान की अखण्डता के शत्रु है। मतदाताओ को यह कह कर भी धमकाया गया कि यदि मिस जिन्नाह राष्ट्रपति बन गई तो सेना विद्रोह कर देगी।

मिस जिन्नाह को कबायली इलाको मे जाने नही दिया गया। उनके समर्थको पर हमले किये गये। परिणाम स्वरूप जनरल अयूब इस चुनाव के नाटक मे सफल तो हो गये परन्तु उन्हे मालूम हो गया कि पूर्वी बगाल मे उनका विरोध बढ गया है। कराची मे भी उनका बहुत विरोध हुआ।

अयूब खा ने अब अपने विरोधियो के गढ तोडने का फैसला किया। उनके बेटे गोहर अयूब ने जनवरी १९६५ के पहले सप्ताह मे सीमा प्रान्त से सैकडो किराये के गुण्डे मगवाये। इन्होने कराची मे उत्तर प्रदेश और दिल्ली से आकर आबाद हुए मुसलमानो पर आक्रमण कर दिया। उनके मकान और दुकाने लूट कर जला दी गई। उनकी बेटियो और स्त्रियो को भगा लिया गया।

जनवरी के तीसरे सप्ताह मुझे कराची से एक पत्र मिला, जिसे मैं ने अपने समाचार पत्र "सवेरा" मे १८ जनवरी को प्रकाशित किया था। इसमे लिखा था कि :

"जनवरी १९६४ मे पूर्वी पाकिस्तान मे हिन्दुओ के लहू की नदिया बहाई गई थी और अब जनवरी १९६५ मे कराची मे रहने वाले शरणार्थी मुसलमानो को गुण्डाशाही का निशाना बनाया गया है। ८ जनवरी भयानक फसादो, लूट-मार और अपहरण का पाचवा दिन था। २ जनवरी और ८ जनवरी के बीच एक दर्जन शरणार्थी बस्तियो को तबाह किया गया। लगभग आठ सौ मकान जला दिये गये। ६४ स्त्रियो को भगा लिया गया। १९ व्यक्तियो को जिनमे स्त्रिया भी थी जिन्दा जला दिया गया। सयुक्त दल के नेताओ और कार्यकर्ताओ को गिरफ्तार किया जा रहा है। पुलिस तमाशा देख रही है। वह भाग्यहीन शरणार्थियो की रक्षा नही कर रही बल्कि उलटा उन्हे ही गोलियो का निशाना बनाती है। मिस जिन्नाह ने यह देख कर दुखी होकर पुलिस से कहा—"इन लोगो को क्यो गोली मारते हो। मुझ पर गोली चलाओ।"

इस पत्र में यह भी लिखा था कि विरोधी दलो को प्राइमरी यूनिटो के चुनाव मे ही मालूम हो गया था कि सरकारी एजेन्ट गडबड करेगे। हजारो गुण्डे और सीमा प्रान्त से हजारो पठान गाडियो और बसो पर लाये गये थे। यह सब बोगस मतदाता थे। इससे जनता को बहुत क्रोध

आया और दुख हुआ कि अयूब खा अपनी तानाशाही कायम रखने के लिये ओछे हथकण्डो का प्रयोग कर रहे हैं। फसाद से एक दिन पहले अयूब खा ने हैदराबाद मे अत्यन्त भडकीला भाषण दिया। अयूब खा के बेटे गोहर अयूब ने अपने समर्थको की एक गुप्त बैठक मे यह फैसला किया कि अयूब खा हारे अथवा जीते, विरोधी दल का यह मजबूत गढ—कराची—तबाह कर दिया जाये। इस बैठक मे एक सरकारी मौलवी ने फतवा दिया कि शरणार्थी काफिर है। उस रात हजारो सशस्त्र पठानो ने एक जलूस निकाला और शरणार्थियो के झोपडो पर हमला कर दिया। उनकी बेटियो और स्त्रियो को बलपूर्वक उठा कर ट्रको पर विठा लिया गया और कितने ही व्यक्तियो को जिन्दा जला दिया गया। अधिकारियो ने शरणार्थियो की बस्तियो मे धारा १४४ लागू कर दी परन्तु यह प्रतिबध वास्तव मे शरणार्थियो के लिये था। गुण्डो को हमले करने और लूट-मार करने की खुली छुट्टी मिली हुई थी।

पत्र लिखने वाले ने लिखा कि कराची मे लोग पूछते है, कहा है हमारी सेना ? कहा है हमारे अफसर ? क्या लाखो मुसलमानो ने इसी पाकिस्तान की स्थापना के लिये सघर्ष किया था ?

बिलोचिस्तान मे विरोधियो को कुचल देने के लिये सेना और बमवर्षक विमानो का प्रयोग किया गया। "विद्रोहियो" को नगा कर के पेडो से उलटा लटका कर गोली मार दी गई। जिसने अयूब का समर्थन करने से इनकार किया उसे गिरफ्तार कर लिया। जब उसने सरकार का समर्थन करने का विश्वास दिलाया उसे रिहा कर के सरकारी पार्टी मे सम्मिलित कर लिया गया। इस सम्बध मे एक प्रमुख कबायली सरदार खा बगटी का केस दिलचस्प है। पहले तो उसे विद्रोह और हत्या के आरोप मे गिरफतार किया गया। जब उसने वफादारी का विश्वास दिलाया तो रिहा करके केन्द्रीय मत्रिमण्डल मे सम्मिलित कर लिया गया। परन्तु कुछ देर बाद उसने आखे दिखाई तो डिसमिस कर

के उसे पुराने आरोपो मे ही गिरफतार कर लिया गया। भुतपूर्व रक्षा-मत्री अयूब खुरो को अयूबशाही की स्थापना होते ही गिरफ्तार कर के चोरबाजारी के आरोप मे नजरबद कर दिया गया था। परन्तु जब उसने सरकार का समर्थन करने का विश्वास दिलाया तो उसे सरकारी मुस्लिम लीग मे सम्मिलित कर लिया गया।

पूर्वी बगाल मे शेख मुजीबुर्रहमान को फिर गिरफ्तार कर लिया गया। बादशाह खा को भी पुन गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी सेहत बिगड गई तो उन्हे रिहा कर के चिकित्सा के लिये ब्रिटेन जाने की इजाजत दे दी गई। बादशाह खा पाकिस्तान से बाहर गये तो लौटे नही। उन्होने अफगानिस्तान मे डेरे डाल लिये।

इन सभी हथकण्डो से भी जनता को दबाया नही जा सका। असन्तोप की आग भडक रही थी। जनरल आजम खा ने जिन्होने इस्कन्दर मिर्जा का शासन खत्म करने के लिये अयूब खा का साथ दिया था और जिन्हे बगाल के राज्यपाल के पद से पृथक कर दिया गया था, लाहौर मे डेरे डाल लिये। उन्होने मिस जिन्नाह से मिल कर अयूबशाही के विरुद्ध प्रोपेगैडा शुरू कर दिया। कराची, रावलपिण्डी और ढाका मे विद्यार्थी अयूबशाही को ललकारने के लिये सामने आने लग गये। लाहौर मे अयूबशाही के विरुद्ध एक विशाल जलूस निकला। देश की आर्थिक स्थिति बिगड रही थी। कारखानो मे हडताले होने लगी।

इस स्थिति से परेशान होकर सरकार के सकेत पर समाचार पत्रो ने भारत के विरुद्ध प्रचार शुरू कर दिया। माग की जाने लगी कि काश्मीर पर अधिकार करने के लिये भारत से युद्ध किया जाये।

विदेश मत्री की हैसियत से श्री भुट्टो चीन गये। उन्होने चीन से मित्रता की सधि की। गिलगित (काश्मीर) का २५०० वर्ग मील इलाका चीन के हवाले करके चीन को गिलगित मे सडक के निर्माण की इजाज़त दी गई। इस सडक को चीन से मिलाने का फैसला किया

गया। चीन से विमानो की उडानो की एक सधि भी की गई। पाकि-स्तानी जनता को यह कह कर भडकाने का सिलसिला शुरू किया गया कि काश्मीर पर अधिकार करने के लिये चीन पाकिस्तान की सहायता करेगा।

पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर की तथाकथित सरकार के प्रधान ने भारत को युद्ध की धमकिया देना शुरू कर दिया। खुले तौर पर कहा जाने लगा कि चीन से शस्त्र लेकर काश्मीर पर हमला किया जायेगा। १९६४ मे चीनी नेताओ ने पाकिस्तान का दौरा किया था। मार्च १९६५ मे जब अयूब खा स्वय चीन गये, बात-चीत के बाद एक वक्तव्य मे अयूब खा ने ससार की समस्याओ पर चीन के दृष्टिकोण का समर्थन किया। पाकिस्तान मे उनके लौट आने पर पाकिस्तान सरकार ने भारत के विरुद्ध प्रोपेगैंडा आन्दोलन तेज कर दिया। कहा गया कि भारत और अमरीका मिल कर पूर्वी बगाल को पाकिस्तान से अलग करना चाहते है।

मेजर जनरल अकबर खा ने जो रिहा हो चुके थे कहा कि वह काश्मीर पर हमला करने के लिये गोरिलो को प्रशिक्षण दे रहे है। वास्तव मे अयूब सरकार स्वय भी काश्मीर पर हमला करने के लिये इसी प्रकार की तैयारिया कर रही थी। अमरीका और ब्रिटेन के बाद अब उसे चीन से भी युद्ध सामग्री मिलने लग गई थी। पहले तो अम-रीका की सैण्ट्रल इण्टेलिजेस एजेन्सी के विशेषज्ञो की सहायता से रावल-पिण्डी के निकट और कोयटे मे ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये जिन मे भारत मे साम्प्रदायिक गडबड, तोड-फोड, जासूसी और भारतीय नेताओ को हत्या करने के लिये अपने आदमियो को प्रशिक्षण देने का आयोजन किया गया और इसके बाद काश्मीर मे सशस्त्र घुसपैठिये भेजने के लिये गोरिलो को बडे पैमाने पर ट्रेनिग देने का प्रबध किया गया। ऐसे लोगो को हिन्दुओ, सिखो, साधुओ, ग्रन्थियो और पुजारियो के वेष बदल

कर काम करने की ट्रेनिग दी गई। इन्हे हिन्दी और सस्कृत पढाई गई। शस्त्रो का प्रयोग करने की ट्रेनिंग भी दी गई। छोटे-छोटें व्यापारियो, चाय बेचने वालो, साधारण हॉकरो, कपडा बेचने वालो, सपेरो और बाजीगरो की हैसियत मे हवाई अड्डो, सरकारी कार्यकर्ताओ और पुलो, रेलवे स्टेशनो और छावनियो के निकट रह कर जासूसी करने की ट्रेनिंग दी गई। बाद मे चीनियो से भी इसी प्रकार के जासूसो और गोरिलो के प्रशिक्षण के लिये सहायता ली गई। पाकिस्तान के शासक यह समझ रहे थे कि इस प्रकार वह भारत मे उपद्रव कराने और काश्मीर पर अधिकार करने मे सफल हो जायेंगे।

९

भारतीय नेताओं की हत्या के लिये पाकिस्तानी षड्यंत्र

१९५० मे पाकिस्तान ने प्रधान मत्री जवाहर लाल नेहरू और रक्षा मत्री श्री कृष्ण मेमन की हत्या करने का षड्यत्र किया। इसके लिये पजाब विश्वविद्यालय के एक नवयुवक रणवीर सिह सहगल को तैयार किया। यह व्यक्ति लाहौर गया। वहा उस समय मुस्लिम लीग के प्रधान श्री अब्दल कयूम और गुप्तचर विभाग के डायरेक्टर श्री एन० एम० रिजवी से उनकी भेट कराई गयी। उसे शस्त्रो के प्रयोग की ट्रेनिंग दी गई और कई हजार रुपये, बन्दूके और पिस्तौल देकर भारत मे भेजा गया। यह शस्त्र हिन्दूमल कोट रेलवे स्टेशन के निकट जमीन मे दबाकर रखे गये। महगल ने गद्दारो का एक दल भरती किया और उन्हे कहा कि प्रधान मत्री और दूसरे नेताओ की हत्या करके सरकार का तख्ता उलट दिया जायेगा। सहगल इसके लिये तैयारिया कर रहा था। यह तै किया गया कि श्री नेहरू कुल्लू (हिमाचल प्रदेश) मे आराम करने के लिये जाये तो रास्ते मे पठान कोट के निकट एक पुल उडा दिया जाये। परन्तु महगल की यह योजना विफल हो गई। उसे और उसके साथियो को गिरफ्तार कर लिया गया। अम्बाला मे उनके विरुद्ध केस चला और उसे तथा उसके साथियो को कैद की सजा दी गई।

फरवरी १९५८ मे दो पठानो को दिल्ली मे भेजा गया। ये लोग

प्रधान मत्री की हत्या करने के लिये आये थे। इन्हे चादनी चौक के एक होटल मे गिरफ्तार किया गया। इनमे से एक का नाम समीन जान था।

सितम्बर १९६२ मे रक्षा मत्री श्री कृष्ण मेनन की हत्या करने का षड्यत्र किया गया। काश्मीर पुलिस ने दो पाकिस्तानियो को गिरफ्तार करके इस षड्यत्र को विफल कर दिया। ये दोनो पाकिस्तानी पुलिस के सीनियर अधिकारी थे और ८ सितम्बर को काश्मीर मे घुस आये थे। उन्होने पुखवाडा के जगल मे घुस कर सोनामार्ग मे प्रवेश किया। श्री कृष्ण मेनन ने श्रीनगर लेह रोड के उद्घाटन के लिये इस मार्ग से गुजरना था। गूजरो के वेष मे यह पाकिस्तानी सोनामार्ग गये। उन्होंने पुल के नीचे बम रखे। परन्तु रक्षा-मत्री के गुजरने से पहले ही बम फट गये। पुल नष्ट हो गया परन्तु श्री मेनन बच गये। सीमा सुरक्षा सेना और पुलिस के जवान उस जगह पहुचे और जगल मे इन पाकिस्तानियो को गिरफ्तार कर लिया।

जून १९६२ मे उस समय के काश्मीर के प्रधान मत्री बक्शी गुलाम मुहम्मद की हत्या के लिये पाकिस्तानियो ने दो-तीन बार प्रयत्न किये। पहले केस मे पाग ग्राम मे एक पुल के नीचे एक बम रखा गया। परन्तु बक्शी साहिब के इस पुल पर से गुजरने से दो दिन पहले यह बम फट गया। १६ जून को जम्मू मे बक्शी साहिब के निवास स्थान पर बम रख कर उनकी हत्या की कोशिश की गई। पुलवामा के निकट बक्शी साहिब के गुजरने के मार्ग पर आधा दर्जन बम रखे गये। परन्तु तीनो बार बक्शी साहिब की हत्या करने की कोशिश विफल रही।

काश्मीर पर पाकिस्तान के दूसरे आक्रमण से पहले दर्जनो पाकिस्तानी जासूस गिरफतार किये गये। श्री नेहरू ने २४ अगस्त १९६२ मे राज्य सभा मे बताया कि भारत की सैनिक पुलिस ने काश्मीर मे कई दर्जन पाकिस्तानियो को गिरफ्तार किया है। उन्होने बताया कि पाकिस्तान सरकार ने अधिकृत क्षेत्र मे ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कर

रखे है जिन मे काश्मीर मे तोड-फोड करने की ट्रेनिग दी जाती है। उन्होने यह भी बताया कि १६५६ और १६६० के बीच काश्मीर मे पाकिस्तानी एजेन्टो से शस्त्र पकडे जाने के १८८ केस हुए। पाकिस्तानियों ने जो बम फेंके उन से १५ व्यक्तियो की हत्या हुई।

१६६५ मे पाकिस्तानी आक्रमण से पहले मार्च मे ६५ व्यक्तियो को पकडा गया। उनके पास से पाकिस्तानी बम मिले। एक मन्दिर मे हिन्दू साधु के वेप मे एक पाकिस्तानी को गिरफ्तार किया गया। उसके पास से एक रेडियो ट्रासमीटर मिला। उसके बयान पर उसके ६० साथियो को विभिन्न स्थानो से गिरफ्तार किया गया। जम्मू के निकट एक पाकिस्तानी को सपेरे के वेष मे गिरफ्तार किया गया। उसके पास से जो कागजात मिले उनसे मालूम होता था कि वह भारतीय सेना की गतिविधिया मालूम करने के लिये जासूसी कर रहा था। जून मे टीथवाल (काश्मीर) के इलाके मे दो पाकिस्तानी जासूस गिरफ्तार किये गये। उनके पास बम और पिस्तौल निकले। जम्मू काश्मीर, बगाल और असम मे इन्ही दिनो कई और पाकिस्तानी जासूस पकडे गये। श्रीनगर मे दस ऐसे पाकिस्तानी पकडे गये जो स्त्रियो के वेष मे बुरके पहन कर घूम रहे ने।

१०

हज़रत मुहम्मद के बाल की चोरी पाकिस्तानी षड्यंत्र और शेख़ अब्दुल्ला

शेख़ अब्दुल्ला को अगस्त १९५३ मे ऐसे समय गिरफ्तार किया गया था जब वह अपनी राजनीतिक धारणा बदल कर भारत सरकार को आखे दिखा रहे थे। बाद मे उन्हे रिहा कर दिया गया परन्तु जब यह मालूम हुआ कि वह पाकिस्तान से मिल कर काश्मीर को भारत से अलग करने के लिये षड्यत्र कर रहे है तो उन्हे फिर गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी पत्नी का १ पत्र पकडा गया था जिससे मालूम होता था कि काश्मीर मे गडबड कराने के लिये पाकिस्तान से रुपया लिया जा रहा है। मुकदमा चलता रहा। ऐसी हालत पैदा हो गई कि काश्मीर के लोग भी शेख़ को भूलने लग गये। १९६३ मे मै जब जम्मू गया तो शेख़ के के विरुद्ध केस के समय अदालत मे केवल ३ व्यक्ति मौजूद थे। शेख़ की अपनी पत्नी भी केस से कोई दिलचस्पी नही ले रही थी। उनका एक बेटा श्रीनगर मे सरकारी नौकर बन गया था और दूसरा लन्दन मे भारतीय दूतावास मे काम कर रहा था। शेख़ अब्दुल्ला निराश हो चुके थे परन्तु भारत मे कुछ लोग उनकी वकालत कर रहे थे। ये लोग दबाव डाल रहे थे कि शेख़ को रिहा कर दिया जाये। उनकी ओर से यह भी प्रचार किया जाता था कि शेख़ अब्दुला बदल गये हैं।

काश्मीर के प्रधान मत्री बख्शी गुलाम मुहम्मद कामराज प्लान के अनुसार त्याग पत्र देकर अलग हो चुके थे। उनकी जगह श्री समशुद्दीन

प्रधान मत्री बने थे।

मै दिसम्बर के तीसरे सप्ताह एक सम्मेलन के सम्बन्ध मे जम्मू गया था। बख्शी साहिब की माता की मृत्यु हुई थी। वह अन्तिम सस्कार से दस-बारह दिन बाद श्रीनगर से जम्मू आये थे। उनसे भेंट हुई तो उन्होने कहा कि मै दिल्ली आकर काग्रेस का काम करना चाहता हू इसके लिये बात-चीत करूगा। २७ सितम्बर को वह दिल्ली पहुचे। रात को उनका फोन आने पर फैसला हुआ कि दूसरे दिन उनसे भेंट होगी। परन्तु दूसरे दिन प्रात काल मालूम हुआ कि श्रीनगर मे उपद्रव हो गये है और समाचार मिलते ही वह विमान पर श्रीनगर चले गये है।

श्रीनगर शहर से लगभग ८ मील की दूरी पर हजरत बल की दरगाह मे सुरक्षित रूप से रखा हुआ हजरत मुहम्मद का बाल चोरी हो गया था। यह घटना आधी रात के बाद हुई। श्रीनगर और दूसरे इलाको मे जबरदस्त हिमपात होने पर भी सूर्योदय से पहले लाखो व्यक्ति दूर-दूर से एकत्रित हो गये। सरकारी जायदादो पर हमले होने लगे। जगह-जगह आग लगने लगी। प्रोपेगैडा किया जा रहा था कि हजरत मुहम्मद का पवित्र बाल बख्शी साहिब ने अपनी मरती हुई माता की इच्छा पर उसे दिखाने के लिये चुरा लिया था। हालाकि यह आरोप झूठा था। बख्शी साहिब की माता को मरे हुए दस-बारह दिन हो चुके थे जबकि चोरी २७ दिसम्बर की रात को हुई थी।

रेडियो पाकिस्तान बख्शी साहिब को ही दोषी ठहरा रहा था। उसके प्रसारणो मे कहा जा रहा था कि भारत के अधीन काश्मीर मे इस्लाम खतरे मे है। जनरल अयूब खा, श्री भुट्टो और दूसरे पाकिस्तानी नेता अपने भाषणो मे मुसलमानो को यह कहकर भडका रहे थे कि काश्मीर को "आजाद" करा के ही इस्लाम और काश्मीरी मुसलमानो की रक्षा की जा सकती है।

लाहौर मे एक विशाल समारोह मे केन्द्रीय सरकार के माल मत्री

पीरजादा खा ने कहा हजरत बल दरगाह की पवित्रता भग कर ससार भर के मुसलमानो को आघात पहुचाया गया है। उन्होने आरोप लगाया कि भारत सरकार ने स्वय यह हरकत की है ताकि काश्मीर के मुसलमान भडके तो सेना का प्रयोग करके उनका सफाया किया जाये।

एक और नेता शेख हिस्सामुद्दीन ने धमकी दी कि काश्मीर मे इस्लाम की रक्षा के लिये पाकिस्तान के मुसलमानो को तलवार उठानी पडेगी। २ जनवरी १९६४ को अयूब खा ने एक भाषण मे कहा कि पाकिस्तान के लोग और उनकी सरकार काश्मीर मे इस्लाम पर इस हमले को देख कर खामोश नही रह सकती।

कई पाकिस्तानियो ने यहा तक कहा कि चोरी की इन घटना मे श्री नेहरू का हाथ है और उनकी सेना काश्मीरी मुसलमानो के लहू से होली खेलना चाहती है।

पूर्वी बगाल मे इसी स्टट की ओट लेकर बडे पैमाने पर साम्प्रदायिक फसाद कराये गये। बगाली हिन्दुओ को लूट-मार का निशाना बना कर उन्हे भारत की ओर धकेलना शुरू कर दिया गया।

वास्तव मे हजरत मुहम्मद के पवित्र बाल की चोरी का यह षड्यत्र शेख अब्दुल्ला के साथी पीर मकबूल गेलानी ने पाकिस्तान की सहायता से कराया था। गेलानी काश्मीर षड्यत्र केस मे शेख के साथ ही गिरफ्तार किया गया था। परन्तु जमानत पर रिहा होकर पाकिस्तान भाग गया था। यहा से वह युद्ध विराम लाइन पार कर गुप्त रूप से श्रीनगर आया था। उसने हजरत बल दरगाह के एक मौलवी से मिल कर योजना तैयार की थी। चोरी के लिये दिन और समय तक नियत किया गया था। यह योजना भी तैयार की गई थी कि प्रात काल सूर्योदय से पहले ही लाखो लोग श्रीनगर पहुच कर लूटमार शुरू कर दे। पुलिस गोली चलाये तो मुकाबला किया जाये ताकि युद्ध विराम रेखा से सेना हटा कर शहर मे लाई जाये और पाकिस्तान इस स्थिति से फायदा उठाकर काश्मीर पर

हमला कर दे ।

शेख अब्दुल्ला के समर्थको को चोरी के सम्बध मे सब कुछ पता था। इसीलिये तो उन्होने माग की कि शेख साहब को रिहा कर दिया जाये और बख्शी साहिब को कैद कर लिया जाय। उनका कहना था कि शेख साहिब पवित्र बाल को बरामद करने मे सफल हो जायेगे ।

स्थिति बडी गम्भीर हो चुकी थी। गोली चलाना और सेना का प्रयोग करना पाकिस्तान के हाथो मे खेलना था और बख्शी साहिब को गिरफ्तार करना एक निर्दोष देश भक्त से अन्याय करना था। श्री नेहरू ने श्री लालबहादुर शास्त्री को पूरे अधिकार देकर श्रीनगर भेजा। उन्होने सभी दलो के नेताओ से बातचीत की। शेख के समर्थक देश की रिहाई और बख्शी साहिब की गिरफ्तारी की माग के साथ ही काश्मीर के प्रधानमत्री श्री समशुद्दीन की सरकार को भग करने की माग भी कर रहे थे।

पाकिस्तानी ऐजेन्टो ने श्री समशुद्दीन की हत्या के लिये उनकी कार पर हमला किया। कार जला दी गई परन्तु समशुद्दीन अपने आप का बचाने मे सफल हो गये ।

पुलिस ने पवित्र बाल बरामद कराने के लिये कोशिशे की और तीन व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया। इनमे से एक दरगाह हजरतबल का मौलवी अब्दुलरहीम बाण्डे थे। दो दूसरे व्यक्ति रशीद तराल और गुलाम कादिर बट थे। इनकी गिरफ्तारी पर पवित्र बाल मिल गया और सरकार को मालूम हो गया कि यह शरारत शेख के समर्थको और पाकिस्तान ने की थी।

अपने षड्यत्र का भण्डा फूटते देख कर पाकिस्तानियो और शेख के समर्थको ने कहना शुरू कर दिया कि बाल असली नही बल्कि मुसलमानो को धोखा देने के लिये कोई और बाल रख दिया गया है। इस प्रोपेगैंडे से स्थिति और भी खराब हो जाने की आशंका थी।

रेडियो पाकिस्तान से मुसलमानो को भडकाने के लिये कहा जा रहा था कि वह "असली बाल" बरामद करने के लियें आन्दोलन जारी रखें, यह भी कहा जाता था कि जब तक काश्मीर की सरकार का तख्ता उलट नही दिया जाता तब तक पवित्र वाल का पता नही लग सकता ।

इस अवसर पर श्री लालबहादुर शास्त्री ने दूरदर्शी नेता की हैसियत से काम किया । उन्होने शेख अब्दुल्ला के साथियो से बातचीत की । उनकी बातो से यही मालूम होता था कि यदि शेख साहिब को को रिहा करके उनसे बातचीत की जाये तो सकट टल सकता है । श्री शास्त्री को यह भी बताया गया कि शेख़ अब्दुल्ला काश्मीर को पाकिस्तान मे शामिल करना नही चाहते बल्कि वह मन से भारत के समर्थक है।

शास्त्री जी ने खतरा मोल लेने का फैसला किया । उन्होने शेख़ को रिहा करने के लियें वचन दिया । इस उपद्रव मे जो लोग गिरफ्तार किये गये थे उन्हे रिहा कर दिया गया । इसका परिणाम यह हुआ कि जब शेख़ साहिब के साथी मौलवी मुहम्मद सईद मसूदी और दूसरे मौलवियो के सामने पवित्र बाल रखा गया तो उन्होने फतवा दे दिया कि असली बाल बरामद हो गया है ।

पाकिस्तान रेडियो और पाकिस्तानी नेताओ की ओर से इसके बाद भी प्रोपेगैडा किया जाता रहा कि यह बाल असली नही परन्तु काश्मीर के मुसल्मान अपने धार्मिक नेताओ के फतवे से सन्तुष्ट हो गयें । पाकिस्तानी तानाशाह का षड्यत्र श्री लालबहादुर शास्त्री की दूर-दर्शिता से विफल हो गया ।

कुछ सप्ताह बाद ही श्री सादिक को काश्मीर का मुख्य मत्री बना दिया गया । शेख़ अब्दुल्ला और उनके साथियो को छोड दिया गया । श्री नेहरू ने एक और ख़तरा मोल लेकर शेख़ को पाकिस्तानी शासकों से काश्मीर की समस्या पर बातचीत करने के लियें पाकिस्तान जाने की

अनुमति दे दी ।

शेखअब्दुल्ला यह कह रहे थे कि पाकिस्तान से समझौता हो सकता है। वास्तव मे श्री नेहरू जानते थे कि समझौता नही हो सकता परन्तु वह चाहते थे कि शेख साहिब बातचीत करे । श्री नेहरू का ख्याल यह था कि शेख अब्दुल्ला निराश होकर लौटेगे तो उनकी विचारधारा बदल जायेगी । परन्तु शेख की कोई भी योजना जनरल अयूब खा ने स्वीकार नही की। शेख साहिब ने अब काश्मीर के दोनो भागो को मिला कर "स्वतत्र काश्मीर" की अमरीकी योजना पर सोचना शुरू कर दिया। इसके लिये उन्होने पाक अधिकृत काश्मीर के नेताओ से गुप्त रूप से बात-चीत की । परन्तु श्री नेहरू की अचानक मृत्यु हो जाने के कारण उन्हे लौट आना पडा । उनके दिल्ली लौटते ही अयूब सरकार ने पाक अधिकृत काश्मीर सरकार के प्रधान सरदार खुरशीद को डिस-मिस कर दिया और शेख से गुप्त बातचीत करने वाले काश्मीरी नेताओ को गिरफ्तार कर लिया ।

श्री लालबहादुर शास्त्री भारत के प्रधान मत्री बन चुके थे। अब शेख साहिब हज्ज का बहाना करके भारत से बाहर चले गये । अपने साथ वह अपने बेटे को भी ले गये । उन्होने अलजेरिया मे पाकिस्तानी नेताओ से और उनकी सहायता से चीन के प्रधान मत्री से बातचीत की । ऐसा मालूम होता है कि दोनो से उनका गठजोड हो गया था। इसके अनुसार ही शेख ने काश्मीर मे गोरिला युद्ध की धमकिया देना शुरू कर दिया । शायद उन्हे यह भी मालूम हो चुका था कि पाकिस्तान काश्मीर पर हमला करने के लिये तैयारिया कर रहा है ।

११

रणकच्छ और काश्मीर पर हमला

१९६५ मे पाकिस्तानी सेना ने पहले तो रणकच्छ पर और इसके बाद काश्मीर पर आक्रमण किया।

रणकच्छ की सीमा पर यह हमला एक गहरी चाल थी। पाकिस्तान ने सीमा का झगडा बना कर जब झडपे शुरू की तो भारत सरकार को इस बात की आशका नही थी कि पाकिस्तान हमला करेगा इसलिये सीमा पर सशस्त्र पुलिस ही रखी गई थी। पाकिस्तान ने इससे फायदा उठा कर सेना भेज दी जिसने टैको की सहायता से हमला कर दिया। भारत सरकार ने तुरन्त विमानो द्वारा अपनी सेनाये भेज दी। जब पाकिस्तानी सेना को परेशानी का सामना करना पडा तो पाकिस्तान सरकार की प्रार्थना पर ब्रिटिश सरकार ने युद्ध विराम की योजना पेश कर दी। ब्रिटिश सरकार के प्रधान मत्री ने यह सुझाव दिया कि रणकच्छ की सीमा का झगडा अन्तर्राष्ट्रीय अदालत मे पेश किया जाये और अदालत जो फैसला दे उसे दोनो देश स्वीकार कर ले। प्रधान मत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने यह सुझाव स्वीकार कर लिया।

अभी राष्ट्रीय अदालत मे मामला पेश ही हुआ था कि पाकिस्तान के शासको ने काश्मीर की सीमा पर अपनी सेनाओ को भेजना शुरू कर दिया। पजाब और राजस्थान की सीमाओ पर भी पाकिस्तानी सेनाये एकत्रित होने लगी। भारत को इस बात की अशका नही थी कि पाकि-

स्तान हमला करेगा। इस सम्बन्ध मे अब इस बात का रहस्योद्घाटन किया जा सकता है कि गुप्तचर विभाग को ऐसी सूचना मिली थी कि पाकिस्तान काश्मीर पर हमला करेगा परन्तु यह समझा गया कि वह एक झूठी सूचना है और पाकिस्तान के गुप्तचर विभाग ने भारत सरकार को भ्रम मे डालने के लिये चाल खेली है। परन्तु वास्तव मे यह सूचना ठीक थी और पाकिस्तान कई महीनो से बडे हमले के लिये तैयारिया कर रहा था।

पाकिस्तानी हमले की योजना यह थी कि पहले चरण मे काश्मीर मे हजारो सशस्त्र घुसपैठिये भेज दिये जाये। ये लोग श्रीनगर और इसके आस-पास के इलाको मे मस्जिदो, होटलो और अन्य स्थानो पर फकीरो, व्यापारियो और सैलानियो के वेप मे ठहरे और जब ६ अगस्त को शेख अब्दुल्ला की गिरफ्तारी की वर्षगाठ मनाने के लिये जलूस निकले तो ये लोग उसमे सम्मिलित होकर मुख्य मत्री और दूसरे मत्रियो की कोठियो पर हमले कर उनकी हत्या कर दे और रेडियो स्टेशन और सचिवालय आदि की इमारतो पर अधिकार कर ले। यह भी तय किया था कि रेडियो स्टेशन पर अधिकार करके वहा से "रैवुलीशनरी कौंसल" की स्थापना की घोषणा कर दी जाये और पाकिस्तान से सहायता की अपील की जाये और पाकिस्तानी यह कह कर कि काश्मीर मे विद्रोही जनता ने अपनी स्वतत्र सरकार की स्थापना कर के पाकिस्तान से सहायता की अपील की है, पाकिस्तानी सेना काश्मीर मे प्रवेश कर जाये।

ऐसा मालूम होता है कि पाकिस्तान के पश्चिम के मित्र-राष्ट्र किसी न किसी रूप मे पाकिस्तानी शासको से मिले हुए थे। पाकिस्तान मे अमरीका का सैनिक मिशन मौजूद था। यह हो नहीं सकता कि पाकिस्तान की इन तैयारियो का उसे कोई पता न हो। ब्रिटेन अधेरे मे हो इस पर भी विश्वास नही किया जा सकता। सम्भवत: दोनो यह

समझ रहे थे कि पाकिस्तान अपने हजारो सशस्त्र घुसपैठियो की सहायता से काश्मीर की वादी पर अधिकार कर लेगा और भारत इसके उत्तर मे पाकिस्तान पर हमला नही करेगा बल्कि काश्मीर मे मुकाबला करने की कोशिश करेगा। इस हालत मे यू० एन० ओ० की सुरक्षा समिति युद्ध-विराम का आदेश दे देगी और बीच-बचाव का नाम लेकर ऐसी स्थिति पैदा कर दी जायेगी कि पाकिस्तान अपना लक्ष्य सिद्ध करने मे सफल हो जायेगा। पाकिस्तानी हमले से पहले शेख अब्दुला के समर्थको ने श्रीनगर मे तथाकथित शान्तिमय "सत्याग्रह" आन्दोलन शुरू कर दिया था। उन दिनो मै श्रीनगर गया था। शेख साहिब के साथी मौलवी मसूदी ने मुझे अपने प्रधान कार्यालय मे निमन्त्रित किया। मौलवी साहिब ने बडे भोले अन्दाज मे कहा कि "मै और मेरे साथी गाधी जी के सिद्धान्तो पर विश्वास रखते है। कुछ युवक हिंसात्मक तरीको से काम कर रहे है। उन्हे इस मार्ग से हटाने के लिये अहिंसा के सिद्धान्तो के अनुसार आन्दोलन किया जा रहा है।"

मौलवी साहिब ने इसी भोले अन्दाज मे कहा कि सरकार और शेख साहिब मे समझौता हो सकता है।

मजे की बात यह है कि पाकिस्तान मे काश्मीर का विलय करने की माग करने वाली सस्था "काश्मीर पोलिटीकल कान्फ्रेंस" के अध्यक्ष श्री गुलाम मुहीउद्दीन करा ने भी मुझे यही कहा कि वह गाधी जी के सिद्धान्तों पर विश्वास करते है। मेरे मुस्करा देने पर उन्होने कहा कि—"क्या कोई पाकिस्तानी गाधी जी का श्रद्धालु नही हो सकता ?"

करा साहिब का कहना था कि वह राजनीति मे धर्म-निर्पेक्षता के सिद्धात पर भी विश्वास करते है और कि जब काश्मीर पाकिस्तान मे शामिल हो जायेगा तो वह पाकिस्तान को धर्म-निर्पेक्ष स्टेट बनाने के लिये आन्दोलन करेंगे।

मौलवी साहिब और करा साहिब की चालाकी को मै भली-भाति

जानता था। दोनो को निः सन्देह मालूम था कि पाकिस्तान हमला करने वाला है और मुझे विश्वास है कि दोनो को यह भी मालूम था कि पाकिस्तान के सशस्त्र घुसपैठिये काश्मीर मे घुस रहे है।

४ अगस्त १९६५ को दो मुसलमान गोजरो ने कई सशस्त्र पाकिस्तानियो को देखा। उन्हे उनकी गतिविधियो पर सदेह है। उन्होने पुलिस को सूचना दी। इस सूचना ने भारत सरकार को सतर्क कर दिया। सेना हरकत मे आ गई और मालूम हुआ कि हजारो सशस्त्र पाकिस्तानी कश्मीर मे घुस कर श्रीनगर और उसके हवाई अड्डे और रेडियो स्टेशन पर अधिकार करना चाहते है। ऐसे पाकिस्तानियो का एक गिरोह श्रीनगर की एक बस्ती बटमालू मे घुस आया था। दूसरा हवाई अड्डे के निकट वडगाव मे घुस गया था और तीसरा निशात बाग के निकट पहुच गया था। सेना ने इन तीनो ठिकानो पर हमला कर के घुसपैठियो का सफाया कर दिया था। परन्तु दूसरे हजारो पाकिस्तानी सीमावर्ती देहात पर हमले कर रहे थे। इनके विरुद्ध सेना ने कार्यवाही शुरू कर दी।

पाकिस्तान को शायद मालुम नही था कि श्रीनगर मे उसके घुसपैठियो का सफाया हो चुका है। घुसपैठियो की एक टोली जो बडे-बडे पोस्टर लेकर आई थी उसका भी सफाया कर दिया गया था। इन पोस्टरो मे "काश्मीर की जनता की इकलाबी कौसल" की स्थापना की घोषणा की गई थी। यह सभी पोस्टर छीन लिये गये परन्तु लाहौर और रावलपिण्डी के समाचार पत्रो ने अपने शासको की योजनानुसार इन पोस्टरो के फोटो प्रकाशित करते हुए दावा किया कि श्रीनगर की दीवारो पर यह पोस्टर लगे हुए है। एक समाचार पत्र ने लिखा कि काश्मीर मे माओ त्से तुग के तरीको के अनुसार युद्ध हो रहा है। इस पत्र (दैनिक मशरिक रावलपिण्डी) ने लिखा है कि हमे विश्वास है कि बटमालू की बस्ती मे "देश भक्त श्री करा" और उनके समर्थक स्वतत्रता सेना-

नियो की पूरी-पूरी सहायता करेगे । इस पत्र को यह मालूम नही था की बटमालू मे पाकिस्तानी घुसपैठियो का सफाया हो चुका है और करा को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया है ।

भारतीय सेना ने श्रीनगर से ९ मील की दूरी पर उडी से हमला करके पाकिस्तानी सेना को भगाते हुए पुछ को मिलने वाली सडक पर अधिकार कर लिया । यह भारतीय सेना की शानदार विजय थी ।

पाकिस्तानी सेना ने छम्ब और जोरिया पर हमला किया । इस हमले का प्रयोजन यह था कि जम्मू से श्रीनगर को मिलने वाली सडक काट दी जाये । इस जगह पाकिस्तानी सेना के अड्डे और छावनिया बहुत निकट थी । इसलिये पाकिस्तानी सेना को आगे बढने का अवसर मिल गया । इसके मुकाबले मे भारतीय सेना ने पजाब और राजस्थान मे एक साथ पाच स्थानो पर हमला कर दिया । राजस्थान की सीमा पार करने वाली सेना ने सिंध मे गदरा के शहर और रेलवे स्टेशन पर अधिकार कर लिया । अमृतसर से बढने वाली सेना ने वाहगा की सीमा पार कर तमाम रास्ते मे पाकिस्तानी सेना को खदेडते हुए इच्छोगिल नहर के इस पार डोगराई पर अधिकार करके नहर पार कर ली और लाहौर की ओर बढना शुरू कर दिया । लाहौर के हवाई अड्डे और शालामार बाग पर भारतीय तोपो के गोले गिरने लगे । एक और सेना ने खेमकरन से कस्सूर की ओर बढना शुरू कर दिया । डेरा बाबा नानक के क्षेत्र पर भी हमला किया गया । इस कार्यवाही का परिणाम यह हुआ कि छम्ब-जोरियो क्षेत्र मे पाकिस्तानी सेना का दबाव खतम हो गया ।

वास्तव मे पाकिस्तान के शासक यह समझ रहे थे कि भारत पजाब और राजस्थान से हमला नही करेगा और एक ओर पाकिस्तानी सेना जम्मू-श्रीनगर रोड काट देगी और दूसरी ओर घुसपैठिये श्रीनगर के हवाई अड्डे और शहर पर अधिकार कर लेगे और ऐसा होते ही उसके मित्र-देश युद्ध विराम के लिये भारत पर दबाव डालना शुरू कर देगे

परन्तु न तो पाकिस्तान को पजाब और सिंध पर जवाबी हमले की आशका थी न ही पाकिस्तान के मित्र-देश यह समझते थे कि पाकिस्तान सेना इतनी फिसड्डी निकलेगी।

खेमकरन के मोर्चे पर पाकिस्तान के एक पूरे टैंक-डिवीजन ने जवाबी हमला किया। भारतीय सेना ने पीछे हट कर एकाएक तीन ओर से हमला करके पाकिस्तान की यह टैंक सेना तबाह कर दी। इस लडाई मे पाकिस्तानी सिपाहियो ने अपनी जाने बचाने के लिए ५० से अधिक पैटन टैंक भारतीय सेना के हवाले करके शस्त्र डाल दिये।

पाकिस्तानी सेना का एक मेजर जनरल और कई दूसरे सीनियर अफसर मारे गये।

भारतीय सेना ने हुडयारा पर अधिकार करके बरकी के शहर पर भी अधिकार कर लिया और नहर पर अपने मोर्चे बना लिये। बरकी पाकिस्तानी सेना के जनरल बखतेयार राना का शहर था। यह जगह भी लाहौर को जाने वाले मार्ग पर है, यहा से लाहौर छावनी साफ दिखाई देती है।

जम्मू की सीमा पार कर भारतीय सेना ने स्यालकोट के मोर्चे पर हमला कर दिया। भारतीय सेना तजी से आगे बढ कर स्यालकोट छावनी पर गोले बरसाने लग गई। इस मोर्चे पर टैंक सेनाओ मे घमासान का युद्ध हुआ। पाकिस्तान के तीन सौ से अधिक टैंक नष्ट हो गये।

पाकिस्तान की वायु सेना ने लाहौर के मोर्चे पर हमला होते ही पजाब पर सैकडो सिपाही पैराशूटो से गिरा दिये परन्तु इन्हे हमला करने का अवसर ही नही मिला। पजाब के वीर किसानो ने इनका सफाया कर दिया। भारत की वायु सेना ने लाहौर, सरगोधा, गुजरात लालामूसा, रावलपिण्डी और पिशावर तक बम वर्षा की।

लाहौर से जवाबी हमले का आदेश देते हुए अयूब खा ने दावा

किया था कि पाकिस्तानी सेना अमृतसर पर अधिकार करके दिल्ली तक पहुच कर दम लेगी परन्तु उसकी सेना खेमकरन और इच्छोगिल नहर से भी आगे न बढ सकी। श्री भुट्टो का कहना है कि उस समय अपनी हार देख कर जनरल अयूब खा भयभीत होकर थर-थर काप रहे थे। उस समय एयर मार्शल असगर खान अयूब को लेकर चीन गये। चीन से सहायता के लिये भीख मागी गई। चीन ने भारत को धमकिया देना शुरू कर दिया परन्तु पाकिस्तानी सेना के हौसले टूट चुके थे। अमरीका और रूस का सहारा लेकर अयूब खा ने युद्ध विराम की सधि पर हस्ताक्षर कर दिये। इस तरह से अयूब की सैनिक तानाशाही को बुरी तरह से पराजित होना पडा।

अयूब खा ने काश्मीर पर हमले का रास्ता क्यो अपनाया था ? विद्यार्थी नेता श्री तारिक अली ने लिखा है कि अयूब शाही अपने देश मे बदनाम हो रही थी। जनता मे असतोष बढ रहा था। पाकिस्तान के दोनो प्रान्तो मे अयूब शाही से छुटकारा पाने के लिये आन्दोलन हो रहा था। देश की आर्थिक स्थिति बिगड रही थी। इसलिये अयूब खा ने अपने आप को वीर सिद्ध करने के लिये और जनता का ध्यान असली समस्याओ से हटाने के लिये भारत से टक्कर लेने का फैसला किया था परन्तु उसे इस बात की आशका नही थी कि उसे मुह की खानी पडेगी और यही हार अन्त मे उसकी तानाशाही के विनाश का कारण बनेगी।

१२
पाकिस्तान में विद्रोह : अयूबशाही का अन्त

१९६५ का युद्ध अयूब खा को बहुत महगा पडा । युद्ध का अन्त होने पर जब ताशकद मे दोनो देशो मे समझौता हुआ तो अयूब खा और भुट्टो दोनो बडी मुश्किल मे थे । भुट्टो ने अपनी चमडी बचाने के लिये समझौते का विरोध करना शुरू कर दिया और पाकिस्तानी सेना की हार के लिये अयूब खा को दोषी ठहरा दिया । इसके फलस्वरूप भुट्टो को मत्रिमण्डल से अलग होना पडा । इससे भुट्टो को अयूब खा और भारत के विरुद्ध प्रोपेगैडा करने का अवसर मिल गया । उन्होने कहना शुरू कर दिया कि सैनिक तानाशाही को खतम करके और जनता को शासन के अधिकार देकर ही पाकिस्तान सफल हो सकता है । इस से तानाशाही से दुखित जनता की निगाहो मे भुट्टो को हीरो बनने का अवसर मिल गया ।

पाकिस्तानी सेना मे भी असतोष फैल रहा था । कई सीनियर अफसर इस हार मे सटपटा रहे थे । उन्हे जनता को मुह दिखाने की हिम्मत भी नही होती थी । उन्होने भी दबे शब्दो मे अयूब खा को दोषी ठहराना शुरू कर दिया । अयूब खा ने सैनिक विद्रोह के भय के कारण एक दर्जन से अधिक जनरलो और दूसरे सीनियर अफसरो को सेना से अलग कर दिया ।

यदि अयूब खा दूरदर्शी होते तो तानाशाही खतम करके जनता को

प्रजातन्त्र के अधिकार दे देते परन्तु युद्ध के मोर्चे पर हार कर बदनाम होने पर भी उन्होने अकलमन्दी से काम लेने की आवश्यकता का अनुभव न किया। उन्होने फिर अपने विरोधियो को गिरफ्तार करने का सिलसिला शुरू कर दिया। एक दर्जन से अधिक जनरलो को सेना से अलग कर देने का परिणाम यह हुआ कि इन लोगो ने अब खुल कर अयूब का विरोध शुरू कर दिया। जनरल आजम खा, एयर मार्शल असगर खा और दूसरे अफसर जो पहले ही अलग किये गये थे इन से मिल गये। इनका सम्बध बडे-बडे जमीदार परिवारो से था। इनके सम्बधी मित्र और साथी सेना और सरकार मे भी थे। यह लोग भी अयूब खा के विरोधी हो गये। १९ नवम्बर १९६६ को लन्दन के समाचार-पत्र "टैलीग्राफ" ने कराची स्थित अपने सवाददाता द्वारा मिले इस समाचार को प्रकाशित करके सनसनी फैला दी कि

> अयूब खा की सरकार का तख्ता उलट देने के एक सनसनी पूर्ण षड्यन्त्र का पता लगा है। इस सूचना के अनुसार एक प्रसिद्ध नवाब (यह सकेत नवाब कालाबाग की ओर था जिन्हे पश्चिमी पाकिस्तान के राज्यपाल के पद से पृथक किया गया था) ने जनरल अयूब खा का शासन खतम करने के लिये जनरलो की एक गुप्त कौंसिल बनाई है।

इसी पत्र ने लिखा कि पाकिस्तान मे सैनिक पराजय से मायूसी फैली हुई है और चीन से पाकिस्तान के गठजोड का विरोध किया जा रहा है। टैलीग्राफ ने लिखा कि जिन जनरलो को भारत से युद्ध मे पाकिस्तान की हार के लिये दोषी ठहरा कर सेना से पृथक कर दिया गया है वास्तव मे उनका दोप यह है कि वह चीन से पाकिस्तान के गठजोड का विरोध कर रहे थे। उनका कहना है कि यह नीति पाकिस्तान को विनाश की ओर ले जायेगी। नवम्बर १९६६ के अन्त मे कई विदेशी समाचार पत्रो ने अयूब खा के बेटे गोहर अयूब और उसके

बहनोई मेजर जनरल हबीबुलरहमान की काली करतूतो का कच्चा चिट्ठा प्रकाशित किया। दोनो ने सेना से त्यागपत्र देकर "गाधारा इडस्ट्रीज" के नाम से एक कम्पनी स्थापित की थी। सरकार ने उसे लाखो रुपये दिये। इससे दोनो ने दर्जनो पाकिस्तानी और विदेशी कम्पनिया और कारखाने खरीद लिये। देखते ही देखते उन्होने करोडो की जायदाद बना ली और अब समाचार मिल रहे थे कि गोहर अयूब अपने पिना की तानाशाही के खतम हो जाने की आशका से अपनी पूजी इटली और स्विटजरलैण्ड मे गुप्त रूप से भेज रहा है। यह आरोप भी लगाया जा रहा था कि अयूब खा के दो दामादो नजीब और याकूब ने बडे-बडे जमीदारो पर नाजायज दबाव डाल कर उनकी हजारो एकड भूमि कौडियो के मोल प्राप्त करली थी।

१९६२ का एक स्कैण्डल फिर जनता के मामने गया। अयूब खा के एक सम्बधी कर्नल मुहम्मद यूसफ ने पजाब के एक भूतपूर्व मत्री और प्रमुख व्यापारी सैयद अली निवाज गरदेजी की जर्मन पत्नी क्रिस्टयाना को किसी तरह काबू कर लिया था। गरदेजी ने केस किया। इसकी कार्यवाई के दौरान मालूम हुआ कि इस स्त्री को भगाकर लाहौर मे पजाब के सैनिक राज्यपाल जनरल बख्तियार राना आफ बरकी की कोठी पर रखा गया था। जब अदालत मे यह बात आई तो समाचार पत्रो के सम्पादको को धमकी दी गई कि यदि उन्होने यह समाचार प्रकाशित किया तो उन्हे पाकिस्तान सुरक्षा कानून के अधीन गिरफ्तार कर लिया जायेगा। उस समय तो यह मामला दब गया परन्तु अब १९६५ के युद्ध मे पाकिस्तान की हार के बाद जनता के सामने आ गया। जनरल बरकी के सम्बध मे यह अफवाहे फैल रही थी कि वह अयूब खा का तख्ता उलट देने के लिये षड्यन्त्र कर रहे है। अयूब खा ने खामोशी से उन्हे रिटायर कर दिया।

१९६७ मे अयूब खा के विरोधियो की राजनीतिक गतिविधिया

रहा था ।

अयूब खा देश की समस्याओ का समाधान करने की बजाय अब भी पुराने हथकण्डो का प्रयोग कर के अपने हाथ मजबूत करना चाहते थे। वह अपनी तानाशाही को इस्लाम के सिद्धान्तो के अनुकूल बता कर विद्यार्थियो को इस्लाम के शत्रु ठहरा रहे थे। ढाका मे वकीलो की एक बैठक मे भाषण देते हुए उन्होने कहा कि

"मै किसी हालत मे भी ससदीय प्रशासन स्थापित करने के लिये तैयार नही क्योकि यह शासन प्रणाली इस्लाम के सिद्धान्तो के विरुद्ध है ।"

उन्होने पूर्वी बगाल को घरेलू मामलो मे अधिक अधिकार देने की माग भी ठुकरा दी और कहा कि पूर्वी बगाल को पहले ही बहुत स्वतत्रता मिली हुई है ।

इस बैठक मे अयूब खा के एक पिट्ठू ने एक पैम्फलैट बाटा । इसमे तानाशाह की प्रशसा करते हुए लिखा था कि "अल्लाह ने पाकिस्तान का निर्माण किया है और अयूब खा ने इसकी रक्षा की है ।"

अयूब खा के पिट्ठुओ ने भुट्टो की कडी आलोचना करते हुए उन पर आरोप लगाया कि वह भारत के एजेन्ट हैं और पाकिस्तान को तबाह करना चाहते है। मन्त्रियो ने धमकिया दी कि उनके विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोपो मे मुकदमा चलाया जायेगा ।

भुट्टो जगह-जगह भाषणो मे कह रहे थे कि अयूब खा ने ताशकन्द मे एक गुप्त समझौता करके भारत से काश्मीर के प्रश्न पर सौदेबाजी करली है। वह यह दावा कर रहे थे कि उन्हे इस सौदेबाजी का पूरा ब्यौरा मालूम है और वह इसके सम्बध मे गुप्त दस्तावेजात प्रकाशित करके अयूब खा का भाण्डा फोड देगे। इससे भी आगे बढ कर भुट्टो ने कहना शुरू किया कि पाकिस्तान को समस्त काश्मीर पर ही नही बल्कि असम और बगाल के कई भागों पर भी अधिकार करना चाहिए ।

उनका कहना था कि अयूब खा कायर है। उसकी तानाशाही का अन्त करके एक मजबूत पाकिस्तान सफलता से भारत मे टक्कर ले सकता है। इसके उत्तर मे अयूब खा के समर्थक भुट्टो की गिरफ्तारी की माग कर रहे थे।

१९६८ मे समस्त देश मे विद्रोह के चिन्ह दिखाई दे रहे थे। बिलोचिस्तान मे जहा पजाबियो को बसाया जा रहा था और बिलोचियो को दबाने के लिये पजाबी पुलिस का प्रयोग किया जा रहा था अक्तूबर और नवम्बर मे पजाबी पुलिस और बिलोची विद्रोहियो मे कई झडपे हुई। काबुल के समाचार पत्रो मे प्रकाशित समाचारो के अनुसार दो झडपो मे कम से कम ७० पजाबी सिपाही मारे गये। अयूब सरकार ने ५ हजार से अधिक सैनिक विद्रोहियो पर हमले के लिये भेज दिये। विमानों से विद्रोहियो के क्षेत्रो पर बमवर्षा भी कि गई। बिलोचियो को शिकायत थी कि बगालियो की भाति उनसे भी दूसरी श्रेणी के नागरिको जैसा बर्ताव किया जा रहा है। प्रान्त मे लगभग सभी व्यापार पजाबियो के हाथो से चला गया था, यही हाल नौकरियो का था। बिलोचियो को दबा देने के लिये पजाबी नागरिको मे शस्त्र बाटे जा रहे थे। बिलोचिस्तान की नेशनल आवामी पार्टी की ओर से माग की जा रही थी कि बिलोचियो को आत्म-निर्णय का अधिकार दिया जाये।

सीमा प्रान्त मे खा वली खा की नेशनल अवामी पार्टी ने माग की कि पश्तो बोलने वाले सभी क्षेत्रो को मिला कर पठानिस्तान का प्रान्त बनाया जाये और इसे आन्तरिक स्वतत्रता दे दी जाये।

सिंध मे "जय सिंध" का आन्दोलन चल रहा था। सिंधी देश भक्तो का कहना था कि पाकिस्तान बनने से उनकी भाषा और सस्कृति खतरे मे पड गई है। उर्दू के लिये सिंधी भाषा को खतम किया जा रहा है और सिंध के व्यापार पर पजाब, दिल्ली और उत्तरप्रदेश से आये हुए लोग अधिकार जमाते जा रहे है। सिंधी नेताओ ने अलग प्रान्त बनाने के लिये

आन्दोलन की तैयारिया शुरू कर दी थी। बिलोचिस्तान, सीमा प्रान्त और पूर्वी बगाल के देशभक्त उनकी माग का समर्थन कर रहे थे ।

पजाब मे मिया मुमताज दौलताना की कौसल मुस्लिम लीग, नवाबजादा नसुरल्ला की नेशनल डैमोक्रेटिक पार्टी और स्वर्गीय मिया इफतेख्वारुद्दीन के समर्थक मिलकर अयूब शाही के विरुद्ध आन्दोलन की तैयारिया कर रहे थे। भूतपूर्व एयर मार्शल असगर खा, जनरल आजम खा, जनरल जेलानी और अन्य कई भूतपूर्व सैनिक अधिकारी अयूब खा को ललकार रहे थे ।

पूर्वी पाकिस्तान मे शेख मुजीबुर्रहमान की अवामी लीग ने पूर्वी बगाल के लिये सम्पूर्ण आन्तरिक स्वतत्रता की माग करते हुये छ बुनियादी मागो के लिये सघर्ष करने की तैयारिया शुरू कर दी। उनका कहना था कि पूर्वी बगाल रक्षा और विदेशी विभाग के अतिरिक्त दूसरे सभी मामलो के अधिकार अपने पास रखेगा। बगालियो को शिकायत थी कि यद्यपि उनकी कोशिशो से १९४७ मे पाकिस्तान की स्थापना हुई थी परन्तु उनके प्रान्त को पश्चिम का उपनिवेश बना लिया गया है। बगाली भाषा और सभ्यता का विनाश किया जा रहा है। सरकारी नौकरियो और व्यापार मे बगालियो को उनकी जनसख्या के अनुसार भाग नही दिया जाता। पूर्वी बगाल के माल की एक्सपोर्ट से विदेशी मुद्रा की मिलने वाली आमदनी पश्चिम मे खर्च कर दी जाती है। पश्चिम के व्यापारियो ने बगाल मे व्यापार पर अधिकार कर लिया है और जब भी बगाली अपने अधिकारो के लिये माग करते है उन्हे कुचल दिया जाता है ।

मौलाना भाषानी जो किसी समय सोहरावर्दी के साथी थे अब अलग होकर नेशनल अवामी पार्टी के अध्यक्ष थे। उन्होने चीन का दौरा करके दोनो देशो मे मित्रता कराई थी। इसलिये वह अयूब खा के समर्थक बन गये परन्तु अब वह भी विरोधियो से मिल रहे थे। उनका कहना था कि तानाशाही का अन्त हुए बिना पाकिस्तान की जनता को न्याय नही

मिलेगा।

समस्त देश मे अयूब शाही के विरुद्ध प्रदर्शन हुए। इनमे जनता के अधिकारो के लिये मागे की गई। यह माग भी की गई कि समाचार पत्रो पर से सैंमर का प्रतिबध हटा दिया जाये और सभी राजनीतिक कैदियो और नजरबन्दो को रिहा कर दिया जाये। इसका उत्तर यह दिया गया कि अवामी लीग के नेता शेख़ मुजीबुर्रहमान को सरकार का तख्ता उलट देने के झूठे आरोप मे गिरफ्तार कर लिया गया। इससे पहले कुछ ही दिनो मे चार स्थानो पर उन्हे गिरफ्तार किया गया था परन्तु वह हर बार जमानत पर रिहा हो जाते। इस पर उन्हे षड्यत्र के केस मे पकड लिया गया। यह आरोप लगाया गया कि वह भारत की सहायता से सैनिक विद्रोह के लिये तैयारिया कर रहे है। सीमाप्रान्त की नेशनल अवामी पार्टी के अध्यक्ष खा वली खा को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

६ नवम्बर १९६८ को एक छोटी-सी घटना ने अयूब खा की तानाशाही के विनाश की बुनियाद रख दी। उस दिन खैबर के दर्रे मे कस्टम्ज के अधिकारियो ने ७० विद्यार्थियो को स्मगलिग के आरोप मे पकड लिया। यह विद्यार्थी लण्डी कोतल की फ्री मार्केट से कुछ माल लाये थे। अधिकारियो ने उन्हे बुरी तरह से पीटा। रावलपिण्डी मे आने पर उन्हे मालूम हुआ कि श्री भुट्टो आये हुये है। वह उनसे मिलना चाहते थे। रावलपिण्डी मे पहले ही एक कालेज मे हडताल हो रही थी। उन्होने एक विशाल प्रदर्शन किया। अयूब के विरुद्ध नारे लगाये और सरकारी गाडियो को रोककर उनसे सरकारी झडे उतारकर फाड दिये और अधिकारियो को अयूब के विरुद्ध नारे लगाने के लिये बाध्य किया। जब जिलाधीश ने रोका तो विद्यार्थियो ने उसके कपडे फा . कर उसे नगा किया, उस पर थूका और उसे नग्नावस्था मे मार्च करने और "अयूब शाही मुर्दाबाद" के नारे लगाने के लिये मजबूर किया। इसके बाद विद्यार्थियो ने उस होटल की ओर मार्च किया जहा श्री

भुट्टो ठहरे हुए थे। पुलिस ने उन्हे रोका, लाठी चाज किया और कई एक के सिर फोड दिये। एक विद्यार्थी अब्दुल हमीद वही मर गया। क्रोध मे आकर विद्यार्थियो ने पुलिस पर पत्थरो और ईटो की वर्षा की और लौटते हुए जगह-जगह सरकारी गाडियो और जायदादो पर हमला किया और उन्हे आग लगा दी। सरकार ने जलसो और जलूसो पर प्रतिवध लगा दिया परन्तु दूसरे दिन १५ हजार से अधिक विद्यार्थियो ने जलूस निकाल कर सरकारी आदेश की धज्जिया उडा मार्ग मे जिस दुकान पर अयूब खा का फोटो दिखाई दिया उस पर हमला कर फोटो को जला दिया। एक घण्टे के अन्दर-अन्दर यह हालत हो गई कि रावलपिण्डी की किसी दुकान पर अयूब खा का फोटो नही रहा। विद्यार्थियो ने सरकारी अधिकारियो की गाडियो को रोका। कार्यालयो पर हमला किया और अधिकारियो को पकड कर बाजार मे घसीट-घसीट कर उन्हे अयूब खा के विरुद्ध नारे लगाने के लिये मजबूर किया। जलूस मे साधारण जनता भी सम्मिलित हो गई। उसने फैक्ट्रियो, वैको और पूजीपतियो की कोठियो को लूट लिया। देखते-देखते सारा शहर काबू से वाहर हो गया। सरकारी मशीनरी टूट गई। सरकार ने दमन चक्र तो चलाया परन्तु हफ्ते भर के अन्दर-अन्दर यह आन्दोलन समस्त देश मे फैल गया। यद्यपि पुलिस ने कई विद्यार्थी नेताओ को पकड लिया परन्तु विद्रोह जारी रहा। लाहौर, कराची, पिशावर, हैदराबाद, ढाका, शिलाग, चटगाव और दूसरे शहरो मे विद्यार्थियो और पुलिस मे झडपे हुईं। सरकार ने सभी कालेज और विश्वविद्यालय वन्द कर दिये परन्तु आन्दोलन तेज होता गया। फैक्ट्रियो मे काम करने वाले और बेकार युवक भी आन्दोलन मे सम्मिलित होने लगे।

१० नवम्बर को अयूब खा पिशावर मे एक सरकारी जलसे मे भाषण देने के लिये पहुचे। पिशावर खा वली खा की नेशनल अवामी पार्टी का गढ था। सरकारी जलसे से पहले पार्टी ने एक शानदार जलूस

निकाला। पठानो के इतिहास मे पहली बार हजारो पठान स्त्रिया जलूस मे सम्मिलित हुई। शायद अयूब खा अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहते थे। केंद्रीय खाद्य मत्री नवाब अब्दुलगफूर खान आफ होती जो चीनी की सबसे बडी मिल के मालिक थे, अयूब खा के साथ थे। उन दिनो देश मे चीनी की चोर-बाजारी बढ रही थी। जनता बहुत दुखी थी। नवाब साहिब जैसे ही अयूब खा का स्वागत करने के लिये उठे, लोगो ने शोर मचा दिया और नारे लगाये कि इस चीनी-चोर को गिरफ्तार किया जाये। अयूब खा जनता को शान्त कराने के लिये उठे तो एक पठान युवक हाशम खा ने उन पर गोली चला दी। परिणाम यह हुआ कि भगदड मच गई। लोग भागने लगे। अयूब खा अपनी जान बचाने के लिये एक सोफे के नीचे छुप गये। हमला करने वाला गिरफ्तार कर लिया गया परन्तु अयूब खा काफी देर तक छुपे रहे। बाद मे वह भाषण दिये बिना सैनिको की रक्षा मे भाग गये। हाशम ने पुलिस को बताया कि मुझे इस बात का दुख है कि मै इस जालिम को जिसने दस वर्षों से जनता को गुलाम बना रखा है मौत के घाट उतार नही सका।

अयूब खा ने इस घटना से भी कुछ नही सीखा। उसके आदेश से भुट्टो और बहुत से विद्यार्थी नेताओ को शासन-मर्यादा भग करने के आरोप मे गिरफ्तार कर लिया गया।

नवम्बर के तीसरे सप्ताह मे लन्दन के दैनिक "टैलीग्राफ" ने लिखा कि पाकिस्तानी सेना मे भी अयूब खा का विरोध फैल रहा है। अब ऐसी स्थिति पैदा हो गई है कि अयूब खा अपनी शासन सत्ता की रक्षा के लिये सेना से भी सहायता की आशा नही कर सकते।

ऐसे समय जब समस्त देश मे विद्रोह फैल रहा था, सूचना विभाग के मत्री श्री शहाबुद्दीन ने एक बयान मे कहा कि पाकिस्तान के लोगों को किसी भी स्वतत्र देश से बढ कर प्रजातत्र के अधिकार मिले हुए है।

दूसरी ओर पश्चिमी पाकिस्तान के राज्यपाल जनरल मूसा ने रेडियो पर भाषण देते हुए कहा कि कानून तोडने वाले नेताओं को सरकार कुचल देगी।

१९ नवम्बर को लाहौर मे एक जलूस पर हमला करके पुलिस ने कुछ युवको को पकड कर नगा कर दिया और मार पीट की। दूसरे दिन हजारो स्त्रिया मैदान मे निकल आईं। पेशावर मे सरकारी मुस्लिम लीग और अमरीकन सूचना कार्यालय की इमारतो को जला दिया गया। रावलपिण्डी मे समस्त आबादी सामने आ गई। छ घण्टो तक पुलिस और जनता मे लडाई होती रही।

पूर्वी बगाल की जनता यह विद्रोह देख कर खामोश नही रह सकती थी। विद्यार्थियो मे विद्रोह की आग भडक रही थी। उन्हे भयभीत करने के लिये अयूब खा के पिट्ठुओ ने विद्यार्थियो को धमकाना शुरू कर दिया। विद्यार्थियो ने ऐसे एक युवक सईदरहमान को गोली का निशाना बना दिया। इस युवक ने गवर्नर मुनहम खा◻ के इशारे पर सरकारी विद्यार्थी सघ बनाया था। इससे टोडियो के हौसले टूट गये।

६ दिसम्बर को मौलाना भाषानी ने हजारो विद्यार्थियो और किसानो के जलसे मे भाषण देते हुए कहा कि बगाल के लोग सम्पूर्ण आन्तरिक स्वतत्रता प्राप्त किये बिना चैन नही लेंगे और यह लक्ष्य भारी आन्दोलन शुरू किये बिना सिद्ध नही हो सकता। उन्होने दूसरे दिन के लिए आम हडताल की घोषणा की। सरकार ने धारा १४४ लागू कर दी थी परन्तु हजारो विद्यार्थियो ने कानून भग कर के जलूस निकाला। पुलिस और सेना ने कई बार गोली चलाई। एक बीस वर्षीय कर्मचारी अब्दुलमजीद मारा गया और बीस से अधिक घायल हो गये। उसी

◻ मुनहम खा को अक्तूबर १९७१ मे गोरिलो ने गोली का निशाना बना दिया था।

शाम एक विशाल जलसे मे भाषण देते हुए मौलाना ने घोषणा की कि कल फिर हडताल होगी और मै स्वय राज्य भवन के सामने प्रदर्शन करूगा। १६ दिसम्बर को फिर हडताल थी। अयूब खा दुर्भाग्यवश इस दिन अपने समर्थको को थपकी देने के लिये ढाका पहुचे। लाखो बगालियो ने उनके विरुद्ध नारे लगाये। सेना ने उन पर गोली चलाई। पूर्वी बगाल मे एक हजार से अधिक व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया गया। सभी बडे-बडे नगरो मे पुलिस और जनता मे टकराव हुआ। अयूब खा मायूसी से लौट गये। उसी दिन एयर मार्शल असगर खा का ढाका मे भव्य स्वागत किया गया। कर्मचारियो के जलसे मे भाषण देते हुए उन्होने सरकार को चेतावनी दी कि जनता के विरुद्ध सैनिक-शक्ति का प्रयोग करने से समस्त देश मे आग लग जायेगी। उन्होने सेना से कहा कि वह राजनीति मे दिलचस्पी न ले।

मौलाना भाषानी से भेंट करने के बाद एयर मार्शल असगर खा ने कहा कि पूर्वी बगाल के लोग देशभक्त है। उन्होने अपील की कि राष्ट्रपति के चुनाव मे सभी विरोधी दल मिलकर अयूब खा का मुकाबला करे।

इस दौरान रावलपिण्डी मे अयूब खा के एक पिट्ठू शेर बहादुर ने रावलपिण्डी के ही एक पत्रकार पर गोली चला कर उसे घायल कर दिया था। इस पर रोष प्रकट करने के लिये सभी पत्रकारो ने हडताल कर दी। पत्रकारो ने अपनी मागे स्वीकार कराने के लिये भी आन्दोलन शुरू कर दिया। उनकी सब से बडी माग यह थी कि वह सरकारी अध्यादेश कैंसल कर दिया जाये जिसके अनुसार किसी आपत्तिजनक लेख पर किसी भी सम्पादक, रिपोर्टर और कम्पाजिटर को गिरफ्तार करके मुकदमा चलाये बिना नजरबद किया जा सकता है।

जनवरी १६६६ मे श्री भुट्टो की पीपल्ज पार्टी के अतिरिक्त सभी दूसरे विरोधी दलो ने एक सयुक्त मोर्चा स्थापित कर लिया। मोर्चे ने

कम-से-कम मागो का जो चार्टर तैयार किया उसमे कहा गया कि पाकिस्तान मे ससदीय फैडरल शासन व्यवस्था लागू की जाये। प्रत्येक बालिग को मतदान का अधिकार दिया जाये और शेख मुजीबुर्रहमान भुट्टो, अब्दुल समद और वली खा सहित सभी राजनीतिक कैदियो को तुरन्त मुक्त कर दिया जाये।

अयूब खा ने अब भी कुछ नही सीखा था। ३० दिसम्बर १९६८ को सरकारी मुस्लिम लीग के कार्यकर्ताओ की बैठक मे भाषण देते हुए उन्होने कहा

"मेरे विरोधी जनता, पाकिस्तान और इस्लाम के शत्रु है। मै उनके जलूसो से भयभीत होने वाला नही। यह लोग मेरी सरकार का तख्ता उलट देने मे सफल नही होगे। मै उन्हे चेतावनी देना चाहता हू कि वर्तमान शासन प्रणाली को तोडने से समस्त देश मे गृहयुद्ध शुरू हो जायेगा और जगह-जगह लहू की नदिया बहने लग जायेगी।"

ढाका के विद्यार्थियो ने एक सघर्ष समिति बनाई और दूसरे विरोधी दलो के आन्दोलन मे भाग लेने की घोषणा की। समिति ने २१ मागो का चार्टर तैयार किया। इसमे कहा गया कि केन्द्र मे ऐसी सरकार स्थापित की जाये जिसके पास केवल सुरक्षा और करसी के अधिकार हो। बाकी सभी अधिकार प्रान्तीय सरकारो को दे दिये जाये। बिलोचिस्तान, सिध और सीमा प्रान्त की एक सब-फैडरेशन बना करके केन्द्र से उसका सम्बध स्थापित किया जाये और पाकिस्तान पश्चिम के सभी सैनिक गुट्टो से अलग हो जाये।

जनवरी मे ढाका मे कई बार गोली चली परन्तु आन्दोलन की गति तीव्र होती गई। जनता का साहस बढता ही गया। विरोधी दलो ने घोषणा की कि ११ फरवरी से मागे स्वीकार कराने के लिये सघर्ष शुरू कर दिया जाये।

३० जनवरी को मेजर जनरल जेलानी ने सघर्ष मे सम्मिलित होने की घोषणा कर दी।

अयूब खा अब भी समझ रहे थे कि जनता को दबाया जा सकता है। उनके एक एजेन्ट मिर्जा शमसी ने गोहर अयूब के कहने पर कराची मे एक जनसमूह पर गोली चला दी। जनसमूह ने क्रोध मे आकर अयूब के समर्थको की पाच सौ से अधिक दुकाने और १०० से अधिक मकान जला दिये। सेना और पुलिस को बुलाया गया। ७०० से अधिक व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया गया। अयूब के विरोधियो ने इसके जवाब मे अयूब के दो समर्थको को जिन्दा जला दिया।

अयूब ने अब हवा का रुख बदलने के लिये एक और चाल चली। उसने भारत को काश्मीर के प्रश्न पर धमकिया देना शुरू कर दिया और कहा कि यदि भारत सरकार सीधे हाथो समस्या का समाधान नही करेगी तो पाकिस्तान दूसरे तरीको का प्रयोग करेगा। इसके साथ ही अयूब सरकार ने किराये के कुछ सशस्त्र मिजो गद्दारो से भारत की सीमा-वर्ती चौकियो पर हमला करा दिया परन्तु आक्रमणकारियो को मुह की खानी पडी। अयूब खा जनता का ध्यान अपने आन्दोलन से हटाने मे सफल न हुए। लाहौर, कराची, रावलपिण्डी और लायलपुर मे आन्दोलन चलाने वालो ने सरकारी जायदादो पर हमले करना जारी रखा। लाहौर मे पुलिस के एक आई० जी० को जनसमूह ने पकड कर नगा कर दिया और प्रदर्शनकारियो का नेतृत्व करने के लिये मजबूर कर दिया।

स्थिति काबू से बाहर होते देख कर अयूब खा ने रेडियो पर भाषण देते हुए घोषणा की कि वह जनता के हित के लिये राजनीतिक नेताओ से बातचीत करने के लिये तैयार है। परन्तु वह केवल "जिम्मेदार विरोधी दलो" से बातचीत करेंगे और कोई ऐसा सुझाव स्वीकार नही करेंगे जिससे पाकिस्तान की एकता को क्षति पहुचे।

विरोधी दलो ने यह पेशकश अस्वीकार कर दी और अपना आन्दोलन

जारी रखने की घोषणा कर दी ।

अयूब खा सरकारी मुस्लिम लीग की कार्यकारिणी समिति के अधिवेशन मे भाग लेने के लिए ढाका पहुचे । सारे शहर ने हडताल की और राज भवन के सामने प्रदर्शन किया । ढाका से ६० मील दक्षिण पूर्व मे थागिल मे प्रदर्शनकारियो ने सरकारी कार्यालयो पर हमला करके आग लगा दी ।

अयूब खा ने लाहौर मे डेमोक्रेटिक एक्शन कमेटी के नेताओ से बात-चीत शुरू की । उन्होने कहा कि वली खा और भुट्टो को रिहा करने के लिए तैयार हू परन्तु शेख मुजीबुर्रहमान को रिहा नही किया जा सकता । अधिक से अधिक यही किया जा सकता है कि उन्हे बातचीत मे भाग लेने का अवसर देने के लिए पैरोल पर कुछ दिन के लिए रिहा कर दिया जायेगा । पश्चिम और पूर्व मे फूट डालने के लिये यह एक गहरी चाल थी । इसलिए विरोधी दलो ने उनकी पेशकश ठुकरा दी ।

इस सम्बन्ध मे यह महत्वपूर्ण बात है कि जिस समय अयूब खा विरोधी दलो के नेताओ से यह बात-चीत कर रहे थे, वह और उनके साथ जनरल अपने कुछ पिट्ठू नेता मित्रो से गुप्त रूप मे साजबाज़ कर रहे थे । जमायत इस्लाम के नेता इस साजबाज़ मे भाग ले रहे थे । सैनिक अधिकारी सैनिक शासन लागू करने और अयूब खा की शासन सत्ता को बचाने के लिए तैयारिया कर रहे थे । सैनिक शासन लागू करने की तारीख तै हो चुकी थी और सैनिक अध्यादेश छप कर मिल गये थे परन्तु एकाएक पूर्वी बगाल की खतरनाक स्थिति के कारण सेना ने अपना फैसला स्थगित कर दिया । अयूब खा के भूतपूर्व कानून मत्री श्री मुहम्मद मुनीर ने "पाकिस्तान टाइम्ज" मे एक लेख मे धमकी दी कि पाकिस्तान मे गृहयुद्ध का खतरा है और यदि हालत मे परिवर्तन न हुआ तो गृह-युद्ध के खतरे पर काबू पाने के लिए सेना को हस्तक्षेप करना पडेगा । उन्होने लिखा कि "नेशनल असेम्बली" को एक वर्ष और काम करने दिया

जाये और उसे ही नया विधान तैयार करने के लिये कहा जाये। उस समय तक अयूब खा ही राष्ट्रपति के पद पर नियुक्त रहे।

अयूब शाही के विरुद्ध आन्दोलन और भी तेज होता गया। ढाका मे १२००० स्त्रियो ने एक भव्य प्रदर्शन किया। अयूब का प्रोपेगैंडा करने वाले दो समाचार पत्रो "मॉर्निंग न्यूज" और "पाकिस्तान" के कार्यालय जला दिये गये। रावलपिण्डी और लाहौर मे भी इसी प्रकार "दैनिक कोहिस्तान" के कार्यालय जला दिये। इस समाचार पत्र के मालिक नवाव होती थे। बदलती हुई स्थिति से भयभीत होकर सभी दूसरे पत्रो ने अयूब खा के विरोध मे प्रोपेगैंडा शुरू कर दिया।

१५ फरवरी को एक बगाली सैनिक जहुरुलहक, जिसे शेख मुजीब के साथ गिरफ्तार किया गया था, गोलियो से आये हुए घावो के कारण मर गया। ढाका मे यह अफवाह फैल गई कि अधिकारियो ने उसकी हत्या की है। सारे शहर मे हडताल हो गई। हजारो विद्यार्थियो ने पुलिस चौकियो पर हमला कर दिया। मौलाना भापानी ने १६ फरवरी को एक शोक सभा का आयोजन किया। उन्होने बडा प्रभावशाली भाषण दिया और अन्त मे कहा बगला जागो! अगन लागो! अर्थात "बगालियो जागो और आग लगा दो।"

कुछ ही क्षणों मे क्रोध से बिफरे हुए लोगो ने सरकारी जायदादो और अयूब खा के समर्थको के मकानो को जलाना शुरू कर दिया। सरकारी मुस्लिम लीग की लाखो रुपयो से निर्माण की हुई इमारत जलकर राख हो गई। प्रान्तीय मत्री नवाब हसन अस्करी और केन्द्रीय सूचना और प्रसार मन्त्री श्री शहाबुद्दीन की कोठियो को भी जला दिया गया। सेना को स्थिति पर काबू पाने के लिये बुलाया गया। दूसरे ही दिन असाधारण स्थिति का कानून हटा लिया गया और भुट्टो, वली खा और अब्दुल समद खा और दूसरे राजनीतिक कैदियो को रिहा कर दिया गया। १८ फरवरी को राजशाही विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर को

एक प्रदर्शन मे एक सिपाही ने गोली मार दी। इससे स्थिति फिर बिगड गई। हजारो विद्यार्थियो, कर्मचारियो, मिल मजदूरो और अन्य लोगो ने रोष प्रकट करने के लिये जलूस निकाला। उन्होने सेना के विरुद्ध नारे लगाये। लोगो मे इतना जोश था कि कई जगह सेना शस्त्र छोड कर भाग गई। यह एक खुला विद्रोह था। रेल के कर्मचारियो ने सेना की गतिविधियो मे रुकावट डालने के लिये रेल की पटरिया उखाड दी। उनमे से कई एक को सेना ने गोलियो का निशाना बना दिया। लगता था जैसे समस्त ढाका रणभूमि बन गया हो। इनसानी लहू जगह-जगह बह रहा था और सेना खुलकर कतले-आम कर रही थी। निहत्थे कर्मचारी और झुग्गी-झोपडियो मे रहने वाले बिना किसी नेता के मुकाबला कर रहे थे। कुछ पत्रकारो ने बडी मुश्किल से छुप-छिपाकर दौरा किया। उन्होने देखा कि सेना के सिपाही किसानो और मजदूरो के शव सडको और गलियो से उठा-उठाकर फौजी गाडियो मे डालकर ले जा रहे थे और लहू को धो-धोकर सडको और गलियो को रात के अधेरे मे साफ किया जा रहा था ताकि इस नरसहार का कोई चिन्ह रहने न पाये। एक सूचना के अनुसार उस रात एक हज़ार से अधिक व्यक्तियो को सेना ने गोलियो से भून दिया था।

यदि कोई सगठित इकलाबी सस्था होती तो उसके लिये शासन सत्ता पर अधिकार करके स्वतत्रता-सग्राम शुरू कर देने का यह उचित समय था। परन्तु मौलाना भाषानी सहित सभी नेताओ ने कभी इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार नही किया था। यद्यपि वह अपने आपको इकलाबी नेता कहते थे और जनता को कहा करते थे कि वह जालिमो के विरुद्ध विद्रोह कर दे परन्तु उन्होने यह कभी नही सोचा कि आज के ससार मे जहा शासको को ससदीय प्रजातत्र शासन प्रणाली पर विश्वास नही, शस्त्रो का प्रयोग किये बिना स्वतत्रता प्राप्त नही की जा सकती। पूर्वी बगाल मे सैनिक शासन की मशीनरी टूट चुकी

थी । जनता विद्रोह के लिये उठ खडी हुई थी और सेना के लिये प्रान्त पर कन्ट्रोल करना मुश्किल हो रहा था परन्तु नेताओ को पूर्ण स्वतत्रता की घोषणा करने और जनता को सशस्त्र युद्ध के लिये सगठित करने के लिये साहस नही था ।

कहा जाता है कि स्थिति बिगडती देख कर ढाका छावनी के कमाण्डर ने इस्लामाबाद मे प्रधान सेनापति को अपनी रिपोर्ट भेजी । अयूब खा ने स्थल, वायु और जल सेना के कमाण्डरो को बुलाया और यह इच्छा प्रकट की कि समस्त देश मे सैनिक शासन स्थापित किया जाये । परन्तु कहा जाता है कि जनरल याहिया खा ने इनकार कर दिया । उन्होने कहा कि

"मुझे ढाका मे अपने सूत्रो से रिपोर्ट मिली है कि यदि मार्शल ला लागू किया गया तो ढाका पर तो कन्ट्रोल किया जा सकता है परन्तु बाकी के देश के सम्वध मे कोई आश्वासन नही दिलाया जा सकता । मेरे अफसरो ने मुझे बताया है कि वह देश की रक्षा के लिये मार्शल ला लागू करने के विरुद्ध नही परन्तु यह मार्शल ला आपके (अयूब खा के) विना ही होगा ।"

कहा जाता है कि याहिया खा ने अयूब खा को परामर्श दिया कि वह डेमोक्रेटिक एक्शन कमेटी की मागे स्वीकार करके राजनीति से अपने आपको अलग कर ले ।

यह सभी बाते कहा तक सत्य है ? इनके सम्बन्ध मे पूरे विश्वास से कुछ नही कहा जा सकता । अलबत्ता यह बात स्पष्ट थी कि स्थिति गम्भीर हो चुकी थी । ऐसे समय जब पश्चिमी पाकिस्तान मे भी विद्रोह हो रहा था, सेना के लिये पूर्वी बगाल पर शक्ति के प्रयोग से काबू पाना मुश्किल था । ऐसा मालूम होता था कि अयूब खा के सैनिक अफसर विशेषतया याहिया खा आदि इस अवसर से स्वय फायदा उठाना चाहते थे । अयूब खा इतने बदनाम हो चुके थे कि सेना उनका साथ देकर अपने

आप को जनता की विरोधी बनना नही चाहती थी। उधर अयूब खा भी समझ चुके थे कि झुके बिना काम नही चल सकता। वह विरोधी दलो मे फूट डालने की एक और कोशिश करने के लिये तैयारिया करने लगे। वह यह समझ रहे थे कि कुछ झुक कर दोनो प्रान्तो मे अपने समर्थको की सख्या बढाई जा सकती है और शायद वह यह भी सोच रहे थे कि धीरे-धीरे स्थिति पर काबू पाकर सेना मे भी अपने गुट्ट को मजबूत किया जा सकता है।

रेडियो पर एक सदेश प्रसारित करते हुए अयूब खा ने कहा कि मै कुछ परिवर्तन करके पूर्वी बगाल को देश के शासन मे अधिक भाग देने के लिये तैयार हू। उन्होने कहा कि मैं समझता हू कि पूर्वी बगाल के लोगो को शिकायत है कि उन्हे पश्चिमी पाकिस्तान के लोगो की तरह सरकार मे पूरा भाग नही मिल रहा। मैं बदलती हुई स्थितियो और नई आवश्यकताओ के अनुसार विधान मे परिवर्तन के लिये भी तैयार हू। पूर्वी बगाल मे किसी ने भी इस बयान का स्वागत नही किया। दूसरी ओर उनके अपने दल के ३७ सदस्यो ने एक वक्तव्य मे पूर्वी बगाल के राज्यपाल अब्दुल मुनइम खा को नर-सहार के लिये दोषी ठहराया।

पूर्वी बंगाल से हिंसात्मक प्रदर्शनो के समाचार अब भी आ रहे थे। खुलना मे पुलिस से एक झडप मे १० व्यक्ति मारे गये। पूर्वी बगाल के विद्यार्थियो की सघर्ष समिति ने प्रान्तीय और केन्द्रीय विधान सभाओ और बेसिक कमेटियो के सदस्यो को आदेश दिया कि वह सदस्यता से त्यागपत्र दे दें। क्रोध मे आये हुए एक जनसमूह ने मरामारा की बेसिक कमेटी के अध्यक्ष को उसके निवास-स्थान के सामने मार डाला। खुलना मे ३० हजार व्यक्तियो ने हमला कर केन्द्रीय मत्री सब्बूर खान की कोठी को जला दिया। पुलिस ने गोली चलाकर तीन व्यक्तियो की हत्या कर दी। जनसमूह ने एक पुलिस कर्मचारी को इतना पीटा कि उसकी हत्या हो गई। ढाका मे अमरीकी व्यापार प्रतिनिधि के कार्यालय

और जापानी एयरलाइस के कार्यालय को तोडफोड दिया गया। ढाका और दूसरे नगरो मे सिविल सरकार का ढाचा टूट गया। इस स्थिति से भयभीत होकर अयूब खा ने ११ फरवरी को घोषणा की कि मैं इस वर्ष के अन्त मे होने वाले राष्ट्रपति के चुनाव मे खडा नही हूगा। उन्होने कहा

"मेरा फैसला अटूट है। पाकिस्तान इस समय अत्यन्त नाजुक स्थिति से गुजर रहा है। पागलपन की-सी हालत पैदा हो रही है। मै इस बात को सहन नही कर सकता कि पाकिस्तान का अस्तित्व खतरे मे पड जाये। कुछ लोग वर्तमान शासन प्रणाली से असन्तुष्ट है। वह सीधे तौर पर बालिगो को मतदान का अधिकार देने की बुनियाद पर अपने प्रतिनिधियो का चुनाव कराना चाहते है। मै यह भी महसूस करता हू कि पढे-लिखे लोगो को शिकायत है कि उन्हे शासन मे पूरा भाग नही मिल रहा। कुछ लोग शिकायत करते है कि विधान सभाओ को काफी अधिकार प्राप्त नही। जनता की शिकायते दूर करने के लिये मैने विरोधी दलो के प्रतिनिधियो और स्वतत्र नेताओ का सम्मेलन बुलाया है। इस गम्भीर स्थिति मे हमारा कर्त्तव्य है कि राजनीतिक सकट का हल ढूढे। मै सभी रुकावटो को दूर करने की कोशिश कर रहा हू, जिससे राजनीतिक दल और नेता बातचीत मे भाग ले सके।"

दूसरे दिन अयूब खा ने शेख मुजीबुर्रहमान और उनके साथियो को रिहा करके उनके विरुद्ध षड्यत्र का केस वापस ले लिया। बाद मे बिलोच नेताओ और जी० एम० सैय्यद को भी रिहा कर दिया गया।

क्या यह परिवर्तन लाने के लिये सेना के नेताओ ने दबाव डाला था? एक सैनिक प्रवक्ता ने अमरीका के दैनिक समाचार पत्र "वाशिंगटन पोस्ट" के सवाददाता को बताया कि सेना के तीनो उच्च जरनलो ने अयूब खा को कहा था कि वह यह कार्यवाही करे नही तो सेना उनका

तख्ता उलट देगी।

कहना मुश्किल है कि श्री भुट्टो और मौलाना भाषानी ने इस पर भी सम्मेलन का बायकाट करने की घोषणा क्यो की और जमायत इँस्लामी हिमात्मक गतिविधियो मे क्यो लगी हुई थी? दोनो ने एक ओर तो अयूब खा के तुरन्त त्यागपत्र की माग की और दूसरी ओर भुट्टो ने भारत के विरुद्ध उत्तेजनाजनक प्रोपेगैंडा शुरू कर दिया। ११ फरवरी को भुट्टो ने एक वक्तव्य मे कहा कि मै भारत के "आक्रमणो" का मुकाबला करने के लिये जनता की सेना का सगठन करूगा। श्री भुट्टो इस प्रकार बाते कर रहे थे मानो वह अयूब खा की जगह राष्ट्रपति बनने वाले है। उन्होने कहा कि "मेरी सरकार काश्मीर को स्वतत्र करायेगीऔर काश्मीर के लिये 'जिहाद' मे पूर्वी बगाल का समर्थन प्राप्त करने के लिये 'मेरी सरकार' फरक्का बाध का प्रश्न उठायेगी।" मौलाना भाषानी ने कहा कि "हम असम को स्वतत्र कराके उसे पाकिस्तान का अग बनायेगे।"

ऐसा मालूम होता है कि भुट्टो और भाषानी समझौते की बातचीत को विफल बनाने के लिये यह स्टट-बाजी कर रहे थे। अथवा उन्हे विश्वास हो रहा था कि अयूब शाही का पतन होने वाला है और वह माओ त्से-तुग की लाइनो पर पाकिस्तान की सरकार स्थापित करने मे सफल हो जायेगे। शायद सैनिक नेता चाहते थे कि स्थिति और भी बिगडे जिससे फायदा उठाकर वह जनता को मूर्ख बनाकर अपना शासन कायम कर ले। इस सम्बन्ध से एक महत्वपूर्ण घटना यह है कि रेडियो पाकिस्तान विद्रोह के समाचार अधिक से अधिक प्रसारित कर रहा था।

पूर्वी बगाल मे विद्यार्थियो की सघर्ष समिति ने अल्टीमेटम दिया कि यदि बगाली सदस्यो ने ३ मार्च तक नेशनल असेम्बली, प्रान्तीय विधान सभा और जिला और नगर समितियो से त्यागपत्र न दिया तो उन्हे इसका परिणाम भुगतने के लिये तैयार रहना चाहिये। इस धमकी

के साथ ही मन्त्रिमण्डल के सदस्यो, जिला अधिकारियो और दूसरे सरकारी अफसरो पर हमले होने लगे। एक ब्रिटिश समाचार पत्र ने लिखा कि इस अल्टीमेटम से अयूब के समर्थको को जान के लाले पड गये है। १६ सप्ताह के विद्रोह मे नये परिवर्तन का पहले यह उदाहरण मिला कि कुश्तिया मे बेसिक डेमोक्रेसी कौसल के अध्ययक्ष को एक जन-समूह ने पकड कर पीट-पीटकर जान से मार दिया। पाच मन्त्रियो की कोठिया जला दी गईं। इसका परिणाम यह हुआ है कि त्यागपत्रो का सिलसिला शुरू हो गया।

इसी समाचार पत्र ने लिखा कि "पुलिस की चौकियो और छोटे-छोटे रेलवे स्टेशनो पर हमले हो रहे है, बदनाम अधिकारियो की हत्या की जा रही है। अयूब खा और पश्चिमी पाकिस्तान के विरोधी नेताओ के लिये खतरनाक स्थिति बगाली विद्यार्थियो की इस माग से पैदा हो गई है कि पूर्वी बगाली को पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता दे दी जाये।"

१६ फरवरी को अत्यत गम्भीर स्थिति मे गोलमेज सम्मेलन शुरू हुआ। शेख मुजीबुर्रहमान, एयर मार्शल असगर खान, खान वली खा और'डैमोक्रेटिक एक्शन कमेटी के अन्य सदस्य सम्मेलन मे सम्मिलित हुए परन्तु भुट्टो और भाषानी ने बातचीत मे भाग लेने से इन्कार कर दिया। दोनो ने माग की कि'अयूब खा तुरन्त त्यागपत्र दे दे। भाषानी ने कहा कि यदि विद्यार्थियो की सघर्ष समिति की सभी मागे स्वीकार न की गई तो समस्त देश मे सत्याग्रह आन्दोलन शुरू कर दिया जायेगा। उन्होने कहा कि पूर्वी बगाल को आन्तरिक स्वतत्रता दी जाये, सभी कारखानो को सरकारी मिलकियत मे ले लिया जाये और पश्चिम के सभी सैनिक गुट्टो से पाकिस्तान को अलग कर लिया जाये।

अयूब खा को शायद अब विश्वास हो गया था कि उनकी तानाशाही कायम नही रह सकती। सेना के नेता चाहे कुछ भी स्वीकार करलें परन्तु वह न तो पूर्वी बगाल को किसी भी रूप मे स्वतत्रता देने के हक

मे थे न ही वह यह सहन कर सकते थे कि पाकिस्तान मे किसी भी रूप मे समाजवाद लागू हो जाये। अपने तौर पर वह प्रसन्न थे कि भुट्टो और भाषानी स्थिति को खराब करके शेख मुजीब और दूसरे नर्मदलो के नेताओ के हाथ कमजोर कर रहे है।

अयूब खा के समर्थको और जमायत इस्लामी के नेताओ ने भुट्टो और भाषानी के समर्थको पर हमले शुरू कर दिये। मौलाना मौदूदी और मौलाना एतशामुल हक ने जगह-जगह उत्तेजनात्मक भाषण देते हुए कहा कि इस्लाम के शत्रु विदेशो से रुपया लेकर पाकिस्तान मे इस्लाम का सफाया करना चाहते है। जनता इनकी गतिविधियो को सहन नही करेगी बल्कि हर कीमत पर पाकिस्तान की रक्षा करेगी। ४ मार्च को जमायत इस्लामी के समर्थको ने लायलपुर मे भुट्टो के समर्थको के जलूस पर हमला किया। रावलपिण्डी मे अयूब खा के समर्थको ने एक जलूस निकाल कर समाजवाद के विरोध मे नारे लगाये। एक सशस्त्र टोडी ने सरकारी लीग के नेता राजा अल्लादाद खा के नेतृत्व मे अयूब के विरोधियो पर हमला किया। नवाब शाह मे भुट्टो और मौदूदी के समर्थको मे जम कर लडाई हुई। बहावलपुर मे ६ मार्च को भुट्टो के आगमन पर जमायत इस्लामी के कार्यकर्ताओ ने भुट्टो के दल के कार्यालय और साम्यवादियो के एक बुकस्टाल को आग लगा दी।

लाहौर मे दोनो दलो के समर्थको मे कई झडपे हुई। ९ मार्च को लाहौर मे भाषानी के जलसे पर जमायत इस्लामी के युवको ने पत्थर फेके। इसका बदला लेने के लिये भाषानी के समर्थको ने जमायत इस्लामी के कार्यालय पर हमला करके उसे आग लगा दी। जमायत इस्लामी के अध्यक्ष मौलाना मौदूदी ने एक बयान मे आरोप लगाया कि भाषानी के समर्थको ने कुरान शरीफ को जला कर इस्लाम का अपमान किया है। समाचार पत्रो ने कुरान के जले हुए पन्नो के फोटो प्रकाशित

किये । मौलाना मौदूदी ने घोपणा की कि समस्त देश मे भाषानी की इस हरकत की निन्दा के लिये सार्वजनिक सभाओ का आयोजन किया जायेगा । भापानी ने इसके उत्तर मे आरोप लगाया कि जमायत इस्लामी के नेता सरकार से रुपया लेकर पाकिस्तान मे इण्डोनेशिया की तरह खून-खराबा करना चाहते है । उन्होने कहा कि मै हिंसात्मक कार्यवाइयो से भयभीत होने वाला नही । मै गृहयुद्ध के लिये तैयार हू और हिंसा का मुकाबला हिंसा से करने के सिद्धान्त मे विश्वास रखता हू ।

दूसरे दिन जमायत इस्लामी के कार्यकर्ताओ ने मुलतान मे भुट्टो की पार्टी के कार्यालय पर हमला कर दिया और नेशनल अवामी पार्टी के मत्री की दुकान को आग लगा दी । १० मार्च को मैमन सिह (पूर्वी बगाल) के जिला अफसर ने बताया कि जमालपुर मे एक जनसमूह ने २१ व्यक्तियो को जिन्दा जला दिया है। लाहौर के समाचार पत्र "दैनिक निवाये वक्त" ने लिखा कि १२ मार्च को भाषानी के समर्थको ने राजशाही मे ४०८ मकानो को जला दिया हैं । इसी पत्र ने १९ मार्च को लिखा कि प्रभातीपुर मे १००० से अधिक मकानो को जला दिया गया है और दो सौ से अधिक व्यक्ति भाषानी और मौदूदी के समर्थको की झडपो मे घायल हो गये है ।

१८ मार्च को ढाका मे पूर्वी पाकिस्तान के राज्यपाल मुनहम खा की कोठी पर हमला हुआ । एक हिन्दू कर्मचारी ने उसकी रक्षा की । १९ मार्च को जब राज्यपाल विमान पर कराची पहुचा तो वह सिर और पाव से नगा था ।

११ मार्च को एयर मार्शल असगर खा ने एक बयान मे आरोप लगाया कि सरकार के दलाल गोलमेज सम्मेलन को विफल बनाने के लिये जगह-जगह फसाद करा रहे हैं । उन्होने कहा कि शासक दल के किराये के गुण्डे उपद्रव मचाने पर तुले हुए है । बडे-बडे पूजीपतियो से लाखो रुपया प्राप्त करके फसाद कराने के लिये प्रयोग मे लाया जा रहा

है। देहात से गुण्डे भरती करके शहरो मे फसाद कराने के लिये लाये जा रहे है।

इस दौरान मे कराची, लायलपुर, लाहौर आदि शहरो मे कारखानो मे हडताले होने लगी। हडतालियो ने कई स्थानो पर कपडा-मिलो को लूट लिया। कराची मे डाक और तारघर मे हडताल हो गई। जमालपुर मे वामपथियो ने चार व्यक्तियो को टुकडे-टुकडे कर दिया। लाहौर के समाचार पत्रो ने लिखा कि वामपथी पूर्वी पाकिस्तान मे "जनता की अदालते" स्थापित करके स्मगलिंग के आरोप मे लोगो को फासी पर लटका रहे है। कई सरकारी अधिकारियो को पत्थर मार-मार कर मौत के घाट उतार दिया गया।

८ मार्च को एक अमरीकी समाचार एजेसी ने लिखा कि पूर्वी बगाल मे गृहयुद्ध की-सी स्थिति पैदा हो रही है। विद्यार्थियो की सघर्ष समिति सरकारी कर्मचारियो पर दबाव डाल रही है कि वह त्याग-पत्र देकर सघर्ष मे सम्मिलित हो जाये।

१० मार्च को गोलमेज सम्मेलन आरम्भ होने से पहले सभी विरोधी दलो मे इस बात पर समझौता हो गया था कि पश्चिमी पाकिस्तान का एक यूनिट भग करके पाच प्रान्त बना दिये जाये। बी० बी० सी० ने एक प्रसारण मे कहा कि यह शेख मुजीबुर्रहमान की अवामी लीग की शानदार विजय है। परन्तु भाषानी और भुट्टो ने पुन घोषणा की कि वह सम्मेलन मे भाग नही लेगे। दोनो ने माग की कि अयूब खा तुरन्त त्यागपत्र दे दे परन्तु खा वली खा, जी० एम० सैय्यद और सयुक्त एक्शन कमेटी के सयोजक नवाबजादा नसरुल्ला खा ने कहा कि आगामी चुनाव तक के लिये जो अन्तरिम सरकार बनाई जाये अयूब खा उसके राष्ट्रपति बने रहें।

पाकिस्तान के दोनो भागो मे अब भी उपद्रव हो रहे थे। लाहौर मे विद्यार्थियो ने अमरीका के सूचना कार्यालय को आग लगा दी।

कराची मे जमायत इस्लामी के समर्थको ने सरकारी समाचार एजेसी के कार्यालय को आग लगा दी । पूर्वी बगाल मे एक व्यक्ति को एक पेड से बाध कर जिन्दा जला दिया गया ।

गोलमेज सम्मेलन मे अयूब खा ने विरोधी दलो की यह माग स्वीकार कर ली कि सभी बालिगो को मतदान का अधिकार दिया जाये और ससद का सीधा चुनाव हो । परन्तु उन्होने न तो चुनाव के लिये कोई तारीख निश्चित की, ना ही प्रान्तो के अधिकारो का उल्लेख किया । उन्होने इन समस्याओ पर केवल यही कहा कि इस समय स्थिति गम्भीर है इसलिये जब तक हालात ठीक नही हो जाते हमे खामोशी से प्रतीक्षा करनी चाहिये नही तो पाकिस्तान कमजोर हो जायेगा । इस भाषण से कोई भी सन्तुष्ट नही हुआ । जो लोग समझ रहे थे कि जनता की, विशेषतया पूर्वी बगाल की मागे सिद्धान्त रूप से स्वीकार कर ली जायेगी उन्हे मायूसी हुई । शेख मुजीबुर्रहमान ने घोषणा की कि उनकी अवामी लीग डेमोक्रेटिक एक्शन कमेटी से अलग होकर जनता की मागे स्वीकार कराने के लिये आन्दोलन जारी रखेगी । पूर्वी बगाल से आये हुए उनके साथियो श्री नूरुलअमीन और भूतपूर्व जज श्री मुरशिद हुसेन ने कहा कि अयूब खा ने एक हाथ से जो कुछ दिया है वह दूसरे हाथ से छीन लिया है । उन्होने कहा कि सम्मेलन मे प्रान्तो की आन्तरिक स्वतत्रता की समस्या का समाधान होना चाहिये था । नेशनल अवामी दल के अध्यक्ष खा वली खान ने दो बुनियादी मागे स्वीकार किये जाने का स्वागत किया परन्तु कहा कि प्रान्तीय स्वतत्रता और पश्चिमी पाकिस्तान के एक यूनिट को भग करने की माग को खटाई मे डाल देने से घृणा बढेगी और स्थिति और भी खराब होगी ।

जमायत इस्लामी के नेता मौलाना मौदूदी और विरोधी मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मिया मुमताज दौलताना ने अयूब खा की प्रशसा की ।

१५ मार्च को रेडियो आस्ट्रेलिया ने ढाका के एक सरकारी अधि-

कारी के बयान का हवाला देते हुए बताया कि पूर्वी बगाल मे बडे पैमाने पर गडबड हो रही है। विभिन्न इलाको मे २० हजार मकान जलाये जा चुके है और २६७ व्यक्तियो को जिनमे अयूब खा के समर्थक भी सम्मिलित है मौत के घाट उतार दिया गया है। मदारीपुर मे एक उत्तेजित जनसमूह ने आठ व्यक्तियो को पत्थर मार-मार कर मार दिया और इसके बाद उनके शव जलते हुए मकानो मे फेक दिये। दो और व्यक्तियो की गर्दने काट दी गई। जमालपुर मे २२२ और मानिकगज मे २२५ मकान जला दिये गये। ढाका से आने वाले लोगो का कहना है कि एक विद्यार्थी नेता श्री अहमद एक प्रकार से राज्यपाल बना हुआ है।

पश्चिमी पाकिस्तान मे जमायत इस्लामी के कार्यकर्ता वामपथियो को कुचल देने के लिये हमले कर रहे थे। पिशावर मे उन्होने भापानी और भुट्टो के समर्थको और उनके मकानो पर हमले किये। एक सार्वजनिक सभा मे पिस्तौलो से गोलिया चलाई गई। कराची मे जमायत इस्लामी के तीन हजार समर्थको ने भुट्टो और भापानी को इस्लाम के शत्रु ठहराते हुए मुर्दाबाद के नारे लगाये। मौलाना मौदूदी ने एक सार्वजनिक सभा मे भाषण देते हुए धमकी दी कि "जो जुबान समाजवाद का समर्थन करेगी उसे काट दिया जायेगा।" उन्होने अपने कार्यकर्ताओ को आदेश दिया कि वह वामपथियो को किसी भी मुहल्ले मे रहने न दे।

इस बात मे कोई सन्देह नही कि जमायत इस्लामी ने अयूब खा और दूसरे सैनिक अधिकारियो से गठजोड कर रखा था। बडे-बडे पूजीपति भी उसकी सहायता कर रहे थे क्योकि पूजीपतियो को इस बात का भय था कि यदि वामपथी सरकार पर अधिकार करने मे सफलहो गये तो उनके कारखानो पर सरकार अधिकार कर लेगी। इसलिये वह इस्लाम का नाम लेकर उनका विरोध कर रहे थे। कई भूतपूर्व सैनिक अधिकारी जमायत इस्लामी मे सम्मिलित हो

गये थे।

श्री भुट्टो यह समझ रहे थे कि पुराने वामपथियो, युवको, विद्यार्थियो और किसानो का समर्थन प्राप्त करके ही अपने हाथ मजबूत किये जा सकते है। इसलिये वह समाजवाद के समर्थक होने का दावा कर रहे थे, हालाकि भुट्टो ने अपने दल मे बडे-बडे जमीदारो को मिला रखा था। मौलाना भापानी एक ओर जमायत इस्लाम का विरोध कर रहे थे तो दूसरी ओर शेख मुजीबुर्रहमान के हाथ भी कमजोर करना चाहते थे। उग्रवाद का मार्ग अपना कर वह हिंसात्मक कार्यों के लिये जनता को उत्तेजित कर रहे थे। उनका कहना था कि बातचीत से कोई लाभ नही होगा। लडकर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। मजे की बात यह है कि सैनिक तानाशाही उनके विरुद्ध कोई कार्यवाई नही करना चाहती थी। बल्कि उसकी इच्छा थी कि स्थिति और भी बिगडे, जिससे पाकिस्तान की रक्षा के नाम पर सेना को हस्तक्षेप करने का अवसर मिल जाये।

आवामी लीग के नेता शेख मुजीबुर्रहमान ढाका मे पहुचे तो उनका भव्य स्वागत किया गया। एक विशाल सार्वजनिक सभा मे भाषण देते हुए उन्होने मौलाना भाषानी की कडी आलोचना की और कहा कि मौलाना ८६ वर्ष के हो चुके है। उन्हे अब राजनीतिक जीवन से रियाटर हो जाना चाहिए। शेख साहिब ने कहा कि

> "नेशनल असेम्बली मे मेरे दल के सदस्य ससदीय शासन प्रणाली और सभी बालिगो को मतदान का अधिकार दिये जाने के अयूब खा के सुझाव का समर्थन करेगे। वह अपने दल की ६ मागो के अनुसार विधान मे सशोधन का बिल भी पेश करेगे। यदि डेमोक्रेटिक एक्शन कमेटी ने गोलमेज सम्मेलन मे मेरे दल की मागो का समर्थन किया होता तो अयूब खा को झुकना पडता। हम अपनी मागो के लिये शान्तिमय आन्दोलन जारी रखेगे।"

१६ मार्च को लाहौर के समाचार पत्र "दैनिक निवाह् वक्त" ने यह् समाचार प्रकाशित किया कि रावलपिण्डी से ४० किलोमीटर की दूरी पर साहीवाल के रेलवे स्टेशन पर जमायत इस्लामी के कार्यकर्ताओ ने मौलाना भापानी की हत्या की कोशिश की है। भाषानी के समर्थको ने "मौलाना मौदूदी की हत्या करो" के नारे लगाये। भाषानी ने एक जलसे मे कहा कि ब्रिटेन और अमरीका पाकिस्तानी जनता के शत्रु और शासको के मित्र है। पाकिस्तान के असली मित्र चीन, इण्डोनेशिया, ईरान, तुर्की और जोर्डन है, जिन्होने १९६५ मे भारत के विरुद्ध पाकिस्तान की सहायता की थी। विदेशी एजेटो ने पूर्वी पाकिस्तान मे हमारे ७०० कार्यकर्ताओ की हत्या कर दी है परन्तु यदि गुलामी के बधन तोड देने के लिये हमे २० लाख व्यक्तियो की कुर्बानी देनी पडे तो भी हम पीछे हटने वाले नही।

कारखानो मे काम करने वाले अपनी मागो के लिये आन्दोलन कर रहे थे। उनकी यूनियनो ने घोषणा की कि १९ मार्च से पश्चिमी पाकिस्तान की सभी मिलो मे हडताल की जायगी। पूर्वी बगाल मे विद्यार्थी सघर्ष समिति ने इसी तरह अपनी मागे स्वीकार कराने के लिये हडताल करने की घोषणा की।

अयूब खा ने मार्च के तीसरे सप्ताह जनरल मूसा को हटा कर सिंध के प्रमुख मिल मालिक सेठ यूसफ हारू को पश्चिमी पाकिस्तान का राज्य-पाल नियुक्त कर दिया। इसी तरह एक और पुराने टोडी एम० एन० हुदा को पूर्वी बगाल का राज्यपाल नियुक्त कर दिया गया।

अयूब खा यह जाहिर करने की कोशिश कर रहे थे कि वह असैनिक सरकार स्थापित करने के लिये मैदान तैयार कर रहे है, परन्तु इसी दिन भारतीय समाचार एजेंसी पी० टी० आई० ने सूचना दी कि पूर्वी पाकिस्तान से बगाल मे धडाधड सेनायें जनता को कुचलने के लिये भेजी जा रही हैं।

रेडियो पाकिस्तान ने २८ मार्च को एक प्रसारण मे कहा कि पूर्वी बगाल मे गडबड से आर्थिक स्थिति बिगड रही है।

मौलाना भाषानी ने ढाका मे एक जलसे मे कहा कि

"अमरीका पाकिस्तान मे जनता के आन्दोलन को विफल करने के लिये अपने किराये के टट्टुओ पर ७ करोड रुपया प्रति मास खर्च कर रहा है। मेरे पास इस आरोप के लिये ठोस प्रमाण है।"

अमरीकी दूतावास ने इस आरोप का खडन किया। २४ मार्च को अमरीकी सरकार ने पूर्वी बगाल मे रहने वाले अमरीकी नागरिको को आदेश दिया कि वह खतरे की हालत मे वहा से निकल जाये।

बी० बी० सी० ने एक प्रसारण मे कहा कि पूर्वी बगाल मे इस्लाम और साम्यवाद मे टक्कर हो रही है। अयूब खा के समर्थको पर हमले किये जा रहे है।

लाहौर के अर्ध-सरकारी समाचार पत्र "पाकिस्तान टाइम्ज" ने आरोप लगाया कि "भारतीय नागरिक पूर्वी बगाल मे घुसपैठ कर रहे है और बगालियो को हमले करने के लिये भारत बन्दूके दे रहा है।" अवामी लीग के नेता शेख़ मुजीबुर्रहमान ने इस आरोप को शरारतपूर्ण और झूठा ठहराते हुए कहा कि

"हम गत २१ वर्षो से यह खेल देख रहे है। जब भी पूर्वी बगाल की जनता अपने अधिकारो के लिये कोई आन्दोलन शुरू करती है शासक दल और उसके पिट्ठू हमे भारतीय एजेट करार देकर बदनाम करना शुरू कर देते है। इन लोगो को हमारी हर बात और हमारी हर माग मे भारत के षड्यत्र की बदबू मिलती है।"

१५ मार्च को जब दोनों प्रान्तो के असैनिक राज्यपाल विपक्षी दलो के नेताओ को बातचीत के लिये निमत्रण पत्र भेज रहे थे, एकाएक रेडियो पाकिस्तान ने घोषणा की कि फील्ड मार्शल जनरल अयूब खा

ने देश की शासन सत्ता सेनापति जनरल याहिया खा के हवाले कर दी है और सेनापति ने समस्त देश मे मार्शल लॉ लागू कर दिया है।

चीफ मार्शल लॉ एडमिनिस्ट्रेटर के पद पर नियुक्त होते ही जनरल याहिया खा ने ससद और प्रातीय विधान परिषदो को भग करने की घोषणा कर दी और दोनो राज्यपालो को डिसमिस कर के लेफ्टीनेण्ट अतीकुर्रहमान को पश्चिमी पाकिस्तान का और मेजर जनरल मुफजफरुद्दीन को पूर्वी बगाल का सैनिक गवर्नर नियुक्त कर दिया। इस प्रकार १८५८ का नाटक पुन स्टेज किया गया। १९५८ मे जब केन्दीय मत्रिमण्डल मे परिवर्तन कर नए मत्री नियुक्त किए जा रहे थे, इस्कन्दर मिर्जा और अयूब खा गुप्त रूप से सैनिक शासन स्थापित करने के लिए तैयारिया कर रहे थे। दोनो नही चाहते थे कि जनता को अपनी सरकार नियुक्त करने का अवसर मिले। इम बार भी जब पाकिस्तान के दोनो भागो मे असैनिक राज्यपाल नियुक्त किए जा रहे थे और जनता को यह सकेत दिया जा रहा था कि ससदीय सरकार स्थापित कर दी जाएगी, पाकिस्तानी सेना के नेता सैनिक शासन स्थापित करने की तैयारिया कर रहे थे। इस प्रकार एक बार फिर शासको ने जनता को धोखा दिया।

इतिहास ने अपने आपको दोहराया। १९५८ मे सेनापति को शासन की जिम्मेदारी देने के बाद इस्कन्दर मिर्ज़ा को तीन सप्ताह के अदर स्वय भी भागना पडा था। इस बार सेनापति ने राष्ट्रपति को एक दिन भी अपने पद पर रहने नही दिया। अपने पद का चार्ज लेते ही याहिया खा ने अयूब खा को छुट्टी दे दी और राष्ट्रपति का पद भी सभाल लिया।

३१ मार्च १९६९ और १८५८ के नाटक मे केवल इतना ही अन्तर था कि जहा इस्कन्दर मिर्जा को अलग किए जाने पर जनता सामूहिक रूप से प्रसन्न थी वहा इस बार जनरल याहिया खा के सैनिक शासक

बन जाने पर जनता परेशान थी। अपने अधिकार प्राप्त करने के लिये जनता का आन्दोलन विफल हो गया था और ऐसा मालूम होता था पाकिस्तान के लोगो को कभी सुख और शान्ति का श्वास लेने का अवमर नही मिलेगा। जनरल याहिया खा जानते थे कि १९५८ के मुकाबले मे इस बार अधिक बेचैनी पाई जाती है इसलिये जनता पर तुरन्त ही प्रहार करना खतरे से खाली नही होगा। इसलिये उन्होने अपने पद का चार्ज लेते ही जो भाषण दिया उसमे उन्होने वचन दिया कि वह सैनिक शासन को स्थाई रूप नही देगे बल्कि शान्ति स्थापित होते ही चुनाव करा के ससदीय सरकार की स्थापना करेगे। उन्होने राजनीतिक दल को भग करने की घोषणा नही की अलबत्ता धमकी दी कि सैनिक शासन की आलोचना करने वालो को सख्त सजा दी जायेगी। उन्होने समाचार पत्रो पर कडी पाबन्दिया लगा दी और जलसो और जलूसो की मनाही कर दी।

सैनिक शासन लागू करने के लिये बढती हुई अराजकता की ओट ली गई थी परन्तु इस स्थिति के लिये कौन दोषी था? १० वर्षों से अयूब खा की तानाशाही जनता पर जुल्म कर रही थी। जनता से वह अधिकार भी छीन लिये गये थे जो अग्रेजो के शासन काल मे जनता को प्राप्त थे। इस्लाम के नाम पर एक गिरोह अपनी गद्दियो के लिये जनता की भावनाओ को कुचल रहा था। जिस पाकिस्तान की स्थापना के लिये लोगो ने मुसीबतो का सामना किया था उस पर केवल पश्चिमी पाकिस्तान के गिनती के कुछ बडे-बडे जमीदारो और पूजीपतियो ने अधिकार कर लिया था और वह अपने हितो के लिये समस्त जनता को गुलाम बनाये हुए थे। जनता इनसे दुखी हो अपने अधिकारो के लिये आन्दोलन कर रही थी। जो लोग हिंसात्मक कार्यवाइयो मे लगे हुए थे, वे शासक वर्ग से ही किसी न किसी रूप मे सम्बधित थे। जमायत इस्लामी को सेना के एक गुट का समर्थन प्राप्त था। भुट्टो को एक और

सैनिक गुट्ट प्रोत्साहन दे रहा था और मौलाना भाषानी चीन से शासक-वर्ग को सहायता दिलाने के कारण मजबूत हो रहे थे ।

मार्च १६६६ मे ढाका के समाचार पत्र "पाकिस्तान आबजरवर" ने पूर्वी बगाल मे एक कृषि फार्म को तबाह किये जाने का ब्योरा देते हुए लिखा था कि स्थानीय बेसिक डेमोक्रेसी के अध्यक्ष ने अपने कार्यकर्ताओ को हमले के लिये भडकाया । यह व्यक्ति अयूब खा का पक्का समर्थक था ।

१३

फातिमा जिन्नाह और सोहरावर्दी के हत्यारे कौन ?

इससे पहले बताया जा चुका है कि श्री जिन्नाह की मृत्यु से पहले लियाकत अली किस प्रकार से षड्यन्त्र रचा रहे थे। पाकिस्तान का जन्मदाता दम तोड रहा था और उसका प्रधान मत्री शराब के जाम उडा रहा था। लियाकत अली की हत्या मे उनके अपने साथियो का हाथ था। गवर्नर जनरल गुलाम मुहम्मद ने प्रधान मत्री सर नाजिमुद्दीन को गद्दी से उतार फेका। स्वय गुलाम मुहम्मद को इस्कन्दर मिर्ज़ा ने गद्दी से उतारा। गुलाम मुहम्मद ने वसीयत की थी कि उनके शव को भारत मे देवल शरीफ मे दफनाया जाये परन्तु ऐसा नही किया गया। इस्कन्दर मिर्जा ने पाकिस्तान के सभी राजनीतिक नेताओ को बदनाम किया। अपने निकटतम साथियो को भी धोखा दिया। उन्होने अयूब खा को अपनाया था परन्तु अयूब खा ने समय आने पर इस्कन्दर मिर्जा को गद्दी से उतार दिया। जिन जनरलो ने अयूब खा का साथ दिया था, उन्हे अयूब खा ने एक-एक करके राजनीतिक क्षेत्र मे खतम कर दिया। जनरल याहिया खा सेना मे सबसे सीनियर अफसर नही थे। जनरल बरकी उनसे सीनियर थे परन्तु अयूब खा ने जनरल बरकी की बजाय जनरल याहिया खा को सेनापति बना दिया। इसी याहिया खा ने अवसर मिलने पर अयूब खा का पत्ता काट दिया। अयूब खा ने भुट्टो को यह समझ कर मत्रिमण्डल मे नियुक्त किया था कि उसका पाकिस्तान के

राजनीतिक क्षेत्र मे कोई स्थान नही, इसलिये भुट्टो से किसी प्रकार का खनरा नही हो सकता। परन्तु भुट्टो स्वय राष्ट्रपति बनने के लिये साज-बाज कर रहे थे और यदि यह कहा जाये कि अयूब खा का तख्ता उलट देने मे भुट्टो का बडा हाथ था तो यह कोई गलत बात नही होगी।

गत २४ वर्षों से कितने ही और व्यक्ति शासको के षड्यन्त्रो का शिकार हुए है। इनमे मिस फातिमा जिन्नाह और श्री सोहरावर्दी को भी शामिल किया जा सकता है। मिस जिन्नाह निसन्देह राष्ट्रपति के चुनाव मे अयूब खा के मुकाबले मे हार गई थी परन्तु यदि चुनाव मे गोल-माल न होता और यह चुनाव स्वतत्र तरीके से होता तो अयूब खा जीत नही सकते थे। इस चुनाव के बाद मिस जिन्नाह खामोशी से बैठ नही गई थी। वह विरोधी दलो को तानाशाही के विरुद्ध सगठित करने मे लगी हुई थी। जब भी अवसर मिलता वह तानाशाही के विरुद्ध भाषण और वक्तव्य देती। पाकिस्तानी मुसलमान उन्हे आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते थे। समाचार पत्रो मे उन्हे "मादरे मिल्लित" (जाति की माता) के शब्दो से सम्बोधित किया जाता था। अपने भाई की तरह वह अपने इरादे की पक्की और साहसी थी। अपने भाषणो मे वह कहा करती थी कि श्री जिन्नाह के दिमाग मे जिस पाकिस्तान का नकशा था वह आज का पाकिस्तान नही। जिन्नाह पाकिस्तान मे इस्लाम के नाम पर तानाशाही स्थापित करने और जनता का खून निचोडने वाले पूजीपतियो को देश पर ठोस देने के विरोधी थे। लियाकत अली से लेकर अयब खा तक पाकिस्तान के शासक मिस जिन्नाह की गतिविधियो से भयभीत रहते थे परन्तु मिस जिन्नाह किसी से डरती नही थी।

एक दिन एकाएक समाचार मिला कि मिस जिन्नाह हृदय की गति बन्द हो जाने से चल बसी है। उनके शव को दफना दिया गया। इसे एक साधारण मृत्यु ही समझा गया परन्तु १९६९ मे जब अयूब शाही का अन्त हुआ और अयूब खा के स्कैण्डल जनता के सामने स्पष्ट रूप मे

आने लगे तो यह माग भी की गई कि मिस जिन्नाह की मृत्यु के सम्बध मे जाच कराई जाय। मिस जिन्नाह के अपने नौकर ने कहा कि उनके शरीर पर ऐसे चिन्ह थे जिनसे सन्देह होता था कि मिस जिन्नाह की मृत्यु हृदय की गति बन्द होने से नही हुई। उनका गला किसी ने दबा दिया था। रात को सोते समय वह जो चादर ओढ कर सोई थी मृत्यु के समय वह गायब थी। नौकर का कहना है कि मिस जिन्नाह को कभी दिल की बीमारी नही हुई। उनके डाक्टरो ने भी इस बात की पुष्टि की। नौकर के इस बयान की पुष्टि भी हुई कि मुस्लिम लीग के कई अधिकारियो ने उस समय भी जाच की माग की थी परन्तु अधिकारियो ने यह मामला दबा दिया। यह भी मालूम हुआ कि मिस जिन्नाह को हत्या की धमकिया मिल रही थी। सी० आई० डी० उन्हे परेशान करती थी और वह राष्ट्रपति के चुनाव मे खडी हुई तो किराये के मौलवियो से प्रोपेगैडा कराया गया कि मिस जिन्नाह इस्लाम के सिद्धान्तो का उल्लघन कर रही है। कई समाचार-पत्रो ने लिखा कि मिस जिन्नाह की मृत्यु मे अयूब शाही का हाथ है।

यद्यपि इस मामले को दबा दिया गया है परन्तु एक दिन ऐसा आयेगा जब वास्तविकता का पता लग जायेगा। खून हमेशा के लिए गुप्त नही रह सकता।

अवामी लीग के नेता श्री हुसैन शहीद सोहरावर्दी की मृत्यु कैसे हुई? श्री सोहरावर्दी पहले व्यक्ति थे जिन्होने पाकिस्तान की स्थापना पर अचानक बगाल के विभाजन का विरोध किया था। वह बगाल को अखण्ड रखना चाहते थे। क्योकि उन्हे इस बात की आशका थी कि बगालियो को पाकिस्तान मे न्याय नही मिलेगा। वह श्री जिन्नाह की मृत्यु के बाद ही पाकिस्तान गये। मिस जिन्नाह के आशीर्वाद से उन्होने विरोधी दल की स्थापना की। पहले इसका नाम जिन्नाह मुस्लिम लीग रखा गया। बाद मे इसका नाम अवामी लीग रख दिया गया। लियाकत

अली ने विरोधी दल की कडी आलोचना की । वह जानते थे कि सोहरावर्दी जनता मे आदर और सम्मान की दृष्टि से देखे जाते है और वह किसी भी प्रकार की तानाशाही चलने नही देगे । इसलिये लियाकतअली ने उन्हे गद्दार ठहरा कर उनकी आलोचना शुरू कर दी परन्तु सोहरावर्दी की पोजीशन मजबूत होती गई । उन्होने रावलपिण्डी षड्यत्र केस मे गिरफ्तार किये हुए अधिकारियो की वकालत की थी । इसके कारण इस्कन्दर मिर्जा और अयूब खा उन्हे अपना शत्रु समझते थे । इस्कन्दर मिर्जा ने एक बार एक वक्तव्य मे उन्हे गोली मार देने की धमकी भी दी थी । परन्तु परिस्थितियो से विवश होकर इस्कन्दर मिर्जा ने उन्हे प्रधान मत्री बनाया । १६५८ मे ढाका मे जब बगाली पुलिस ने विद्रोह किया तो जनरल अयूब खा ने सोहरावर्दी को गोली मार देने की धमकी दी थी, परन्तु इसी अयूब खा को सोहरावर्दी के मत्रिमण्डल मे उनके अधीन काम करना पडा । सोहरावर्दी ने विधान तैयार होने के समय हिन्दुओ और मुसलमानो को अलग करने के सुझाव का विरोध किया था । उनके डट जाने पर भी यह सुझाव स्वीकृत नही हुआ था । बाद मे इस्कन्दर मिर्जा ने सोहरावर्दी को त्याग-पत्र देने के लिये बाध्य कर दिया क्योकि सोहरावर्दी ससद का चुनाव कराने की तैयारिया कर रहे थे और वह यह भी फैसला कर चुके थे कि इस्कन्दर मिर्जा अथवा अयूब खा को तानाशाह बनने नही देगे ।

अयूब खा ने तानाशाह बनते ही सोहरावर्दी के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोप मे मुकदमा चलाया । वास्तव मे इस मुकदमे का मतलब सोहरावर्दी को ब्लैकमेल करना था । सोहरावर्दी ने स्थिति को देख कर कह दिया कि वह राजनीतिक गतिविधियो मे भाग नही लेगे । इस पर मुकदमा वापिस ले लिया गया, परन्तु सोहरावर्दी फिर राजनीतिक मैदान मे आ गये । समस्त बगाल उनके साथ था । पजाब, सीमा प्रान्त और सिध मे भी उनके समर्थक थे । पाकिस्तान से बाहर भी उनके मित्र थे । १६६२ मे उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया । रिहा होते ही उन्होने फिर राजनीतिक

गतिविधियो मे भाग लेना शुरू कर दिया। उन्होने समस्त बगाल का भ्रमण करके तानाशाही के विरुद्ध भाषण दिये। अयूब खा ने सटपटा कर १८ सितम्बर १९६२ को एक बयान मे कहा कि

"जब भी देश की सुरक्षा को खतरे का सामना होता है सोहरावर्दी देश-द्रोहियो का नेतृत्व करने के लिये आगे आ जाते है। यदि देश के विभाजन के बाद लाखो शरणार्थी यहा न आ जाते तो सरकार इस व्यक्ति को पाकिस्तान की नागरिकता के अधिकार देने का खतरा कभी मोल न लेती।"

सोहरावर्दी ने इसके उत्तर मे कहा कि पाकिस्तान तानाशाह की जायदाद नही। मैं किसी धमकी से भयभीत होने वाला नही। पाकिस्तानी जनता अपने अधिकार लेकर ही रहेगी।

सोहरावर्दी इसके बाद पश्चिमी पाकिस्तान गये। जगह-जगह हजारो व्यक्तियो ने उनका स्वागत किया। गुजरावाला मे वह एक विशाल सभा मे भाषण दे रहे थे कि अयूब के एक एजेट ने बम फेंक दिया। स्पष्ट रूप से सोहरावर्दी की हत्या के लिये यह एक प्रयास था। अयूब-शाही के एजेट जगह-जगह उनके जलसे मे गडबड डालने की कोशिशे करते रहे। कराची मे एक जलसे मे उनके एक साथी अब्दुलमजीद को चाकू मार दिया गया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। परन्तु सोहरावर्दी अयूब शाही के विरोध मे आन्दोलन चलाते रहे। उन्होने पश्चिमी पाकिस्तान मे विरोधी दलो को नेशनल डैमोक्रेटिक फ्रन्ट के रूप मे सगठित कर लिया। पाकिस्तान के दोनो भागो मे सोहरावर्दी की बढती हुई ताकत से तानाशाही का सिहाशन डोलने लग गया था। सरकारी पत्र "पाकिस्तान टाइम्ज" ने लिखा कि सोहरावर्दी ने मुस्लिम लीग को तबाह कर दिया है।

सोहरावर्दी जनवरी १९६३ के पहले सप्ताह मे सभी विपक्षी दलो का एक सम्मेलन बुलाने की तैयारिया कर रहे थे। अयूब खा विपक्षी दलो को कुचल देने का इरादा कर चुके थे। उसके गुण गाने वाले

कराची के समाचार पत्र "दैनिक नई रोशनी" ने यह आरोप लगाया कि सोहरावर्दी अपने अमरीकन मित्रो की सहायता से सरकार का तख्ता उलट देने के लिये षड्यन्त्र कर रहे है। तीन दिन बाद पुलिस ने अचानक श्री सोहरावर्दी को कराची मे उनकी बेटी के निवासस्थान से गिरफ्तार करके नजरबन्द कर दिया। उस समय सोहरावर्दी अपनी वर्षगाठ मनाने के लिये अपने मित्रो को पत्र लिख रहे थे। जेल मे वह बीमार हो गये तो जनता के बावेला मचाने पर उन्हे केन्द्रीय हस्पताल मे दाखिल कर दिया गया। बाद मे उन्हे इस शर्त पर छोड दिया गया कि वह लैबनान की राजधानी बैरुत चले जायेगे। बाद मे एक दिन समाचार मिला कि हृदय की गति बन्द होने से उनकी मृत्यु हो गई है। उनके समर्थको को सन्देह तो हुआ, परन्तु तानाशाही का जमाना था। कौन बोलता? १९७१ मे शेख मुजीबुर्रहमान ने आरोप लगाया कि यह मृत्यु नही बल्कि हत्या थी और इसमे अयूब खा का हाथ था।

अगस्त १९७१ मे लन्दन से प्रकाशित होने वाले पाकिस्तानी साप्ताहिक पत्र "वतन" ने सोहरावर्दी की बेटी बेगम अख्तर का एक वक्तव्य प्रकाशित किया, जिसमे माग की गई थी कि उनके पिता की रहस्यमयी मृत्यु के कारणो की जाच कराई जाये। बेगम अख्तर ने कहा कि

> "यह गलत है कि मेरे पिता की मृत्यु हृदय की गति बन्द होने से हुई थी। मेरे पिता बैरुत के एक होटल मे ठहरे हुए थे। उन्हे अपना जीवन खतरे मे दिखाई देता था। उन्होने मुझे कहा था कि कुछ लोग उनका पीछा कर रहे है और एक सप्ताह से ऐसा हो रहा है। उन्होने लाहौर के नेता नवाबजादा नसरुल्ला खा से भी यह बात कही थी। मेरे पिता की मृत्यु से पहले अयूब खा के मन्त्रिमण्डल के एक सीनियर सदस्य ने एक मित्र द्वारा यह सन्देश भेजा था कि यदि वह यह विश्वास दिलाये कि वह राजनीतिक गतिविधियो मे भाग नही लेगे और अयूब खा के सम्बध मे अपनी विचारधारा

बदल ले तो पाकिस्तान मे लौट आने से उन्हे रोका नही जायेगा। जब मुझे पता लगा कि एक व्यक्ति मेरे पिता की हत्या के लिये बैरुत को चल पडा है तो मैने अपने पिता को लन्दन जाने के लिये नवाबजादा नसरुल्ला को उनके पास भेजा। नवाबजादा ने मेरे पिता को हत्या के षड्यत्र से भली-भाति सूचित कर दिया था। यद्यपि मेरे पिता का डाक्टर होटल के निकट ही ठहरा हुआ था परन्तु मेरे पिता की मृत्यु की सूचना उसे नही दी गई। मेरे पिता के शव का पोस्टमार्टम भी नही करने दिया गया। पाकिस्तानी दूतावास ने होटल के डाक्टर से मृत्यु का सर्टीफिकेट प्राप्त कर लिया और विमान पर उनका शव पाच घण्टे के अन्दर-अन्दर कराची भेज दिया गया।"

बेगम अख्तर के इस बयान पर जनरल याहिया खा की सरकार ने कोई कार्यवाई नही की।

पश्चिमी पाकिस्तान के वामपथी कार्यकर्ता और मेरे अपने समाचार पत्र के सवाददाता हसन नासिर को अक्तूबर १९५८ मे गिरफ्तार करके लाहौर के शाही किले मे बन्द कर दिया था। उन पर अमानुषिक अत्याचार किये गये। उनकी मृत्यु हो गई, उनका शव गुप्त रूप से जला कर राख रावी मे बहा दी गई। जब जनता ने बावेला मचाया और माग की कि इस दुर्घटना की जाच कराई जाये तो सरकार ने कहा कि हसन ने आत्महत्या कर ली थी। हसन की मा भारत से लाहौर गईं। उसे जो शव दिखाया गया उसे देखते ही उसने चिल्लाकर कहा कि यह मेरे बेटे का शव नही। किसी और का शव किसी कब्र से निकाल कर मेरे सामने रख दिया गया है। नासिर के मित्रो को सम्बोधित करते हुए मा ने कहा—"मेरे बेटे ने देश के लिये अपना जीवन दिया है और मुझे विश्वास है कि पाकिस्तान के लोग किसी न किसी दिन इसका बदला लेकर रहेंगे।"

१४

याहिया खा की तानाशाही बंगला देश मे विद्रोह

याहिया खा ने शासन-सत्ता सभालने के समय जनता को धोखा देने के लिये घोषणा की थी कि वह इस पद पर स्थाई रूप से रहना नही चाहते। उन्होने वचन दिया था कि समस्त देश मे चुनाव करायेगे और जनता के प्रतिनिधियो को देश का विधान तैयार करने की स्वतत्रता दी जायेगी।

जनरल याहिया खा ने राजनीतिक दलो को भग करने की घोषणा नही की। उन्होने तुरन्त ही किसी प्रमुख नेता को गिरफ्तार भी नही किया। वह जानते थे कि इससे स्थिति और भी बिगड जायेगी, इसलिये वह धीरे-धीरे पुराने हथकण्डो का प्रयोग करने के लिये मैदान तैयार कर रहे थे। इसके लिये उन्होने जलसो, जलूसो और हडतालो की मनाही कर दी। उन्होने एक अध्यादेश जारी कर के सैनिक-शासन की कार्यवाही की आलोचना करना जुर्म करार दिया। समाचार पत्रो पर भी इसी प्रकार के कडे प्रतिबध लगा दिये गये। एक अध्यादेश द्वारा बाहर से कोई भी समाचार पत्र मगवाने और पाकिस्तान से कोई भी समाचार पत्र बाहर भेजने की मनाही कर दी गई। इस कार्यवाही का उद्देश्य यह था कि पाकिस्तान के लोगो को यह मालूम न हो सके कि दूसरे देशो के समाचार पत्र पाकिस्तान की स्थिति पर क्या लिख रहे है और बाहर के लोगो को यह मालूम न हो सके कि पाकिस्तान मे क्या

रहे और जिन्होने लगभग सभी बडे-बडे समाचार पत्रो को खरीद लेने वाले नेशनल प्रेस ट्रस्ट पर कट्रोल कर रखा था आय कर के कागजात मे जालसाजी के आरोप मे गिरफ्तार कर लिया गया। मिया सईद सहगल पश्चिमी पाकिस्तान के चोटी के पूजीपतियो मे गिने जाते थे। लायलपुर मे पाकिस्तान की सबसे बडी कपडा मिल—कोहेनूर मिल्ज—से उन्हें लाखो रुपये मासिक की आमदनी होती थी। समुद्री जहाजो की एक नई कम्पनी पर भी उनका कन्ट्रोल था। इस कम्पनी के जहाज कराची और शघाई के बीच चलते थे। अयूब खा के दूसरे बेटे कैप्टेन अख्तर अयूब को एक बडे जमीदार राजा अमजद खा की इस शिकायत पर गिरफ्तार कर लिया गया कि उसे डरा-धमका कर उसकी १०० एकड जमीन अपने नाम करा ली थी।

अयूब खा के कई खुशामदी अफसरो को नौकरी से हटा दिया गया अथवा दूर-दूर के स्थानो पर भेज दिया गया। इस आशका से कि कई सीनियर सैनिक अफसर याहिया खा के विरुद्ध षड्यत्र कर सकते हैं उन्हे हटाकर दूसरे देशो मे भेज दिया गया। याहिया खा को सेना मे अपने निकटतम जनरलो से भी डर था। इसलिये एयर मार्शल नूर खा आदि अफसरो को पहले तो मत्रिमण्डल मे नियुक्त किया गया और इसके बाद ऐसे हालात पैदा किये गये कि वह त्यागपत्र देकर अलग हो गये। बगाली अफसरो मे से जल सेना के एडमिरल एहसन सब से शक्तिशाली थे। उन्हे पूर्वी बगाल का राज्यपाल बनाकर इस्लामाबाद से दूर भेज दिया गया।

अगस्त १९६९ मे अपना मत्रिमडल सगठित करने के लिये याहिया खा ने जनता के किसी भी नेता को नियुक्त नही किया। पूर्वी बगाल से उन्होने डाक्टर ए० एम० मल्लिक और एम० के० हफीजुद्दीन को नियुक्त किया। डाक्टर मल्लिक किसी समय चीन मे पाकिस्तान के राजदूत थे। १९६२ मे उन्हे इसलिये हटा दिया गया था कि उन्होने

एक रिपोर्ट मे चेतावनी दी थी कि चीन किसी समय पाकिस्तान को धोखा देकर उसी प्रकार आक्रमण कर देगा जिस प्रकार उसने भारत पर किया था। बगाल मे कहा जाता था कि डाक्टर मल्लिक अमरीका के एजेट है। हफीजुद्दीन कुछ वर्ष पहले पूर्वी बगाल मे पुलिस के आई० जी० थे। इस हैसियत से उन्होने देशभक्तो और प्रगतिशील वर्ग पर बडा जुल्म किया था। जनता उन्हे घृणा की दृष्टि से देखती थी।

सीमा प्रात से जिस व्यक्ति को घरेलू मामलो और कश्मीर विभाग का मत्री नियुक्त किया गया वह पुलिस के भूतपूर्व आई० जी० सरकार अब्दुल रशीद थे। इस्कन्दर मिर्जा ने इन्हे एक बार सीमा प्रान्त का और दूसरी बार पश्चिमी पाकिस्तान का मुख्य मत्री नियुक्त किया था। नवाब मुजफ्फर अली खा किजलबाश एक और मत्री थे। देश के विभाजन से पहले वह अग्रेज सरकार के एजेट थे। इस्कन्दर मिर्जा ने उन्हे पश्चिमी पाकिस्तान का मुख्य-मत्री नियुक्त किया था। उनकी खूबी यही थी कि वह एक बहुत बडे जमीदार थे। मेजर जनरल शेख अली खा को सूचना एव प्रसार विभाग का मत्री नियुक्त किया गया। यह साहिब नवाब पटौदी के मामू है। देश के विभाजन से पहले याहिया खा के विरुद्ध एक लडकी पर बलात्कार के अभियोग मे कार्यवाही होने वाली थी तो उस समय शेर अली ने अग्रेज अधिकारियो को सिफारिश करके याहिया खा को बचा लिया था। शायद इसका बदला देने के लिये ही मेजर जनरल अली खा को मत्रिमण्डल मे नियुक्त कर दिया गया था।

सिंध के करोडपति मिल मालिक महमूद हारु को याहिया खा ने सिंधियो का प्रतिनिधि बनाकर मत्रिमण्डल मे नियुक्त किया। सेठ साहिब की सबसे बडी खूबी यह थी कि उनकी गिनती पश्चिमी पाकिस्तान के उन २० परिवारो मे होती थी जो पाकिस्तान के ८० प्रतिशत कारखानो और व्यापार पर कन्ट्रोल करते है। पाकिस्तान का ६० प्रति-

गत विदेशी कारोबार इन्ही सेठ साहिब की मिल्कियत मे था। तथाकथित असैनिक मत्रिमडल मे सुरक्षा, विदेशी मामलो और खजाना आदि के विभाग याहिया खा ने अपने पास रखे। दो टोडी बगालियो के अतिरिक्त अन्य सभी मत्री पश्चिमी पाकिस्तान से सम्बध रखते थे। इस प्रकार से जहा पूर्वी बगाल से फिर घोर अन्याय हुआ वहा प्रगतिशील वर्गो के लिये यह एक नया चैलेज था क्योकि बडे-बडे पूजीपतियो और जमीदारो को मत्रिमण्डल मे नियुक्त करने से यह बात स्पष्ट हो गई थी कि याहिया खा जनता के हितो की रक्षा करने के लिये तैयार नही थे।

विदेशी मामलो मे अयूब खा चीन की ओर झुक गये थे। याहिया खा ने पूजीपतियो और मिल मालिको को अपनी सरकार मे नियुक्त करके अमरीका को इस बात का सकेत दिया कि उनका झुकाव चीन की ओर नही बल्कि अमरीका की ओर है। उन्होने स्वय अमरीका जा कर अमरीकी नेताओ को यही बात कही और यह इसी का परिणाम था कि अमरीका ने पाकिस्तान को सैनिक सहायता देने का जो सिलसिला १९६५ मे बन्द कर दिया था वह दोबारा शुरू करने के लिये मैदान तैयार करना शुरू कर दिया। याहिया खा ने अमरीका को यह बताया कि वामपन्थी पाकिस्तान सरकार को अपनी रक्षा के लिये चीन से सैनिक सहायता लेने के लिये मजबूर कर रहे है परन्तु पाकिस्तान इस्लामी देश होने के कारण चीन की सहायता पर निर्भर करना नही चाहता। याहिया खा ने अमरीका को यह भी विश्वास दिलाया कि पश्चिमी एशिया मे पाकिस्तान मिस्र का साथ नही देगा बल्कि जोर्डन और सउदी अरब की सहायता करके अमरीका के हितो की रक्षा मे सहयोग देगा।

याहिया खा ने रूस पर भी डोरे डाले। रूस को यह विश्वास दिलाने की कोशिश की गई कि पाकिस्तान रूस के विरुद्ध चीन का साथ नही

देगा। याहिया खा का वास्तव मे अभिप्राय यह था कि भारत और रूस और भारत और अमरीका मे मतभेद पैदा हो और चीन के साथ ही इन देशो से भी अधिक से अधिक सैनिक सहायता लेकर पाकिस्तान की सैनिक शक्ति को ऐसा मजबूत किया जाय कि उचित अवसर मिलने पर भारत पर आक्रमण करके १९६५ की हार का बदला लिया जाये।

अमरीका और रूस से मित्रता की बाते करने का एक और अभिप्राय यह था कि ये दोनो देश पूर्वी बगाल की जनता से किसी प्रकार की सहानुभूति न करें। यह बात किसी से गुप्त नही कि जब से पाकिस्तान ने चीन से गठजोड किया था अमरीका का ध्यान पूर्वी बगाल पर लगा हुआ था। पाकिस्तान के समाचार पत्र यह आरोप लगाया करते थे कि अमरीका पूर्वी बगाल को पाकिस्तान से अलग करने के लिये साजबाज कर रहा है। याहिया सरकार ने अमरीका मे यह प्रापेगैंडा शुरू किया कि पाकिस्तान का झगडा केवल भारत से है। अमरीका पाकिस्तान को सहायता दे तो पाकिस्तान मे चीन के समर्थक कमजोर हो जायेंगे।

याहिया सरकार अमरीका के साथ ही रूस से भी कुछ युद्ध सामग्री लेने मे सफल हो गई। रूस से उसे "टी—५४" और "टी–५५" के कुछ टैंक मिल गये और आर्थिक सहायता का वचन भी मिल गया। पाकिस्तानी समाचार पत्रो ने इसे सैनिक सरकार का बहुत बडा कारनामा ठहराया और प्रापेगैंडा किया कि रूस को भारत से दूर रखने के लिये पाकिस्तान के किसी भी दूसरे शासक को जो सफलता नही हुई वह याहिया खा को हो रही है। जब भारत सरकार ने पाकिस्तान को रूसी सैनिक सहायता मिलने पर विरोध पत्र भेजा तो याहिया खा को प्रसन्नता हुई। वास्तव मे रूस पाकिस्तान मे चीन का प्रभाव खत्म करने के लिये यह कदम उठा रहा था। भारत के सम्बध मे रूस की नीति मे कोई परिवर्तन नही हुआ था।

अगस्त १९७० मे याहिया खा ने अमरीका के प्रधान श्री निक्सन और विदेश मत्री श्री रॉजर्स से भेट की। इसके परिणाम स्वरूप अमरीका ने पाकिस्तान को युद्ध सामग्री देने का फैसला कर लिया। जहा अमरीका की ओर से कहा गया कि पाकिस्तान को चीन के प्रभाव से दूर करने के लिये यह सहायता देना अमरीका के हित मे है वहा रूस की ओर से कहा गया कि पाकिस्तान को सहायता देकर रूस पाकिस्तान मे अपना प्रभाव मजबूत करना चाहता है जिससे पाकिस्तान युद्ध का मार्ग न अपनाये। याहिया खा सरकार ने इस पर यह प्रापेगैडा किया कि ससार भर मे अब भारत का कोई मित्र नही रहा। यह भी कहा गया कि भारत पाकिस्तान पर हमला करने के लिये तैयारिया कर रहा हे इसलिये पाकिस्तान अपनी रक्षा के लिये दूसरे देशो से सैनिक सामग्री खरीदने के लिये मजबूर हो रहा है। पश्चिमी पाकिस्तान के समाचार पत्रो ने लिखना शुरू किया कि पाकिस्तानी सेना काश्मीर को "स्वतत्र" कराने के लिये अमरीका और रूस से प्राप्त किये हुए शस्त्रो का प्रयोग करेगी। पश्चिमी पाकिस्तान और पाकिस्तानी अधिकृत काश्मीर के कई नेताओ ने काश्मीर पर आक्रमण करने के नारे लगाना शुरू कर दिया। अधिकृत काश्मीर मे "अल बर्क" नाम की छापामारो की एक गुरिला सस्था स्थापित की गई। काश्मीर मे जासूसी और तोड-फोड की गतिविधियो के लिये इस सेना मे भरती होने वालो को ट्रेनिंग देने के लिये कैम्प खोले गये और दिल्ली मे समाचार पहुचे कि कुछ चीनी विशेषज्ञ पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान मे छापामारो को ट्रेनिंग दे रहे है। यह भी मालूम हुआ कि विलोचिस्तान मे अमरीका के विशेषज्ञ भी एक बहुत वडे कैम्प मे पाकिस्तानी छापामारो को प्रशिक्षण दे रहे है। बाद के हालात ने सिद्ध कर दिया कि याहिया खा की जासूसी एजेसी समस्त भारत मे जासूसी और तोडफोड के लिये अपने एजेट तैयार कर रही थी।

याहिया खा ने वचन दिया था कि वह एक वर्ष के अन्दर चुनाव

करायेगे। ज्यू ही विपक्षी दलो की ओर से शीघ्र ही चुनाव कराने की माग की जाती थी याहिया सरकार ऐसी गतिविधिया तेज कर देती थी जिनमे यह मालूम हो कि भारत पाकिस्तान पर आक्रमण करने वाला है और याहिया सरकार ने काश्मीर पर अधिकार करने का पक्का फैसला कर चुकी है। अगस्त १९६९ के पहले सप्ताह मे याहिया खा ने जनरल अब्दुलहमीद खा के नेतृत्व मे एक सैनिक डैलीगेशन चीन भेजा। याहिया खा ने चीन के प्रधान मत्री को व्यक्तिगत रूप से भी एक सन्देश भेजा जिसमे चीन को उसकी सहायता पर धन्यवाद देते हुए आशा प्रकट की गई थी कि "आने वाले दिनो मे दोनो देशो मे यह सहयोग और भी बढेगा।" चीन के प्रधान मत्री ने पाकिस्तानी नेताओ का स्वागत करते हुए कहा कि "चीन काश्मीर को स्वतत्र कराने के पाकिस्तानी सघर्ष मे पूरा-पूरा सहयोग देगा।" चीन के समाचार पत्रो ने प्रोपेगैंडा किया कि "हमारे देशवासी काश्मीर की जनता को स्वतत्रता प्राप्त करने के आन्दोलन मे और पाकिस्तानी जनता को "भारतीय साम्राज्य" के "हथकण्डो" का मुकाबला करने के लिये पूरी-पूरी सहायता देगे।"

चीन से सहायता का वचन प्राप्त करने के बाद याहिया खा स्वय नवम्बर १९७० के पहले सप्ताह मे चीन गये। उनके साथ ही लेफ्टीनेन्ट जनरल एम० एम० पीरजादा, मेजर जनरल मल्लिक अब्दुल अली और मेजर जनरल मुहम्मद खुरशीद हैदर भी चीन गये। इन सैनिक अधिकारियो का याहिया खा के साथ चीन जाना यह बात स्पष्ट करता था कि याहिया खा सामूहिक रूप से सैनिक नीति पर चीनियो से विचार-विमर्श करना चाहते थे।

चीन की राजधानी मे याहिया खा और उनके सहकारियो का भव्य स्वागत किया गया। सरकारी समाचार पत्र "पीपल्ज डेली" ने एक सम्पादकीय मे लिखा कि "चीन पाकिस्तान को विश्वास दिलाता है कि राष्ट्रपति याहिया खा के इस दौरे के परिणाम सन्तोषजनक होगे और

चीन पाकिस्तान को उसकी स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिये और काश्मीर के लोगो को आत्मनिर्णय का अधिकार प्राप्त करने के लिये सहायता देता रहेगा।" १५ नवम्बर १८७० को लाहौर के सरकारी समाचार पत्र "पाकिस्तान टाइम्ज" ने अपने सम्पादकीय मे लिखा कि चीन पाकिस्तान पर किसी भी आक्रमण और पाकिस्तान मे किसी भी बाहरी हस्ताक्षेप की अवस्था मे पाकिस्तान को पूरी-पूरी सहायता देगा। चीन ने पाकिस्तान को २ अरब डालर का ऋण देने की पेशकश की है। इस पर कोई सूद भी नही लिया जायेगा। याहिया खा ने इसका जिक्र करते हुए कहा कि चीन की पेशकश इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि चीन की जनता को पाकिस्तान की जनता से अथाह प्रेम है।

प्रश्न उठता है कि याहिया खा यह दौड-धूप क्यो कर रहे थे ? भारत ने तो उन्हे युद्ध की कोई धमकी नही दी थी। धमकिया तो पाकिस्तान की ओर से ही दी जा रही थी। वास्तव मे याहिया खा देश की शासन-सत्ता जनता और उसके प्रतिनिधियो को सौप देना नही चाहते थे। उन्हे मालूम हो चुका था कि उनके समर्थक चुनाव मे किसी भी प्रान्त मे जीत नही सकते थे। याहिया खा ने पश्चिमी पाकिस्तान का एक यूनिट भग कर पहले की तरह वहा पाच प्रान्तो के पुर्नसगठन की घोषणा कर दी थी परन्तु अब पजाब की विरोधी मुस्लिस लीग सीमा प्रान्त की नेशनल अवामी पार्टी, और सिंध और बिलोचिस्तान के देशभक्तो ने पूर्वी बगाल की आवामी लीग से समझौता कर लिया था और याहिया खा को दिखाई दे रहा था कि चुनाव मे सैनिक शासन के विरोधी जीत जायेगे और पूर्वी बगाल ही नही सभी प्रान्त आन्तरिक रूप से स्वतत्र हो जायेगे। सेना को जो अधिकतर पश्चिमी पाकिस्तान के सिपाहियो की है एक प्रकार से बगालियो के अधीन रहना पडेगा। इसलिये वह चाहते थे कि ऐसी स्थिति पैदा कर दी जाये कि चुनाव ही न हो। इसके लिये वह भारत पर आक्रमण करके स्थिति

को असाधारण बना देने के लिये चाले चल रहे थे। इसके लिये वह काश्मीर मे जासूस भेज रहे थे। इन लोगो ने जगह-जगह आग लगाना शुरू किया। शेख अब्दुल्ला के समर्थको से इनका गठजोड हो गया था। शेख अब्दुल्ला और उनके साथी मिर्जा अफजल बेग ने नई दिल्ली मे पाकिस्तानी राजदूत से मुलाकाते करना शुरू कर दिया। उनके समर्थक काश्मीर मे अफवाहे फैला रहे थे कि भारतीय सेना के अधिकारी आग लगा रहे हे। ऐसा करके भारतीय सेना के प्रति घृणा फैलाई जा रही थी। मिर्जा ने माग की कि सेना को देहात से हटा लिया जाये। पाकिस्तान के शासक यह समझ रहे थे कि युद्ध होने पर शेख के समर्थक उनका साथ देगे। काश्मीर मे घुसे हुए पाकिस्तानी छापामार भी हमले करेगे। पाकिस्तानी एजेट काश्मीर मे "अल-फातेहा" नाम की छापामार सस्था सगठित कर रहे थे। इन लोगो को शस्त्र और बम दिये जा रहे थे। पूर्वी बगाल मे गद्दार नागा और मीजो कबायलियो को भी इसी प्रकार भारत से युद्ध के लिये प्रशिक्षण दिया जा रहा था।

पाकिस्तान मे चुनाव अक्तूबर १९७० मे होने थे। अगस्त मे पूर्वी बगाल मे भयकर समुद्री तूफान आया। इससे एक लाख से अधिक व्यक्ति मारे गये। गाव के गाव बाढ मे डूब गये। सरकारी अधिकारियो ने तूफान के लिये समय पर चेतावनी नही दी थी और तूफान आने पर भी सरकार ने पीडितो की सहायता के लिये तुरन्त प्रबध नही किया था। इस पर पूर्वी बगाल मे तानाशाही के विरुद्ध क्रोध की आग भडक उठी। बगाली नेताओ ने कहा कि शासको ने लापरवाही का प्रमाण देकर बगालियो से दासो का-सा बर्ताव किया है। इसका हल यही है कि बगाली जनता अपने अधिकारो के लिये सघर्ष करे। इस समय भारत सरकार ने बगाली पीडितो की सहायता के लिये एक करोड रुपया दिया। भारत सरकार पीडितो की सहायता के लिये गाडिया, जहाज और कार्यकर्ता भी भेजना चाहती थी परन्तु याहिया

खा ने यह पेशकर ठुकरा दी। रेडियो पाकिस्तान भारत को पाकिस्तान का शत्रु ठहराता रहा। इससे बगाली जनता पर शासको के भिन्न प्रभाव पडा। याह्यिा खा ने तूफान की ओट लेकर चुनाव स्थगित कर दिये। इस पर भी बगाली जनता ने क्रोध प्रकट किया। अन्त मे घोपणा की गई कि दिसम्बर के पहले सप्ताह मे चुनाव होगे। इसके साथ ही याह्यिा खा ने एक बयान मे कहा कि चुनाव के बाद नेशनल असेम्बली का अधिवेशन शुरू होगा। इस अधिवेशन को देश के भविष्य के सविधान की तैयारी का अधिकार होगा परन्तु विधान के लिये यह शर्त आवश्यक है कि पाकिस्तान की एकता को कोई खतरा पैदा न हो। केन्द्रीय सरकार मजबूत हो और जो भी विधान तैयार हो प्रत्येक प्रान्त के सदस्यो की बहुसख्या उसका समर्थन करे। उन्होने यह भी कहा कि ऐसा सविधान तीन मास के अन्दर-अन्दर तैयार करना होगा। यदि ऐसा न हुआ तो नेशनल असेम्बली को भग करके पुन चुनाव कराये जायेगे। उन्होने यह भी कहा कि असेम्बली जो भी सविधान तैयार करे वह उसी हालत मे लागू होगा जब उसे मेरी स्वीकृति प्राप्त हो जायेगी।

यह घोपणा करने के बाद उन्होने गुप्त रूप से अपने समर्थको को तैयार करना शुरू किया उन्होने घोषणा की कि सविधान इस्लाम की नीव पर बनाया जाये। इसका मतलब यह था कि समाजवाद तथा प्रगतिशील सुधारो के लिये सविधान मे किसी प्रकार की गुजायश नही रखी जा सकती। ऐसे प्रयत्नो को इस्लाम के विरुद्ध बताकर विफल कर दिया जायेगा और प्रातीय सरकारो को अधिक अधिकार नही दिये जायेगे। इसका मतलब यह धमकी भी देना था कि जनता के प्रतिनिधियो को किसी हालत मे भी अपनी इच्छा अनुसार अपने देश के लिये शासन प्रणाली का ढाचा तैयार करने की स्वतत्रता नही दी जायेगी। याह्यिा खा जो चाहेगे वही होगा।

याह्यिा खा ने इस्लाम के नाम पर प्रगतिशील दलो का विरोध

करने वाले राजनीतिक दलो को उभारना शुरू कर दिया। इस बात के प्रमाण है कि उन्होने गुप्तरूप से जमायत इस्लामी, कियूम मुस्लिम लीग, डैमोक्रेटिक पार्टी और जमायत इस्लाम से साठ-गाठ कर ली थी। यह राजनीतिक दल इस्लाम का नाम लेकर अपने विरोधियो की कडी आलोचना कर रहे थे और यह प्रोपेगैण्डा भी कर रहे थे कि समाजवाद और प्रातो को अधिकार देने की माग करने वाले इस्लाम के शत्रु है। भारत और हिन्दुओ के एजेट है। उनका यह कहना भी था कि काश्मीर पर हर हालत मे अधिकार करने के लिये भारत से युद्ध किया जाना चाहिये। इन दलो के नेता शेख मुजीबुर्रहमान और खान वली खा को भारत और हिन्दुओ के दलाल कहकर बदनाम कर रहे थे। यह आरोप लगाया जा रहा था कि भारत इन राजनीतिक दलो की आर्थिक सहायता कर रहा है ताकि पाकिस्तान के टुकडे-टुकडे हो जाये। स्वय याहिया खा ने चीन से लौट आने पर पिशावर मे एक पत्रकार सम्मेलन मे वक्तव्य देते हुए वली खा की नेशनल अवामी पार्टी पर यह आरोप लगाया। ढाका मे जब याहिया खा से एक पत्रकार सम्मेलन मे कहा गया कि मौलाना भापानी और शेख मुजीबुर्रहमान प्रातो की आन्तरिक स्वतत्रता की माग कर रहे है और जनता उन्हे अपना नेता समझती है तो याहिया खा ने कहा कि चुनाव मे मालूम हो जायेगा कि जनता के असली नेता कौन है। मै उन्हे जनता के प्रतिनिधि नही समझता। जाहिर है कि प्रगतिशील दल चुनाव मे बहुमत प्राप्त नही कर सकेगे। अपने विरोधियो के हाथ कमजोर करने के लिये याहिया खा भारत के विरुद्ध प्रोपेगैडा कर रहे थे। जहा प्रगतिशील दल इस बात पर जोर देते थे कि पाकिस्तान को भारत में अपने सम्बन्धो मे सुधार करना चाहिये, वहा याहिया खा यह शोर मचा रहे थे कि भारत पाकिस्तान पर आक्रमण करने की तैयारिया कर रहा है। याहिया खा के समर्थक शोर मचा कर यह जाहिर कर रहे थे कि भारत से मित्रता की बाते करना पाकिस्तान और

इस्लाम से शत्रुता करना है।

मि० भुट्टो की पीपल्ज पार्टी याहिया खा के विरुद्ध प्रोपेगैंडा कर रही थी और "इस्लामी समाजवाद" लाने की बाते भी कर रही थी परन्तु यह दल भारत के विरुद्ध जहर उगल रहा था। याहिया खा के समर्थको से भी दो कदम आगे बढकर मि० भुट्टो कह रहे थे कि यदि उनकी पार्टी शासन-सत्ता प्राप्त करने मे सफल हो गई तो वह काश्मीर पर अधिकार करने के लिये अवश्य ही भारत से युद्ध करेगी।

याहिया खा युद्ध की तैयारिया कर रहे थे। पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर के तथाकथित प्रधान सरदार अब्दुल कयूम ने एक भाषण मे कहा कि १९७१ मे काश्मीर के लिये अवश्य युद्ध किया जायेगा। जमायत इस्लामी के अध्यक्ष मौलाना मौदूदी ने कहा कि काश्मीर पर हमला करने का समय निकट आ गया है। कराची के समाचार पत्र "जिन्दगी" ने लिखा कि काश्मीर के मुसलमान स्वतत्र होने के लिये पाकिस्तान की ओर देख रहे है। "दैनिक जग" कराची ने लिखा कि काश्मीर की जनता पाकिस्तान से सम्मिलित होने के लिये उत्सुक है और हमे विश्वास है कि युद्ध का बिगुल बजते ही काश्मीरी मैदान मे निकल आयेगे।

याहिया खा ने कहा कि काश्मीर की स्वतत्रता के लिये चीन पाकिस्तान का साथ देगा। शेख अब्दुल्ला और मिर्जा अफजल बेग ने चीन और पाकिस्तान के शासको की प्रशसा करते हुए बयान दिये।

दिसम्बर के पहले और दूसरे सप्ताह मे जब पाकिस्तान मे चुनाव होने वाले थे पाकिस्तान रेडियो ने अचानक आरोप लगा दिया कि भारतीय सेना ने पूर्वी बगाल के एक गाव पर हमला करके सैकडो मुसलमानो को मौत के घाट उतार दिया है। वास्तव मे ऐसी कोई घटना नही हुई थी। इस झूठे आरोप का उद्देश्य यह था कि पूर्वी बगाल के लोग अवामी लीग का जो भारत से मित्रता के सम्बध स्थापित करने की माग कर रही थी, चुनाव मे समर्थन न करे। चुनाव से कुछ दिन पहले सभी

वामपथी दल बगाल मे शेख मुजीबुर्रहमान के समर्थन मे मुकाबले से हट गये थे। एक दिन पहले मौलाना भापानी ने एक सार्वजनिक सभा मे घोषणा की थी कि उनका दल पाकिस्तान से अलग होने और पूर्ण स्वतत्रता प्राप्त करने के लिये आन्दोलन करेगा। इनके इस फैसले का एक परिणाम यह हुआ कि याहिया खा के विरोधियो मे फूट की कोई आशका न रही।

चुनाव के परिणामो ने याहिया खा, उनके साथियो और भुट्टो को परेशान कर दिया। शेख साहिब की अवामी लीग ने नेशनल असेम्बली मे ३०० सीटो मे से १६० पर जीत कर बहुमत प्राप्त कर लिया। इसके साथ ही वली ग्रुप की नेशनल अवामी पार्टी ने ६ और जमायते इस्लाम हजारवी ग्रुप ने सात-सात सीटो पर अधिकार कर लिया। दौलताना ग्रुप की मुस्लिम लीग ने भी सात सीटे प्राप्त कर ली। जमायत इस्लामी केवल चार सीटे प्राप्त कर सकी, जबकि भुट्टो के दल ने ८१ सीटे जीती। पूर्वी बगाल विधान सभा मे अवामी लीग ने आठ के अतिरिक्त बाकी सभी सीटो पर अधिकार कर लिया। सीमा प्रान्त और बिलोचिस्तान मे वली खान की नेशनल अवामी पार्टी का बोल-बाला रहा। इस बात से स्पष्ट था कि केन्द्र और पूर्वी बगाल मे अवामी लीग बहुमत होने के कारण अपने मत्रिमण्डल बना सकती थी और नेशनल असेम्बली मे बहुमत होने के कारण वह अपनी इच्छानुसार विधान तैयार कर सकती थी। परन्तु न तो सैनिक शासक यह चाहते थे न ही भुट्टो को यह बात पसन्द थी इसलिये जनता को पराजित करने के लिये नई चाले चली जाने लगी। सबसे पहली चाल यह थी कि भारत से युद्ध किया जाये। १८ जनवरी १९७१ को काश्मीर पुलिस ने पाकिस्तान के जासूसो और एजेटो का एक सगठित गिरोह जिसके २२ सदस्य थे पकड लिया। नई दिल्ली मे पाकिस्तानी दूतावास के एक उच्च अधिकारी सरदार इकबाल राठौर से इन लोगो का सीधा सम्बध था। राठौर को

भारत से निकल जाने का आदेश दिया गया। यह मालूम होने पर कि शेख अब्दुल्ला के "रायशुमारी मुहाज" का भी पाकिस्तान से सम्बध है, इस सस्था को अवैध घोषित कर दिया गया और शेख और मिर्जा अफजल बेग के काश्मीर मे प्रवेश की मनाही कर दी गई।

इससे पहले पुलिस ने पजाब मे पाकिस्तानी जासूसो का एक गिरोह पकडा था, जिसके नेता हिन्दुओ के वेष मे रह कर जासूसी कर रहे थे। काश्मीर और जम्मू मे कई और पाकिस्तानी जासूस भी पकडे-गये। पाकिस्तान की इन हरकतो से यह सिद्ध हो गया कि पाकिस्तान काश्मीर पर हमला करने के लिये तैयारिया कर रहा था। यह भी मालूम हुआ कि पाकिस्तानी एजेटो ने काश्मीर के मुख्म मत्री और दूसरे मत्रियो की हत्या का षड्यंत्र रचाया था।

जनवरी के अन्तिम सप्ताह मे दो पाकिस्तानी एजेंटो मुहम्मद अशरफ और हाशिम कुरेशी ने भारत के एक विमान का अपहरण किया और उसे लाहौर ले जाकर बारूद से उडा दिया। इनमे से एक कुछ सप्ताह पहले पाकिस्तान से श्रीनगर आया था और भारतीय अधिकारियो को उसने सूचना दी थी कि पाकिस्तान भारत के विमानो का अपहरण करने के लिये तैयारिया कर रहा है। यह व्यक्ति भारतीय सरकार की एक एजेंसी मे भरती हो गया और इसे ही श्रीनगर और जम्मू के बीच भारतीय विमानो की देख-भाल का काम सौपा गया। वास्तव मे यह व्यक्ति पाकिस्तान षड्यत्र के अनुसार काम कर रहा था। बाद मे मालूम हुआ कि उसकी चाल यह थी कि श्रीमती इन्दिरा गाधी के सुपुत्र को किसी विमान पर भगा लिया जाये। यह षड्यत्र विफल रहा तो फैसला किया गया कि काश्मीर के मुख्य मत्री श्री जी० एम० सादिक श्रीनगर से जिस विमान पर बैठे उसका अपहरण कर लिया जाये और इसके बाद समस्त ससार मे प्रोपेगैंडा किया जाये कि काश्मीर मे स्वतत्रता सग्राम हो रहा है। जिस विमान का अपहरण किया गया, उसमे

मुख्य-मत्री ने यात्रा करनी थी परन्तु किसी कारण उन्होने अपना विचार बदल दिया । दूसरी ओर सरकार पाकिस्तानी गुप्तचरो को गिरफ्तार कर रही थी, इसलिये इन पाकिस्तानी एजेटो ने स्टन्टबाजी के लिये इसी भारतीय विमान का अपहरण कर लिया । जब यह विमान लाहौर के अड्डे पर उतरा तो एक ओर मि० भुट्टो और दूसरी ओर लाहौर के जिलाधीश पाकिस्तानी एजेटो के स्वागत के लिये गये । दोनो एजेटो ने धमकी दी कि यदि काश्मीर मे गिरफ्तार किये गये व्यक्तियो को मुक्त न किया गया और शेख अब्दुल्ला और उनके साथियो पर से प्रति-बध न हटाया गया तो इस विमान को नष्ट कर दिया जायेगा । पाकि-स्तान सरकार के एक प्रवक्ता ने इन मागो का समर्थन किया और पश्चिमी पाकिस्तान के सभी समाचार पत्रो ने लिखा कि काश्मीर को "स्वतत्र" कराने के लिये सघर्प शुरू हो गया है और अभी इससे भी बडी कई घटनाये होगी ।

जाहिर है कि इस हरकत का मतलब पाकिस्तानी जनता की असली समस्याओ से ध्यान हटाकर भारत से युद्ध के लिये तैयारिया करना था । परन्तु भारत सरकार ने साहस से काम लेकर भारत पर पाकिस्तानी विमानो की उडानो की मनाही कर दी और सीमाओ की रक्षा के लिये उचित प्रबध कर लिया । यद्यपि पश्चिमी पाकिस्तान के नेता भारत को युद्ध की धमकिया दे रहे थे परन्तु पूर्वी बगाल के नेताओ ने स्पष्ट शब्दो मे इस घटना की निन्दा की । उन्होने आरोप लगाया कि यह हरकत बगाली जनता के आन्दोलन को विफल करने के लिये की गई है । उनके समाचार पत्रो ने लिखा कि यह कोई नई बात नही । जब भी जनता अपने अधिकारो के लिये सघर्ष करती है उन्हे विफल करने के लिये भारत से झगडा मोल ले लिया जाता है । याहिया खा के समर्थको ने इस पर पश्चिमी पाकिस्तान मे बगाली नेताओ के विरुद्ध प्रदर्शन कराये ।

भुट्टो ने अवामी लीग के नेताओ को सरकार की बागडोर देने का विरोध शुरू कर दिया। याहिया खा के समर्थको ने कहना शुरू कर दिया की अवामी लीग के नेता पाकिस्तान को खतम कर देना चाहते है। याहिया खा ने कहना शुरू किया कि पहले सभी दलो के नेता आपस मे बातचीत करके भविष्य के सविधान के सम्बन्ध मे बातचीत करे, तब ही नेशनल असेम्बली का अधिवेशन बुलाया जायेगा। अवामी नेता जानते थे कि यह एक खतरनाक चाल है और याहिया खा का उद्देश्य नेशनल असेम्बली के सदस्यो मे फूट डाल कर अपना उल्लू सीधा करना है। वह माग कर रहे थे कि प्रजातत्र के सिद्धान्तो के अनुसार बहुमत रखने वाले दल को मत्रि-मण्डल निर्माण करने का आमत्रण दिया जाये और सविधान तैयार करने का काम असेम्बली को सौपा जाये। जनता के दबाव पर याहिया खा ने घोपणा की कि ३ मार्च को ढाका मे असेम्बली का अधिवेशन शुरू हो जायेगा। भुट्टो ने इसका बहिष्कार करने की घोषणा कर दी और धमकी दी कि पश्चिमी पाकिस्तान से जो भी सदस्य जायेगा उसकी टागे तोड दी जायेगी। उन्होने यह भी धमकी दी कि मै समस्त पाकिस्तान मे आन्दोलन की आग लगा दूगा। इस पर याहिया खा ने अधिवेशन स्थगित कर दिया और पुन इस बात पर जोर देना शुरू किया कि अधिवेशन से पहले सभी दलो के नेता आपस मे समझौता कर ले। इन्ही दिनो दिल्ली मे सूचना मिली कि पाकिस्तानी सेना को बुला लिया गया है और तेजी से नई भरती भी की जा रही है। पश्चिमी पाकिस्तान से सेनाओ को पूर्वी बगाल मे भेजा जाने लगा। इन गतिविधियो का यही उद्देश था कि बगाली जनता को कुचल देने की तैयारिया की जाये। यहिया खा ने पूर्वी बगाल के बगाली राज्यपाल एडमिरेल एसन को इस्लामाबाद मे बुलाया और उनके ढाका मे पहुचते ही उन्हे डिसमिस करके लेफटीनेन्ट जनरल शहाबुद्दीन को उनकी जगह नियुक्त करने की घोषणा कर दी। रेडियो पर भाषण देते हुए याहिया खा ने कहा कि भारत

ने स्थिति बिगाड दी है, इसीलिये मैने असेम्बली का अधिवेशन स्थगित कर दिया है। बगाली समझ गये कि उन्हे गुलामी की जजीरो मे जकडे रखने के लिये भारत का नाम घसीटा जा रहा है। ढाका, चटगाव, सिल्हट और दूसरे शहरो मे जनता याहिया खा के विरुद्ध उठ खडी हुई। पुलिस और सेना से उसका टकराव होने लगा।

याहिया सरकार ने अब यह प्रोपेगैंडा करना शुरू किया कि भारत पूर्वी बगाल पर आक्रमण करने के लिये तैयारिया कर रहा है और पूर्वी बगाल मे पाकिस्तानी सेना को भेजने मे रुकावट डालने के लिये भारत ने अपने ही एजेटो द्वारा अपने विमान का अपहरण कराके और लाहौर मे उसे नष्ट कराके इस दुर्घटना की ओट ली और पाकिस्तानी विमानो की उडानो पर प्रतिबध लगा दिया। यह एक और झूठ था क्योकि भारतीय विमान का अपहरण करने वालो को इससे पहले पाकिस्तान ने ही "स्वतत्रता सग्राम के वीर सैनिक" करार दिया था। याहिया खा को शायद इस बात की आशका नही हुई थी कि उनका यह षड्यत्र उनके अपने लिये खतरनाक सिद्ध होगा। बगाली जनता को उसके आन्दोलन से हटाया नही जा सका। और इस स्थिति मे पाकिस्तान के लिये भारत सरकार से युद्ध करना भी असम्भव था। इस पर समुद्र के रास्ते याहिया खा ने पूर्वी बगाल मे सेनायें भेजना शुरू कर दिया। यह बात स्पष्ट हो रही थी कि याहिया खा बगाली जनता पर प्रहार करने के लिये तैयारिया कर रहे थे।

शेख मुजीबुर्रहमान ने तानाशाही की इस धाधली के विरुद्ध हडताल करने का आदेश दे दिया और याहिया सरकार से पूर्ण नामलवर्तन का आन्दोलन शुरू कर दिया। यह आन्दोलन इतना सफल हुआ कि पूर्वी बगाल के सरकारी कर्मचारियो ने पाकिस्तानी अधिकारियो का कोई भी आदेश मानने से इन्कार कर दिया। यहा तक कि याहिया खा के नियुक्त किये हुए सैनिक गवर्नर को हाई कोर्ट के जजो ने पद सम्भालने की सोगध दिलाने से साफ इन्कार कर दिया। सरकारी कार्यालयो, पुलिस थानो,

बन्दरगाहो और बैको मे शेख साहिब के सिवा किसी का आदेश नही माना जाता था। याहिया खा पश्चिमी पाकिस्तान से जो सेना भेज रहे थे, बगाली उसे राशन नही देते थे। रेलवे कर्मचारी उनके लिये गाडिया नही चलाते थे, बन्दरगाहो पर कर्मचारी सैनिक सामान जहाजो से नही उतारते थे। सेना जगह-जगह गोलियो का प्रयोग कर रही थी परन्तु जनता जान पर खेल कर मुकाबला कर रही थी।

ऐसी स्थिति मे याहिया खा स्वय ढाका मे आये। भुट्टो, अब्दुल कयूम, और दूसरे नेता भी आये। याहिया खा ने बातचीत का नाटक रचाया परन्तु वास्तव मे वह बगाली जनता को सैनिक शक्ति से कुचल देने की तैयारिया कर रहे थे। शेख मुजीबुर्रहमान ने घोषणा की कि उन्होने पूर्वी बगाल का सिविल शासन अपने हाथ मे ले लिया है। समस्त प्रान्त मे इसका स्वागत किया गया। यहा तक कि उनके विरोधी मि० नूरउल अमीन ने भी जो नेशनल असेम्बली मे शेख साहिब के एकमात्र विरोधी बगाली सदस्य थे शेख साहिब की मागो के समर्थन मे घोषणा कर दी। प्रान्तीय सरकार पर वास्तव मे शेख साहिब का अधिकार हो गया था। सभी सरकारी कर्मचारी उनके आदेशो के अनुसार काम कर रहे थे। याहिया खा जानते थे कि इस समय टक्कर लेना कठिन है। इसलिये वह पश्चिमी पाकिस्तान से अधिक से अधिक सेना लाकर प्रहार करना चाहते थे। उन्हे बगाली पुलिस और बगाली सेना पर भी कोई विश्वास नही रहा था। उन्हे मालूम हो चुका था कि सभी बगाली अवामी लीग और शेख साहिब के समर्थक है। स्थिति यहा तक बिगड गई थी कि बगाली कर्मचारियो ने याहिया खा के लिये भोजन तैयार करने से इन्कार कर दिया था। रेडियो पाकिस्तान के ढाका स्टेशन ने अपना नाम बदल कर "बगला देश बेतार केन्द्र" रख लिया था और खुलकर शेख साहिब के आन्दोलन का समर्थन शुरू कर दिया।

शेख साहिब को पुलिस और बगाली सैनिक अधिकारियो ने कहा

था कि याहिया खा को गिरफ्तार कर लिया जाय परन्तु शेख साहिब इस सीमा तक जाना नही चाहते थे। वह याहिया खा से समझौता करना चहते थे परन्तु याहिया खा ने धोखा दिया। २५ मार्च की रात को अचानक बातचीत खत्म करके कराची लौट गये और पाकिस्तानी सेना ने अकस्मात ढाका पर हमला कर दिया। आधी रात के बाद शेख साहिव को गिरफ्तार करके पाकिस्तानी सेना ने विश्वविद्यालय, पुलिस और बगाली सेना के प्रधान कार्यालयो पर मशीनगनो और टैंको का प्रयोग करके हमला कर दिया। विश्वविद्यालय मे सैकडो विद्यार्थियो को मौत के घाट उतार दिया गया। शहर मे जगह-जगह आग लगा दी गई। जो बगाली सामने दिखाई दिया उसे गोली का निशाना बना दिया गया। मन्दिर, मस्जिदे जलाई जा रही थी। ऐसा मालूम होता था कि ढाका रणभूमि बन गया है। ढाका विश्वविद्यालय के कई देशभक्त प्रोफेसर अपने कमरो मे जिन्दा जला दिये गये। विश्वविद्यालय के होस्टल मे रहने वाली लडकियो पर हमला किया गया। सैकडो को मौत के घाट उतार दिया गया। कई ने अपनी इज्जत बचाने के लिये छलाग लगा कर आत्महत्या कर ली। पाकिस्तानी सैनिक जुल्म मे चगेज खान और हिटलर को भी मात कर रहे थे। उन्होने बगाली लडकियो और स्त्रियो पर बलात्कार किया। उनकी छातिया काट डाली और उनके नग्न शव बाजारो और गलियो मे फेक दिये ताकि दूसरे लोग यह सब कुछ देख कर भयभीत हो।

ढाका मे बगाली पुलिस और सेना पर उस समय हमला हुआ था जब यह सैनिक सो रहे थे। फिर भी उन्होने डटकर मुकाबला किया। सैकडो मारे गये। जो बचे वह भाग कर सुरक्षित स्थानो पर पहुच गये और उन्होंने युद्ध जारी रखा।

ऐसी अवस्था मे बगाली नेताओ ने घोषणा की कि अब पाकिस्तान के साथ रहने का सवाल ही नही पैदा होता। उन्होंने अपने देश—

बगला देश——को स्वतत्र घोषित करते हुए पाकिस्तानी सेना से बाका-यदा युद्ध शुरू कर दिया। याहिया खा ने कराची पहुचते ही रेडियो से बोलते-हुए आरोप लगाया कि शेख मुजीबुर्रहमान समेत अवामी लीग भारत की एजेट है। इसलिये लीग को भग कर दिया गया है। शेख मुजीबुर्रहमान के विरुद्ध पाकिस्तान से गद्दारी के आरोप मे मुकदमा चलाया जायेगा। नेशनल असेम्बली के जो सदस्य लीग से सम्बधित रहेगे, उनके विरुद्ध भी कार्यवाही की जायेगी। याहिया खा ने घोषणा की कि उन्होने अपनी सेना को आदेश दिया है कि विद्रोहियो को सख्ती से कुचल दिया जाये। उन्होने समस्त पाकिस्तान मे मार्शल ला लागू कर दिया। समाचार पत्रो पर सैसर लगा दिया गया। जलसो और जलूसो की मनाई कर दी गई। सैनिक सरकार की किसी भी कार्यवाई की आलोचना करना जुर्म करार दिया गया और देश के दोनो प्रान्तो मे धडाधड गिरफ्तारियो का सिलसिला शुरू कर दिया गया।

ढाका मे जो कुछ हुआ वही पूर्वी बगाल के दूसरे शहरो और देहात मे हुआ। पाकिस्तानी सेना बहुत बडे पैमाने पर नरसहार कर रही थी। बस्तियो की बस्तिया लूटी और जलाई जा रही थी। अवामी लीग के समर्थको और कार्यकर्ताओ के साथ ही विद्यार्थियो, प्रोफेसरो, डाक्टरो, वकीलो और युवक वर्ग को मौत के घाट उतारना शुरू कर दिया गया। पूर्वी बगाल से सभी विदेशी पत्रकारों को बाहर निकाल दिया गया ताकि इस नरसहार का ब्योरा ससार को न मिल सके। परन्तु किसी न किसी तरह यह समाचार बाहर जाने लगे।

पूर्वी बगाल की जनता युद्ध के लिये तैयार नही थी। कोई ऐसा सगठन भी नही था जो आक्रमणकारियो का मुकाबला करने के लिये जनता को तैयार कर सके। फिर भी आक्रमणकारी सेना के आतक ने जनता को लडने के लिये मजबूर कर दिया। पूर्वी बगाल के सभी भागो मे विद्रोह की सी स्थिति पैदा हो गई। लोग लाठियो, भालो और

कुल्हाडियो से मुकाबला करने लगे। पाकिस्तानी सेना के पास बदूके, मशीनगने, तोपे, टैक और बमवर्षक विमान थे। इसके मुकाबले मे जनता शस्त्रहीन होने पर भी मुकाबला कर रही थी। कई स्थानो पर लाठिया लिये हुए हजारो व्यक्तियो ने चारो ओर से पाकिस्तानी सिपाहियो को घेर कर पीट-पीट कर मार डाला। कई स्थानो पर पुलिस की चौकियो पर हमला करके क्रोध से बिफरे हुए लोगो ने शस्त्र छीन लिये और लडाई शुरू कर दी। जनता का कोई सगठन न होने पर भी लोग स्वय ही अपने नेता बन गये। बगाली सरकारी कर्मचारी, अफसर और पुलिस के लोग विद्रोहियो मे सम्मिलित होने लगे। यह सभी याहिया खा की सेना के आतक से दुखी होकर मरने-मारने के लिये घरो से बाहर निकल आये थे। पाकिस्तानी सेना को रोकने के लिये सडको और रेल की लाइनो को उखाडा जाने लगा। पुल और बिजली-घर नष्ट किये जाने लगे। पाकिस्तानी सेनाओ के जुल्म को देख कर ससार भर मे क्रोध और घृणा की लहर फैलने लगी। राजनीतिक नेता और पत्रकार फतवे देने लगे कि याहिया खा की सेना पूर्वी बगाल मे जो नरसहार कर रही है, उसने चगेज खा, हलाकू और हिटलर के जुल्म को भी मात कर दिया है।

याहिया खा ने जहा इस नरसहार की आज्ञा दी थी वहा उसने यह फैसला भी किया कि अधिक से अधिक बगालियो को भारत मे धकेल दिया जाये ताकि एक तो पूर्वी बगाल की आबादी पश्चिमी पाकिस्तान की आबादी के मुकाबले मे कम हो जाये और दूसरे लाखो बगालियो के भारत मे चले जाने से भारत मे साम्प्रदायक फसाद शुरू हो जाये। पाकिस्तानी शासक अपनी राजनीतिक कठिनाइयो पर काबू पाने के लिये वर्षो से इन ही हथकडो का प्रयोग कर रहे थे। वे चाहते थे कि भारत मे साम्प्रदायक फसाद हो ताकि ससार का ध्यान पूर्वी बगाल मे होने वाले नरसहार से हटाकर यह प्रोपेगैडा किया जाये कि भारत मे मुसलमानो को मौत के घाट उतारा जा रहा है। परन्तु याहिया खा इस

चाल मे सफल नही हुए।

भारत के सभी राजनीतिक दलो ने याहिया खा की हरकतो की निन्दा का। पूर्वी बगाल की जनता के प्रति सहानुभूति प्रकट की और निश्चय कर लिया कि भारत मे किसी भी हालत मे साम्प्रदायिक दगे नही होने दिये जायेगे।

याहिया खा ने भारत के मुसलमानो को भडकाने के लिये प्रोपेगैडा शुरू किया कि शेख मुजीबुर्रहमान के समर्थको ने पूर्वी बगाल मे भारत से गये हुए मुसलमानो को मौत के घाट उतारना शुरू कर दिया था, इसलिये उनकी रक्षा के लिये पाकिस्तानी सेना को कार्यवाही करनी पडी है। इस झूठे आरोप का भी कोई प्रभाव नही पडा।

यद्यपि २५ मार्च को शेख मुजीबुर्रहमान की गिरफ्तारी और ढाका मे याहिया खा की सेना के आक्रमण करने के बाद ही अवामी लीग के नेताओ ने स्वतत्रता-सग्राम आरम्भ करने की घोषणा कर दी थी परन्तु अवामी लीग के अधिकारी किसी एक जगह एकत्रित नही हो सके थे। पाकिस्तानी सेना चुन-चुन कर उनकी हत्या कर रही थी। किसी को एक दूसरे के सम्बन्ध मे कुछ मालूम नही था। बगाली सैनिक इस स्थिति से दुखी थे। चटगाव मे बगाली सेना पाकिस्तानी आक्रमणकारियो का मुकाबला कर रही थी। ईस्ट बगाली सेना के कमाण्डर जनरल जिया-उद्दीन थे चटगाव के रेडियो स्टेशन पर अधिकार कर लिया और वहा उन्होने घोषणा की कि शेख मुजीबुर्रहमान की अध्यक्षता मे स्वतत्र बगला देश सरकार की स्थापना कर दी गई है और इस सरकार ने पाकिस्तान से युद्ध करने की घोषणा कर दी है। जनरल जिया-उद्दीन की इस घोषणा से दूसरे स्थानो पर भी बगाली सैनिको को डट जाने का साहस हुआ। पाकिस्तानियो ने जगह-जगह बगाली सिपाहियो से शस्त्र छीन लेने की कोशिश की। कई एक स्थानो पर उनकी चौकियो और ठिकानो पर हमले भी किये परन्तु बहुत से बगाली सैनिक सुरक्षित स्थानो पर पहुच जाने

मे सफल हो गये। हजारो सिपाही अपने साथ छोटे-छोटे शस्त्र भी ले आये। जनरल जिया-उद्दीन कई दिन तक मुकाबला करते रहे। अन्त मे वह अपने सैकडो सिपाहियो को सीमावर्ती पहाडी क्षेत्र मे लाने मे सफल हो गये और वहा उन्होने अपनी सेना के पुर्नगठन का काम शुरू कर दिया।

२० अप्रैल को अवामी लीग के कई उच्च नेता नेशनल असेम्बली के सदस्य और सैनिक अधिकारी भारत की सीमा के निकट एक स्थान पर एकत्रित हुए। यहा विधिपूर्वक स्वतत्र सरकार की स्थापना की गई। शेख साहिब को राष्ट्रपति घोषित किया गया परन्तु चूकि वह पाकिस्तानी सेना की कैद मे थे इसलिये कार्य चलाने के लिये उनकी अनुपस्थिति मे श्री कमुरज्जमान को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। श्री ताजुद्दीन को प्रधान मत्री नियुक्त किया गया और कर्नल उसमानी को स्वतत्र सेना का प्रधान सेनापति और सरकार का रक्षामत्री नियुक्त किया गया। मत्रिमण्डल के सदस्यो ने अपने पदो का चार्ज लेते हुए युद्ध जारी रखने का प्रण लिया। स्वतत्र देश का सुनहरी लाल झण्डा लहराया गया। स्वर्गीय रवीन्द्र नाथ ठाकुर के गीत "आमार सोनार बागला" को राष्ट्रीय गान का दरजा देकर गाया गया और स्वतत्र सेना ने राष्ट्रीय ध्वज को बैण्ड-बाजे से सलामी दी। इस समय कई विदेशी पत्रकार भी उपस्थित थे।

भारतीय ससद ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव स्वीकृत करके बगला देश की जनता के सघर्ष से सहानुभूति प्रकट की। भारत के सभी राजनीतिक दलो ने बगला देश स्वतत्रता आन्दोलन का समर्थन किया। ससार के विभिन्न देशो से पत्रकार, राजनीतिक नेता, ससद सदस्य और मत्री भारत और बगला देश मे आने लगे। उन्होने अपनी आखो से पीडितो और स्वतत्रता सग्रामियो को देखा और प्रभावित हुए।

भारत सरकार ने बगला देश से लाखो की सख्या मे आने वाले शरणार्थियो की स्थिति पर ससार का ध्यान दिलाया तो याहिया खा

ने शोर मचाया कि भारत सरकार अपने भूखे-नगे लोगो को कैम्पो मे रखकर उनके नाम पर दूसरे देशो से सहायता लेने के लिये यह आरोप लगा रही हे कि यह दुखी शरणार्थी है, परन्तु ससार ने इस झूठ को सत्य नही माना। इसके बाद जब शरणार्थियो की सख्या एक करोड के लगभग हो गई तो याहिया खा ने कहा कि केवल बीस लाख व्यक्ति पूर्वी बगाल मे विद्रोहियो से भयभीत होकर भाग गये थे परन्तु अब वह तेजी से लौट रहे है और उनकी सरकार उन्हे पुन आबाद कर रही है, परन्तु अब यह भी झूठ था। याहिया की सरकार ने दिखावे के लिये जो कैम्प खोले थे उनमे विदेशी पत्रकारो को लौट कर आने वाला कोई शरणार्थी दिखाई नही दिया। एक विदेशी पत्रकार ने लिखा कि इन कैम्पो मे पशु तो दिखाई देते है परन्तु कोई व्यक्ति दिखाई नही देता। इस पर याहिया सरकार ने शोर मचाना शुरू किया कि शरणार्थी तो लौट आना चाहते है परन्तु भारतीय सरकार अपने राजनीतिक हितो के लिये उन्हे लौट आने नही देती।

वगला देश सरकार स्थापित हो जाने के परिणाम स्वरूप ससार भर मे पूर्वी बगाल के लोगो मे जिन्दगी की लहर दौड गई। सबसे पहले नई दिल्ली मे याहिया सरकार के दूतावास के दो सीनियर बगाली अधिकारियो ने विद्रोह का झण्डा उठाया और बगला सरकार से वफादारी की घोषणा कर दी। इसके वाद कलकत्ता मे पाकिस्तानी दूतावास के बगाली अध्यक्ष और उसके समस्त बगाली स्टाफ ने विद्रोह किया। उन्होने दूतावास की इमारत पर बगला देश का झण्डा लहरा कर कार्यालय का नाम "बगला देश दूतावास" रख दिया। यह आन्दोलन दूसरे देशो मे भी फैला। ब्रिटेन मे पाकिस्तानी दूतावास अके सभी वगाली फसरो और कार्यकर्ताओ ने त्यागपत्र देकर पाकिस्तानी शासको के अत्याचारो की निन्दा की। ढाका हाई कोर्ट के एक सीनियर न्यायाधीश भाग कर लन्दन पहुच गये थे। उनके नेतृत्व

मे इन बगाली अधिकारियो ने लदन मे बगला देश का दूतावास स्थापित कर दिया। ब्रिटेन मे बगला देश के एक लाख से अधिक नागरिक रहते है। उन्होने याहिया शाही के विरुद्ध प्रदर्शन किया और बगला देश मे सरकार की आर्थिक सहायता के लिये रुपया एकत्रित करना शुरू कर दिया।

अमरीका, फ्रास, जापान, फिलीपाइन, कनाडा, हालैण्ड, हागकाग आदि देशो मे भी बगाली स्टाफ ने पाकिस्तानी दूतावासो से त्यागपत्र देने के साथ ही दूतावास का कोष भी बगला देश सरकार के हवाले कर दिया। धीरे-धीरे नई दिल्ली मे पाकिस्तानी कार्यालय के अन्य सभी बगाली कर्मचारियो ने भी यही मार्ग अपनाया। पाकिस्तानी अधिकारी कुछ बगाली कर्मचारियो को एक बस मे सवार करके लाहौर ले जाना चाहते थे परन्तु उन्होने सीमा के इस पार छलाग लगा कर अपने आप को मुक्त करा लिया और बगला देश सरकार के लिये काम करने की घोषणा कर दी।

इन बगालियो के साथ ही पश्चिमी पाकिस्तान से कितने ही दूसरे बगाली सैनिक अधिकारी भाग कर भारत मे आ गये।

इन बगालियो के विद्रोह से दो महत्वपूर्ण परिणाम निकले। पहला यह कि ससार को मालूम हो गया कि कोई बगाली याहिया खा की सरकार से सहयोग करने के लिये तैयार नही। दूसरें इन बगाली डिप्लोमेटो के अलग हो जाने से भारत मे याहिया शाही के कई षड्यत्रो का भेद ले गया। उदाहरण स्वरूप यह मालूम हुआ कि

> याहिया सरकार भारत मे जासूसी और तोड-फोड के लिये चिर-काल से अपने एजेटो के गिरोह सगठित कर रही थी। जासूसी के लिये कई पाकिस्तानी हिन्दुओ और सिखो के वेष मे घुमे हुए थे और साधुओ, व्यापारियो, हाकरो और भिखारियो आदि का वेष धारण कर के जासूसी कर रहे थे।

सबसे पहले कलकत्ता मे छापे मार कर पुलिस ने ससद के एक भूतपूर्व सदस्य और प्रादेशिक सरकार के एक भूतपूर्व मत्री को गिरफ्तार किया। इसके बाद कुछ पत्रकार गिरफ्तार किये गये। ये लोग रुपये के लालच मे पाकिस्तान सरकार के लिये देशद्रोही गतिविधियो मे लगे हुए थे। इसके ठोस प्रमाण केन्द्रीय सरकार को पाकिस्तानी दस्तावेज़ात के रूप मे मिल गये थे।

आगरा और दिल्ली मे पाकिस्तानी वायु सेना के दो अधिकारी पकडे गये। दोनो हिन्दुओ के वेष मे रह रहे थे। इनमे से एक ने हवाई अड्डे के निकट लाण्डरी की दुकान खोल रखी थी। यह व्यक्ति प्राय धोने के लिये हवाई अड्डे के कर्मचारियो से कपडे लाया करता था। अपने मकान के एक कमरे मे उसने एक मन्दिर बना रखा था। उसमे रखी हुई शिव भगवान की मूर्ति के अन्दर उसने एक वायरलैस ट्रासमीटर रखा हुआ था। इसका प्रयोग करके वह पाकिस्तान सरकार को अपनी रिपोर्टे भेजा करता था। दूसरे जासूस ने पजाब के एक प्रसिद्ध हवाई अड्डे के निकट चाय का स्टाल खोला हुआ था।

पजाब के एक सीमावर्ती नगर मे एक पाकिस्तानी गुप्तचर एक साधु महात्मा के वेष मे गिरफ्तार किया गया। उसने वहा एक मन्दिर बनवाया था और वह वहा पुराणो की कथा किया करता था और रोगियो को मुफ्त औषधिया दिया करता था। मन्दिर के एक तहखाने मे उसने रेडियो ट्रासमीटर लगा रखा था। जिला होशियारपुर मे कपडा बेचने वाले हॉकरो के वेश मे पाकिस्तानी जासूस पकडे गये। काश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रो मे भी कई पाकिस्तानी जासूस पकडे गये।

पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रो मे भी याहिया सरकार ने शरणार्थियो के वेष मे अपने गुप्तचर और तोड-फोड करने वाले एजेन्ट भेजने शुरू कर दिये। आरम्भ मे कई एक पाकिस्तानी पकडे गये जो कुओ मे विष मिलाने के लिए आये थे।

कई एक के पास से छोटे-छोटे रेडियो ट्रासमीटर मिले। कुछ पाकिस्तानी जासूस स्त्रियो के वेष मे गिरफ्तार कर लिये गये। बाद में जो पाकिस्तानी एजेण्ट आये उन्होने पुलो, रेल की लाइनों और दूसरे सरकारी ठिकानो को नष्ट करने की योजनाये बनाई हुई थी। ये लोग कुछ एक दुर्घटनाओ मे सफल भी हुए परन्तु धीरे-धीरे इन पर काबू पा लिया गया। कई पाकिस्तानियो ने भारत मे घुसते ही अपने आप को सरकारी अधिकारियो के हवाले कर दिया और बताया कि बगला देश मे पाकिस्तानी अधिकारियो ने जासूसी और तोड-फोड की ट्रेनिंग देने के लिये कैम्प खोले हुए है।

यह देखकर कि बगला देश सरकार को भारत मे अपने सूचना केन्द्र स्थापित करने की अनुमति मिल गई है और स्वतत्रता सग्रामियो को भारतीय सीमावर्ती क्षेत्रो मे शरण मिल जाती है याहिया खा ने भारत पर आक्रमण करने की धमकिया देना शुरू कर दिया। पश्चिमी पाकिस्तान के समाचार पत्रो मे दावा किया जाने लगा कि युद्ध की स्थिति मे पाकिस्तान अकेला नही होगा। इसके उत्तर मे भारत के विदेश मन्त्री ने कहा कि भारत भी अकेला नही। इसके कुछ दिन बाद ही भारत और सोवियत यूनियन मे मित्रता की सधि पर हस्ताक्षर हो गये और पाकिस्तानी शासको को मालूम हो गया कि भारत अब अकेला नही। भारत के रक्षा मन्त्री श्री जगजीवनराम ने चेतावनी दी कि यदि पाकिस्तानी शासको ने भारत पर युद्ध ठोसा तो यह युद्ध पाकिस्तान की धरती पर लडा जायेगा।

लगभग छ मास तक बगला देश मे स्वतन्त्र सरकार के सैनिक केवल गोरिल्ला हमले करते रहे। इन सैनिको मे अधिकतर कालेजो के विद्यार्थी और किसान और मजदूर युवक सम्मिलित थे। इस दौरान पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रो मे बाकायदा सेना भी हमले करती रही परन्तु स्वतन्त्रता-सग्राम के सेनानियो की गतिविधिया अधिकतर पाकिस्तानी

सिपाहियो को परेशान करने तक सीमित रही। यह गोरिल्ले रेल की लाइनो, सैनिक रेल गाडियो, पुलो और बिजली-घरो को नष्ट करने और पाकिस्तानी सेना की छोटी-छोटी टुकडियो पर हमले करने तक सीमित रहे। नदियो और समुद्र की बन्दरगाहो मे जहाजो को डुबोने के लिये भी छापे मारे जाते। याहिया खा के किराये के टोले से सबध रखने वालो को मौत के घाट उतारा जाता। इस दौरान बाकायदा सेना जिसे मुक्ति-वाहिनी का नाम दिया गया आधुनिक शस्त्रो के प्रयोग और युद्धनीतियो का प्रशिक्षण प्राप्त करती रही। देखते-देखते लगभग एक लाख बगाली युवको ने गोरिल्ला ढग से और औपचारिक युद्ध की ट्रेनिंग प्राप्त कर ली। इस सेना ने बाकायदा हमले शुरू करके पाकिस्तानी सेना को ग्रामीण क्षेत्रो और शहरो से खदेडना शुरू कर दिया। याहिया खा की सरकार ने बगला देश मे पश्चिमी पाकिस्तान से सशस्त्र पुलिस भेजी। सचिवालय मे भी पश्चिमी पाकिस्तान से धडाधड कर्मचारी लाकर नियुक्त किये जाने लगे। बगाली बेकार लोगो पर दबाव डालकर अथवा लालच देकर उन्हे "रजाकार" सेना मे भरती किया जाने लगा। जिन लोगो का पेशा गुण्डागर्दी था उन्हे भी भरती किया जाने लगा परन्तु इनकी सहायता से भी मुक्तिवाहिनी को कुचलने मे किसी प्रकार की सफलता नही मिली। हजारो ऐसे युवक जिन्हे डरा-धमका कर भरती कर लिया गया था भाग कर भारत मे आ गये। किराये के सैकडो गुण्डो को मुक्तिवाहिनी ने मौत के घाट उतार दिया। बगला देश की जनता यहिया सरकार के मुकाबले मे मुक्तिवाहिनी से सहयोग कर रही है।

मुक्तिवाहनी ने सीमावर्ती बहुत से इलाको को स्वतत्र करा लिया और दूसरे ठिकानो को स्वतत्र कराने के लिये हमले शुरू कर दिये। मुक्ति वाहिनी के युवक ढाका, चटगाव और बारीसाल तक के दूर-दूर के इलाको मे लडने लगे। ढाका मे मार्च १९७१ के अन्त मे पाकिस्तानी

सेना ने बडे पैमाने पर नरसहार किया था परन्तु कुछ दिन बाद ही मुक्ति वाहिनी के गोरिलो ने ढाका नगर के अन्दर और बाहर फिर अपनी गतिविधिया शुरू कर दी। ढाका मे आये दिन बम फटने लगे। सरकारी ठिकानो पर हमले होने लगे और कारखानो को आग लगाये जाने का सिलसिला शुरू हो गया। तीन बार नगर के बिजली-घरो को तोडफोड दिया गया। ढाका मे पाकिस्तान के भूतपूर्व राज्यपाल मुन-हम खा को एक युवक ने गोली से उडा दिया। यह वही सज्जन है जिन्होने अयूबशाही के दिनो राज्यपाल की हैसियत से ढाका मे खून-खराबा कराया था और अन्त मे अपनी जान बचाने के लिये नगे सिर और नगे पाव राजभवन से भाग कर एक विमान पर सवार हो रावलपिण्डी भाग गये थे। सैनिक अधिकारियो को उनका शव कबरि-स्तान तक ले जाने का साहस न हुआ बल्कि उसे मुनहम खा की कोठी के अन्दर ही दबा दिया गया।

याहिया खा सरकार की स्थापित की हुई तथाकथित शान्ति-समितियो के कई अधिकारी इसी प्रकार गोलियो से उडा दिये गये। कुछ ही दिनो मे एक दर्जन से अधिक पाकिस्तानी और विदेशी जहाज चटगाव, खुलना और चालना की बन्दरगाहो मे डुबो दिये गये। पाकि-स्तानी नवसेना की सैकडो नावो पर मुक्ति सेना ने अधिकार कर लिया।

याहिया शाही के आतक और बगला देश के स्वतत्रता सग्राम से समस्त ससार प्रभावित हुआ। सोवियत यूनियन की सरकार ने आरम्भ मे ही कह दिया था कि बगला देश के झगडे का एकमात्र हल यह है कि पाकिस्तानी शासक जनता को उसके अधिकार देना स्वीकार कर ले। सोवियत यूनियन के प्रधान ने याहिया खा को लिखा कि शेख मुजीबुर्रहमान को रिहा करके उनसे समझौते की बातचीत की जाये। दूसरे कई देशो ने भी यही सुझाव दिया। ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रास, जापान,

कैनेडा, आस्ट्रेलिया आदि देशों ने पाकिस्तान को सैनिक और आर्थिक सहायता देना बद कर दिया। इसमे सन्देह नही की अमरीका ने अप्रैल मे ही पाकिस्तान को सैनिक सहायता देना बद कर देने की घोषणा कर दी थी परन्तु इसके बाद भी पाकिस्तान को युद्ध सामग्री मिलती रही। इस पर अमरीका के सभी राजनीतिक दलो और पत्रकारो ने सरकार की कडी आलोचना की। ससद के दोनो हाउसो ने पाकिस्तान को सभी प्रकार की सहायता न देने की माग की। इस पर सरकार को झुकना पडा परन्तु बाद की घटनाओ से यह सिद्ध हो गया कि अमरीका के राष्ट्र-पति श्री निकसन किसी की भी परवाह न करते हुए याहिया सरकार की सहायता कर रहे थे। बगला देश के स्वतत्रता सग्राम को विफल करने के लिये वह राष्ट्र सघ के प्रेक्षको का प्रयोग करना चाहते थे। शायद उसके इशारे पर ही याहिया खा बगला देश से गद्दारी करने वाले डाक्टर मलिक को पूर्वी बगाल का राज्यपाल नियुक्त कर दिया और दिसम्बर १९७० के चुनावो मे हारे हुए व्यक्तियो को बिना मुकाबला चुनाव के नाटक मे जनता के प्रतिनिधि घोपित करके डाक्टर मलिक की कठ-पुतली सरकार मे मत्री बना दिया। इस नाटक को और आगे ले जाकर याहिया खा ने एक और गद्दार श्री नूरूल अमीन को पाकिस्तान का प्रधान मत्री और श्री भुट्टो को उप-प्रधान मत्री नियुक्त करने के इरादे की घोषणा कर दी। डा० मलिक और नूरूल अमीन आदि गद्दारो से गठजोड करके याहिया खा यह दावा करना चाहते थे कि उन्होने पूर्वी बगाल के "प्रतिनिधियो" से समझौता कर लिया है। अपने किराये के विशेषज्ञो से उन्होने एक सविधान तैयार कराया जिसमे यह निश्चित किया गया था कि भविष्य मे पाकिस्तान का राष्ट्रपति प्रधान सेनापति हुआ करेगा। इस सविधान को कानूनी रूप देने के लिये उन्होने जमायत इस्लामी आदि विपक्षी दलो का एक सयुक्त दल बना लिया था। ऐसा मालूम होता है कि इस सविधान को श्री निक्सन का आशीर्वाद प्राप्त

था। यदि यह षडयत्र मफल हो जाता तो श्री निक्सन दावा करते कि बगला देश की राजनीतिक समस्या का समाधान हो गया है।

इसी दौरान पूर्वी बगाल की कठपुतली सरकार ने जमायत इस्लाम को "अलबदर" और "अलरामस" नाम की तथाकथित स्वयसेवक सैना सगठित करने की आज्ञा थी। इन तथाकथित स्वय सेनको को शस्त्र दिये गये और इन लोगो ने प्रगतिशील बगाली प्रोफेसरो, डाक्टरो, वकीलो और कार्यकर्ताओ को मौत के घाट उतारना शुरू कर दिया। एक अनुमान के अनुसार दिसम्बर के पहले दो सप्ताहो मे ढाका, नारायण गज, जैसोर, खुलना और दीनाजपुर मे एक हजार से अधिक ऐसे व्यक्तियो को इस्लाम के शत्रु घोषित करके गोली मार दी गई।

बगला देश मे स्वतत्रता सग्राम की गति तीव्र हो रही थी। पाकिस्तान का दमन चक्र विफल हो रहा था। याहिया खा अब भारत को भी आक्रमण की धमकिया देने लगे। बाद की घटनाओ से सिद्ध हो जाता है कि अमरीका और चीन की सरकारे याहिया खा को इस बात के लिये भडका रही थी कि वह भारत से युद्ध छेड दे जिससे सुरक्षा परिषद को दखल देने के लिये प्रयोग मे लाया जा सके।

१५

भारत पर आक्रमण
याहियाशाही का अन्त

इसमे सदेह नही कि १९६५ के आक्रमण मे हार जाने के तुरन्त बाद पाकिस्तान के तानाशाहो ने भारत पर एक और आक्रमण की तैयारिया शुरू कर दी थी। ताशकन्द समझौते की अवहेलना करते हुए भारत से व्यापार के सम्बध स्थापित नही किये गये। पश्चिमी बगाल से पूर्वी बगाल मे दरियाओ के रास्ते जो व्यापार होता था उसे पुन चालू करने से इन्कार कर दिया गया। भारतीय जहाजो से जब्त किया हुआ माल लौटा देने की जगह नीलाम कर दिया गया। भारत से समाचार पत्रो और पुस्तको के निर्यात पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया और अमरीका, चीन और दूसरे देशो से धडा-धड विमान, टैंक और दूसरे शस्त्र खरीदना शुरू कर दिया गया। दिसम्बर १९७० मे पाक अधिकृत काश्मीर के तथाकथित राष्ट्रपति सरदार अब्दुल क्यूम ने साफ-साफ कह दिया था कि १९७१ मे काश्मीर पर अधिकार करने के लिये भारत पर आक्रमण किया जायेगा यदि बगला देश मे स्थिति न बिगडती तो मार्च तक १९७१ मे याहिया खा भारत पर आक्रमण कर देता।

अगस्त १९७१ मे याहिया खा ने भारत को युद्ध की धमकिया देना शुरू कर दिया। पाकिस्तान को अमरीका से युद्ध सामग्री मिल रही थी। याहिया शाही के समर्थन मे चीनी शासको ने भी बयान देना शुरू कर दिया। 'पाकिस्तान के समाचार पत्रो ने दावा कि युद्ध की हालत मे

ईरान, जोरडन और तुर्की पाकिस्तान की सहायता करेंगे। याहिया खा ने स्वय दावा किया युद्ध मे पाकिस्तान अकेला नही होगा। इस पर भारत के विदेश मन्त्री सरदार स्वर्ण सिंह ने चेतावनी दी कि याहिया खा यह न समझे कि भारत अकेला रहेगा। सुरक्षा मन्त्री श्री जगजीवन राम ने याहिया खान को चेतावनी दी कि वह भारत पर आक्रमण करने की बजाय बगला देश के नेताओ से समझौता करे अन्यथा भारत पर हमला हुआ तो भारतीय सेना पाकिस्तान की धरती पर दो-दो हाथ करेगी। याहिया खान ने इसकी परवाह न करते हुए भारत की सीमाओं पर सेना को एकत्रित करना शुरू कर दिया। भारत अकेला नही इसका प्रमाण भारत और रूस मे मित्रता की सधि से मिल गया। रूस की सरकार ने भारत सरकार की तरह याहिया खा को परामर्श दिया कि वह युद्ध के मार्ग पर चलने की बजाय बगला देश के नेताओ से समझौता कर ले परन्तु याहिया खा अमरीका और चीन के इशारो पर नाच रहे थे। २३ नवम्बर को तक्षशिला मे चीन के एक प्रतिनिधि दल की उपस्थिति मे याहिया खान ने एक भाषण मे धमकी दी कि दस दिन के बाद वह पश्चिमी पाकिस्तान के युद्ध के मोर्चे पर होंगे। इससे कुछ ही दिन पहले याहिया खान ने अपने सीनियर जरनैलो का एक दल श्री भुट्टो के नेतृत्व मे चीन भेजा। वहा से लौट आने पर श्री भुट्टो ने कहना शुरू कर दिया कि युद्ध की स्थिति मे चीन पाकिस्तान की पूरी-पूरी सहायता करेगा।

आक्रमण की तैयारिया करते हुए एक ओर याहिया खान की सेनाओं ने बगला देश की सीमाओ से भारतीय क्षेत्रो पर गोलाबारी शुरू कर दी तो दूसरी ओर माग की कि भारत अपनी सेना सीमाओ से हटा ले। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इसके उत्तर मे कहा कि पाकिस्तान बगला देश मे अपनी सेना हटा ले तो हम भी अपनी सेनाये हटा लेगे।

आक्रमण की तैयारिया करते हुए पाकिस्तानी विमानो ने काश्मीर और पजाब की वायुसीमा का उल्लघन किया। काश्मीर की युद्ध विराम रेखा पर पाकिस्तानी सेनाओ ने कई छापे मारे। नवम्बर के अन्तिम सप्ताह मे चार पाकिस्तानी विमान बगाल की वायुसीमा मे आ घुसे। भारतीय वायु सेना के विमानो ने इनमे से तीन को गिरा लिया। दो पाकिस्तानी विमान चालको को गिरफ्तार कर लिया गया। भारतीय सेना ने अपनी सीमा की ओर बढती हुई पाकिस्तानी सेना को रोकने के लिये जवाबी कार्यवाई की। मत्रालय से भी इसी तरह भारतीय सेना को पाकिस्तानी हमले को रोकने के लिये कार्यवाई करनी पडी।

३ दिसम्बर १९७१ को सध्या समय से अकस्मात पाकिस्तान की वायु सेना ने अमृतसर, श्रीनगर, पठानकोट और आगरा आदि भारत के हवाई अड्डो पर बम वर्षा शुरू की। पाक सेनाओ ने भी पश्चिमी पजाब की सीमाओ पर हमले शुरू कर दिये। प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी उस समय कलकत्ता मे थी। उन्होने दिल्ली आकर रेडियो पर घोषणा की कि भारत किसी भी हमले का मुकाबला करेगा। ४ दिसम्बर को याहिया खा ने भारत पर आक्रमण की घोषणा कर दी। इसके उत्तर मे भारतीय वायु सेना ने पश्चिमी पाकिस्तान मे दूर-दूर तक सैनिक अड्डो पर बम वर्षा की और भारतीय सेना ने बगला देश मे प्रवेश करके मुक्तिवाहिनी से सम्पर्क करके आगे बढना शुरू कर दिया। दो दिन मे ही भारतीय सेना ने यहा कई महत्वपूर्ण स्थानो पर अधिकार कर सभी पाकिस्तानी अड्डो को नष्ट कर दिया और पश्चिमी पाकिस्तान से बगला देश का सभी प्रकार का सम्पर्क काट दिया। बगला देश मे पाकिस्तान की वायु और जल सेना को नष्ट कर दिया गया। पाकिस्तानी सेना ने कई स्थानो पर शस्त्र फैंक कर अपने आप को भारतीय सेना के आगे समर्पण करना शुरू कर दिया।

पश्चिमी पाकिस्तान मे भारतीय सेना सिंध मे घुस गई और उसने

एक ही दिन मे कई स्थानो पर अधिकार कर लिया। भारतीय वायु सेना और जल सेना ने कराची के समुद्री अड्डे पर हमला करके पाकिस्तान के तीन विध्वसक जगी जहाज डुबो दिये। यह हमला सफल रहा। कराची का हवाई और समुद्री अड्डा तबाह हो गया। तेल के भण्डारो मे आग लग गई। बगाल की खाडी मे पाकिस्तान की प्रसिद्ध पनडुब्बी "गाजी" डुबो दी गई। अमरीका से मुफ्त मिली हुई यह पनडुब्बी शायद विशाखापटनम के भारतीय समुद्री अड्डे पर हमले के लिये भेजी गई थी।

भारतीय सेना की तीव्र प्रगति से परेशान होकर अमरीका ने राष्ट्र सुरक्षा परिषद मे एक प्रस्ताव मे भारत को आक्रमणकारी घोषित करने के लिये एक प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया। चीन ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया परन्तु जहा ब्रिटेन और फ्रास ने धमकियो का साथ नही दिया वहा रूस के प्रतिनिधि ने अपने विशेप अधिकार का प्रयोग करके इस प्रस्ताव को रद्द कर दिया। अमरीका और चीन ने जो पाकिस्तान की पीठ ठोकने पर कटिबध थे राष्ट्रसघ की जनरल असेम्बली मे यही प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया। यह प्रस्ताव भारत रूस और कई दूसरे देशो के विरोध पर भी स्वीकृत हो गया परन्तु इस प्रस्ताव द्वारा भारत को कोई आदेश नही दिया जा सकता था। भारत सरकार ने घोषणा की कि हमला पाकिस्तान ने किया है इसलिये मुकाबला किया जायेगा। इस दौरान भारतीय सेनाओ ने राजस्थान पर पाकिस्तान के सभी हमलो को विफल कर लगभग ३ हजार वर्ग मील क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। पजाब मे खेमकरण, और डेरा बाबा नानक के मोर्चो पर कई पाकिस्तानी देहात पर अधिकार कर लिया। साम्बा से बढने वाली भारतीय सेना ने बढ कर स्यालकोट के पाकिस्तानी क्षेत्र मे लगभग चार सौ वर्गमील क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। काश्मीर मे टीथबाल पुच्छ से आगे बढकर भारतीय सेना ने कई पाकिस्तानी चौकियो पर अधिकार कर लिया। लद्दाख मे भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को ४०

चौकियो से भगा दिया।

बगला देश मे पाकिस्तानी सेना किमी स्थान पर जम कर मुकाबला नही कर सकी। दो दिनो मे पाकिस्तानी वायुसेना को तबाह कर दिया था। ७ दिसम्बर को भारत सरकार ने और इसके बाद भूटान सरकार ने बगला देश सरकार को मान्यता दे दी और भारत और बगला देश ने मिलकर मुकाबला करने की घोषणा कर दी। इसी दिन भारतीय सेना ने जैसोर सिल्हट और कोमिला को मुक्त करा लिया। समाचार आने लगे कि पाकिस्तान सेना बगला देश से भाग जाने के लिये ढाका, चटगाव और वारीसाल की ओर जा रही है। भारतीय नव सेना ने समुद्र के सभी रास्ते बन्द कर दिये। ढाका और चटगाव को घेरने के लिये भारतीय सेना चारो ओर से बढने लगी। पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सेना की प्रगति रोकने के लिये मार्ग मे आने वाले सभी पुल गिरा दिये परन्तु भारतीय सेना ढाका के चारो ओर पैराशूटो द्वारा उतरने लगी। १४ दिसम्बर के बगला देश के कठपुतली राज्यपाल डा० मलिक उसके मत्रियो और सभी सीनियर सिविल अधिकारियो ने त्याग पत्र दे दिये। राज्यपाल के सैनिक सलाहकार मेजर जनरल फरमान अली ने राष्ट्र सघ के प्रतिनिधियो द्वारा सघ के प्रधान मत्री से प्रार्थना की कि पाकिस्तान की सेना को बगला देश से निकाल देने के लिये सहायता दी जाये परन्तु याहिया खा ने इस प्रार्थना को स्वय ही रद्द कर दिया और दावा किया कि युद्ध जारी रहेगा। बाद की घटनाओ से मालूम हुआ कि अमरीका और चीन के भडकाने पर याहिया खान ने ऐसा किया था। इन देशो के इशारे पर सुरक्षा परिषद मे एक और प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया परन्तु रूस ने इसे भी रद्द कर दिया।

भारतीय सेना ढाका के दरवाजो पर पहुच चुकी थी। भारत के सेनापति श्री मानिक शाह ने बगला देश मे पाकिस्तान के सेनापति जनरल नियाजी को अल्टीमेटम दिया कि वह अपनी सेना को आत्मसर्मपण के

लिये आदेश दे दे अन्यथा भारतीय सेना ढाका पर निश्चयात्मक आक्रमण कर देगी। इसी समय समाचार आया कि अमरीका के राष्ट्रपति श्री निक्सन के आदेश से अमरीका का सातवा समुद्री बेडा बगाल की खाडी मे घुस रहा है। शायद इन गतिविधियो का मतलब भारत को भयभीत करना था परन्तु प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने एक भव्य समारोह मे चेतावनी दी कि भारत किसी दबाव से झुकने वाला नही। सेनापति मानिकशाह ने पाकिस्तान के सेनापति को फिर चेतावनी दी और इसके बाद अपनी सेना को हमले का आदेश दे दिया। इस पर बचाव की कोई सूरत न देख कर जनरल नियाजी ने अपनी सेनाओ को आत्मसर्मपण करने का आदेश देना स्वीकार कर लिया। १६ दिसम्बर को भारतीय सेना की पूर्वी कमाण्ड के कमाण्डर जनरल जगजीत सिह अरोरा हैली-कोप्टर पर कलकत्ता से ढाका पहुचे और इतिहासक परेड ग्राउन्ड पर जहा २४ मार्च को शेख मुजीबुर्ररहमान ने बगला देश का झण्डा लह-राया था जनरल नियाजी ने बगला देश मे पाकिस्तानी सेना के आत्म-सर्मपण की दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर दिये। भारतीय सेना ढाका नगर मे प्रवेश कर गयी और स्वतन्त्र बगला देश के नारो से शहर का वातावरण गूज उठा।

देश के इतिहास मे भारत की यह महान विजय थी। बगला देश को स्वतन्त्र कराने के लिये भारत वासियो ने जो प्रण किया था हमारी सेना के जवानो ने पूरा कर दिखाया।

पश्चिमी पाकिस्तान की जनता को याहिया सरकार अधेरे मे रखती रही। अन्तिम घडियो तक उन्हे यही बताया जाता रहा कि पाकिस्तानी सेना सभी मोर्चो पर जीत रही है। पाकिस्तानी जनता को यह भी नही बताया गया कि बगला देश मे पाकिस्तानी सेना आत्म सर्मपण कर चुकी है। भारत सरकार ने बगला देश के स्वतन्त्र होते ही घोषणा कर दी कि १८ दिसम्बर को ८ बजे रात पश्चिमी मोर्चे पर

लडाई बन्द कर दी जायेगी। पाकिस्तानी सेना इस मोर्चे पर भी हार रही थी। यदि लडाई बद न होती तो पश्चिमी पाकिस्तान भी खतम हो जाता। परन्तु भारत सरकार का ऐसा कोई विचार नहीं था। इसलिए उसने युद्ध समाप्त करने का फैसला किया। याहिया खान को झुकना पडा और इस प्रकार जो युद्ध पाकिस्तान आक्रमण से ३ दिसम्बर को आरम्भ हुआ था वह पूरे १४ दिन बाद समाप्त हो गया। याहिया खान का घमण्ड टूट गया। बगला देश स्वतन्त्र हो गया दो दिन बाद याहिया खान श्री भुट्टो को सरकार की बागडोर देकर स्वय अलग हो गये। इस तरह १९५८ मे पाकिस्तान मे जो सैनिक तानाशाही स्थापित हुई थी वह भारत और बगला देश से टक्कर लेने के परिणामस्वरूप खत्म हो गई। २२ दिसम्बर को जब पश्चिमी पाकिस्तान मे याहिया खान के विरुद्ध मुकद्दमा चलाने की माग करते हुए जनता प्रदर्शन कर रही थी, ढाका मे स्वतन्त्र बगला वासी सरकार ने अपना कार्य सभाल लिया था।

किया। मुसलमानो मे प्रचार किया गया कि उनकी आर्थिक दुर्दशा के लिये हिन्दू जिम्मेदार हैं। हिन्दुओ को कहा गया कि, मुसलमान उनके शत्रु है। जहा यह नीति हिन्दुओ मे राष्ट्रीयता की भावनाओ को रोक न सकी और हिन्दुओं के सभी वर्गों के नेताओ ने स्वतत्रता सग्राम मे बढ-चढकर भाग लिया वहा देशभक्त मुसलमान नेताओ को बदनाम और परेशान करने के लिये किराये के मौलवियो से उनके विरुद्ध प्रचार कराया गया। ज्यू-ज्यू स्वतत्रता का सघर्ष तेज होता गया, अग्रेज शासक मुसलमानो को हिन्दुओं के विरुद्ध अधिक-से-अधिक भडकाने के प्रयास करते। अग्रेज सरकार समझ गई थी कि भारत को हमेशा के लिये दासता की जजीरो मे जकडे रखा नही जा सकता इसलिये उसने अन्त मे यही फैसला किया कि हिन्दू मुसलमान के नाम पर देश को विभाजित कर दिया जाये और दोनो देशो मे आरम्भ मे ही ऐसे झगडे कराये जाये कि भारत और पाकिस्तान के नेता जनता की आर्थिक और सामाजिक उन्नति की ओर ध्यान न दे सके बल्कि आपस मे झगडते रहे और इससे ब्रिटेन स्वय फायदा उठाये।

देश के विभाजन का एक और भी कारण था। भारत शक्तिशाली बनकर राजनीतिक और व्यापारिक क्षेत्र मे यूरोप का मुकाबला कर सकता है। इसलिये भारत की दोनो सीमाओ पर पाकिस्तान की तलवारे लटका दी गई। अमरीका ब्रिटेन का सहयोगी बन गया था। दोनो पश्चिमी एशिया और दक्षिण पूर्वी एशिया मे अपने व्यापारिक हितो की रक्षा के लिये पाकिस्तान को इस्लाम के नाम पर इस्तेमाल करना चाहते थे। भारत से तो उन्हे सैनिक अड्डे नही मिल सकते थे परन्तु पाकिस्तान को भारत, चीन और रूस से भयभीत करके उससे अड्डे प्राप्त किये जा सकते थे। साधारण स्थिति मे इन अड्डो को जासूसी के लिये और युद्ध की हालत मे लडाई के लिये इस्तेमाल किया जा सकता था। इसलिये देश का विभाजन करने से पहले ही मुस्लिम-

लीग के नेताओ से इसके लिये सौदेबाजी करली गई थी । देश के विभाजन मे एक शासन सत्ता उन नेताओ के हाथो मे आई जिन्होने स्वतन्त्रा सग्राम मे भाग लिया था । स्वतन्त्रता का अर्थ विदेशी शासको को देश से निकालना ही अमिट देश की सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था का सुधारना और साधारण जनता का जीवन स्तर ऊचा कर के ही सामयिक रूप से देश को स्वतन्त्र किया जा सकता है । इसलिये ब्रिटिश सत्ता समाप्त होते ही भारत के नेताओ ने इन समस्याओ का समाधान करने पर ध्यान दिया । स्वतन्त्रता को सुदृढ करने के लिये जो सविधान तैयार किया गया उसमे सभी देशवासियो को समान अधिकार दिये गये । भारत मे अनेक भाषाये है । इन सबकी रक्षा और उन्नति के लिये भाषा के आचार पर प्रदेशो का पुनर्निर्माण किया गया। भारत पर विदेशी शक्तियो का प्रभुत्व स्थापित न हो जाये इसलिये आवश्यक वस्तुओ की तैयारी अपने देश से करने के लिये कारखाने स्थापित किये जाने लगे । पाकिस्तान के शासको ने स्वतन्त्रता के लिये किसी आन्दोलन मे भाग नही लिया था। ब्रिटेन ने मुसलमानो मे हिन्दुओ के प्रति घृणा की भावना पैदा करके देश के विभाजन के लिये मुस्लिम लीग का इस्तेमाल किया था। यह लोग अधिकतर बडे-बडे जमीदार और अग्रेज सरकार से उपाधिया पाने वाले बडे-बडे अधिकारी थे । अपने हितो की रक्षा के लिये अग्रेज सरकार इसी वर्ग के लोगो को सेना, पुलिस और अन्य सरकारी कार्यालयो मे भरती किया करती थी । गरीब मुसलमान वर्गो का समर्थन प्राप्त करने के लिये इन्होने कट्टरपथी मौलवियो का प्रयोग करके यह प्रचार किया कि हिन्दू ही उनकी निर्धनता के जिम्मेदार है । मुसलमान पूजीपतियो ने इस स्थिति से लाभ उठाने का प्रयास किया। यह लोग "इस्लाम" के नारो मे सम्मिलित हुए तो इसलिये कि ये समझते थे कि पाकिस्तान की स्थापना होने पर हिन्दुओ और सिखो को भगाकर व्यापार और उद्योग-

धन्धो पर उनका अपना अधिकार हो जायेगा। पाकिस्तान बनने पर जब किसानो, मजदूरो, अन्य गरीब वर्गो और भाषाई वर्गो की समस्याये सामने आने लगी तो नेताओ को अपनी नाव डोलती हुई दिखाई देने लगी। ये लोग जनता को शासन सत्ता मे भाग देने के लिये तैयार नही थे इसलिये उन्होंने शोर मचाना शुरू किया कि भारत पाकिस्तान को खतम कर देना चाहता है। उनकी इस कमजोरी से अमरीका आदि पश्चिमी देशो ने लाभ उठाया। पाकिस्तानी शासको को बडे पैमाने पर युद्ध सामग्री दी गई। पाकिस्तान के सैनिक अड्डे ले लिये गये। पाकिस्तान को भरपूर आर्थिक सहायता भी दी गई परन्तु पश्चिमी देशो ने कोशिश की कि पाकिस्तान उनके माल की मण्डी बने। आर्थिक रूप से अपने पाव पर खडा न हो सके। पाकिस्तानी शासको ने विदेशी शक्तियो को खत दिया कि वह अपने देश मे प्रगतिशील वर्गो को सिर उठाने नही देगे। शासको का अपना हित भी यही था कि सत्ता मे जनता हिस्सेदार न बने इसका परिणाम यह हुआ कि पूर्वी बगाल, सीमा प्रान्त, सिध और बिलोचिस्तान मे जब भी किसी राजनीतिक दल ने जनता के अधिकारो के लिए माग की उसे पाकिस्तान का शत्रु ठहराकर कुचल देने की कोशिश की गई। जनता के प्रतिनिधियो को गिरफ्तार किया जाने लगा। आर्थिक समस्याओ से जनता का ध्यान हटाने के लिये भारत पर आक्रमण करने की बाते की जाने लगी। गत २५ वर्षो मे पाकिस्तान ने पश्चिमी देशो से दो हजार करोड रुपये की युद्ध सामग्री प्राप्त की। यदि इतना धन आर्थिक प्रगति के लिये खर्च किया जाता तो देश को लाभ होता परन्तु सहायता देने वाली शक्तिया भी जानती थी कि पाकिस्तान मे आर्थिक प्रगति हुई तो उनका माल पाकिस्तान मे नही बिकेगा।

पाकिस्तानी शासको और पश्चिमी देशो के हित एक जैसे हो गये थे। इसलिये दोनो ने षडयन्त्र करके पाकिस्तान मे सैनिक तानाशाही की

स्थापना की। इस तानाशाही ने पाकिस्तानी जनता को उसके अधि-कारो से वचित कर दिया और भारत के विरुद्ध घृणा का प्रचार जारी रखा।

१९६५ मे इसी वातावरण मे अयूब खा ने भारत पर आक्रमण किया था परन्तु उनकी हार हुई और इसके परिणाम स्वरूप तानाशाही के विरुद्ध विद्रोह हुआ। १९६९ मे अयूब खा का तुरन्त तखता उलट कर याहिया खा तानाशाह बने। उन्होने भी अपनी जनता को कुचलने की कोशिश की और भारत पर हमला कर दिया। इस बार पाकिस्तानी सेना की बुरी तरह हार हुई और बगला देश स्वतन्त्र हो गया। श्री भुट्टो राष्ट्रपति बन गये और याहिया खान को अपने सभी सीनियर सैनिक साथियो समेत गद्दी से हटा दिया गया।

इसमे सन्देह नही कि बगला देश को पुन पाकिस्तान मे मिलाना असम्भव है। बगला देश पूर्ण रूप से स्वतन्त्र देश बन चुका है। इसकी स्वतन्त्रता ने पाकिस्तानी नेताओ की दो कौको की ट्यूटी को खतम कर दिया है। यह सिद्ध हो गया कि धर्म के आधार पर किसी देश को जीवित नही रखा जा सकता। धर्म का नाम लेने वालो ने अपने ही धर्मावलम्बियो पर अत्याचार किये। प्रश्न पैदा होता है कि क्या बचा हुआ पाकिस्तान जीवित रह जायेगा ? कुछ लोगो का कहना है कि पाकिस्तान के नये राष्ट्रपति श्री भुट्टो भूमि सुधार, आर्थिक सुधार और पिछड़े वर्गों की समस्याओ का समाधान करके देश की एकता को सुरक्षित रखना चाहते हैं। परन्तु एक तो जनता को मूर्ख बनाने के लिये वह भी भारत के प्रति घृणा का प्रचार कर रहे हैं दूसरे अभी तक इस बात का कोई प्रमाण नही मिला कि वह जनता को शासन सत्ता मे भाग देना चाहते है। वह अपने आपको "इस्लामी समाजवाद" का समर्थक कहते है परन्तु समाजवाद का यह सकीर्ण दृष्टिकोण हिटलर के नेशनल समाजवाद अर्थात निजीवाद से विभिन्न नही। नाजी शासको ने आर्थिक

प्रगति पर तो बल दिया परन्तु जनता को उसके अधिकार नही दिये और देश की शक्तियो को अपने पडोसियों पर हमलो के लिये इस्तेमाल किया था। श्री भुट्टो एक इसी प्रकार के तानाशाह बन रहे है। उन्होने राष्ट्रपति के साथ ही सैनिक शासन का पद भी सम्भाला हुआ है। बगला देश की वास्तविकता को स्वीकार न करके वह युद्ध की धमकिया दे रहे है। सम्भव है वह यह सब कुछ केवल अपने हाथ मजबूत करने के लिये कर रहे हो परन्तु तनाव का वातावरण पैदा किया जाये तो उस पर काबू पाना कठिन हो जाता है और इसके कारण कई बार न चाहने पर भी युद्ध हो जाता है।

श्री भुट्टो स्वय माग करते रहे कि नया सविधान तैयार करने के लिये नेशनल असेम्बली की बैठक बुलाई जाये परन्तु अब वह स्वय यही कदम उठाने के लिये तैयार नही। उन्होने अपने दल के नेताओ को प्रदेशो के राज्यपाल नियुक्त किया। भाषा और सस्कृति के आधार पर प्रदेशो के निर्माण के लिये उन्होने कोई कदम नही उठाया। अपने राजनीतिक दल को मजबूत बनाने के लिये वह सरकारी मशीनरी को प्रयोग मे ला रहे हैं। ये सभी बाते पाकिस्तानी जनता के हित मे नही हो सकती। जनता मे विरोध की भावना पैदा होगी। इस भावना को कुचलने के लिये पुलिस को प्रयोग मे लाया जायेगा और इससे पुन विद्रोह हो सकता है।

पश्चिमी पाकिस्तान मे सीमा प्रान्त और बिलोचिस्तान मे अपने अधिकारो के लिये जनता वर्षो से सघर्ष कर रही है। अफगानिस्तान और ईरान मे इनके प्रति सहानुभूति पाई जाती है। दिसम्बर १९७० के चुनाव मे इन दोनो प्रान्तो मे श्री भुट्टो का राजनीतिक दल हार गया था। इस वास्तविकता को महसूस कर स्वीकार न करना एक बडी भारी गलती होगी। नेशनल अवामी पार्टी ने जो इन दोनो प्रदेशो मे सफल हुई थी बगला देश के नेताओ की मागो का समर्थन करते हुये अपने

लिये भी यही मागें प्रस्तुत की थी। यदि ये मागे स्वीकार न की गई तो आन्दोलन की आग भडक सकती है और यही आन्दोलन किसी समय विद्रोह मे बदल सकता है। श्री भुट्टो को यह भी समझ लेना चाहिये कि जब भारत से पाकिस्तानी जगी कैदी इन प्रदेशो मे लौटेगे तो उनकी मायूसी भी उनके लिये परेशानी का कारण बनेगी।

पाकिस्तान की आय के साधन अब आधे भी नही रहे। बगला देश की मण्डी छिन जाने के कारण पश्चिमी पाकिस्तान के कई कारखाने बन्द हो जायेगे। इससे बेकारी बढेगी। अब पाकिस्तान के पास सैनिक तैयारियो के लिये काफी साधन नही रहे। उसे अपना सैनिक बजट आधे से भी कम करना पडेगा। परन्तु यदि श्री भुट्टो ने युद्ध की तैयारिया की तो फिर विदेशी शक्तिया पाकिस्तान मे दखल देकर उसे अपने हितो के लिये इस्तेमाल करने की कोशिश करेगी। पाकिस्तान को अमरीका की ओर से बताया जा रहा है कि उसी ने पश्चिमी पाकिस्तान को बनाया है। यह भी कहा जा रहा है कि अफगानिस्तान और ईरान सीमा प्रान्त और बिलोचिस्तान पर अधिकार करना चाहते हैं। सम्भव है कि इस झूठे प्रचार से बचे-खुचे पाकिस्तान को किसी ऐसे सैनिक गुट्ट मे सम्मिलित करने की कोशिश की जाये जिसका मतलब भारत, अफगानिस्तान और ईरान को कमजोर करना हो। यदि श्री भुट्टो ने यह मार्ग अपनाया तो रहा सहा पाकिस्तान भी नष्ट हो जायेगा। पाकिस्तान का अस्तित्व इसी स्थिति मे कायम रह सकता है कि उसके शासक सभी प्रदेशो को अधिक-से-अधिक स्वतन्त्रता दे। जनता को उसके अधिकार दे और भारत सहित सभी पडौसी देशो से मित्रता के सम्बन्ध स्थापित करे। भारत की भाति धर्म निर्पेक्ष और गुट्ट निर्पेक्ष नीति पाकिस्तान को बचा सकती है। पाकिस्तान मे ऐसे लोगो की कमी नही जो इस नीति को पाकिस्तान के हित मे समझते है।

अक्तूबर १९७१ मे पश्चिमी पाकिस्तान के प्रसिद्ध देशभक्त नेता

स्वर्गीय अताउल्ला शाह बुखारी के सुपुत्र मौलाना हयातउल्ला शाह ने एक पुस्तक मे लिखा कि

"मेरे पिता कहा करते थे कि मुस्लिम लीग और मि० जिन्नाह मुसलमानो को तबाही की ओर ले जा रहे है। मेरे पिता को इस्लाम का शत्रु कहकर मुस्लिम लीगी गालिया दिया करते थे। आज जो कुछ हो रहा है इससे सिद्ध हो रहा है कि मेरे पिता ठीक थे। यदि वर्तमान रूप मे पाकिस्तान का निर्माण न होता तो अखड भारत मे मुसलमानो की दशा बहुत अच्छी होती।"

इस सच्चाई पर मौलाना हयातउल्ला को गिरफ्तार करके उन्हे दो वर्ष कैद की सजा का आदेश दिया गया। परन्तु यही बात और भी कई पाकिस्तानी कह रहे है। उर्दू के प्रसिद्ध कवि जोश मलीहाबादी देश के विभाजन के बाद कई वर्ष भारत मे रहे। उनके परिवार ने उन्हे पाकिस्तान चले जाने के लिये विवश किया। हाल ही मे उन्होने "यादो की बारात" नाम से अपने सस्मरणो पर एक पुस्तक प्रकाशित की। इस मे उन्होने इस बात का रोना रोया कि पाकिस्तान मे अन्याय से जनता दुखी है। अपने सम्बन्ध मे उन्होने लिखा कि वह उस दिन को रो रहे है जब उन्होने भारत को छोडकर पाकिस्तान मे आबाद होने का फैसला किया था।

लाहौर मे एक प्रसिद्ध पत्रकार अहमद सिद्दीकी ने हाल ही मे "बगला देश की सच्ची कहानी" के नाम से एक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक हाथो-हाथ बिक गई। इसमे लिखा है कि बगला देश मे यहिया खा ने नरसहार किया। इसी के कारण विद्रोह हुआ। उन्होने यह भी लिखा कि पश्चिमी पाकिस्तान मे भी यही हो सकता है। श्री अहमद को गिरफ्तार करके कारागार मे बन्द कर दिया गया।

पश्चिमी पाकिस्तान के एक और लेखक श्री हुस्सैन असकरी रिजवी ने अग्रेजी मे "सच्चाई" (The Truth) के नाम से अपनी

पुस्तक मे लिखा कि

"हमारे शासक बगला देश की वास्तविक स्थिति के मामले मे झूठ बोल रहे हैं। शेख मुजीबुर्रहमान पाकिस्तान के विभाजन के लिए जिम्मेदार नही। इसके लिये सैनिक टोला दोषी है। यही हालत पश्चिमी पाकिस्तान मे भी पैदा हो सकती है। सैनिक हमलो से समस्याओ का समाधान नही हो सकता।"

श्री हुसैन को भी गिरफ्तार करके कैद कर दिया गया।

लाहौर मे पजाबी के कवि श्री अहमद सलीम ने "मेरा प्यारा बगला देश" के शीर्षक से एक कविता मे लिखा कि यहियाशाही बगाल मे नरसहार कर रही है। पश्चिमी पाकिस्तान की जनता भी उससे तग आई हुई है। श्री सलीम को गिरफ्तार करके दो वर्ष के लिये कैद कर दिया गया।

सिंध के सयुक्त दल के प्रधानमत्री श्री गुलाम जीलानी मल्लिक ने एक वक्तव्य मे शेख मुजीबुर्रहमान से सहानुभूति प्रकट की थी और यहिया खा को चेतावनी दी थी कि यदि उन्होने सिंधियो की मागे स्वीकार न की तो सिंध मे स्थिति बिगड जायेगी।

कराची के प्रसिद्ध उर्दू कवि श्री हबीब जालब ने एक कविता मे सैनिक तानाशाही की कडी आलोचना की थी। उन्होने कहा था कि जनता के प्रतिनिधियो को शासनसत्ता सौप देनी चाहिये। इस पर उन्हे गिरफ्तार करके मुकदमा चलाये बिना नजरबन्द कर दिया गया।

यह हालात बताते है कि पश्चिमी पाकिस्तान मे भी जनता तानाशाही को पसद नही करती। इन्ही हालात से परेशान होकर अयूब खा ने अपने भाई की तानाशाही की कडी आलोचना करते हुए पश्चिमी पाकिस्तान की ससद मे कहा था कि

"यदि मुझे मालूम होता कि पाकिस्तान मे हमारी यह दुर्दशा होगी तो हम कभी पाकिस्तान की स्थापना की माग का समर्थन न

करते।"

श्री भुट्टो इस वास्तविकता को समझ लेंगे तो पाकिस्तान बच जायेगा अन्यथा पश्चिमी पाकिस्तान के टुकडे-टुकडे हो जायेंगे।